नूरुल क़ुरआन

(क़ुरआन की ज्योति)

भाग I-II

लेखक

युगावतार मसीह व महदी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम

नूरुल क़ुरआन
(क़ुरआन की ज्योति)

भाग – 1

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद, क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : **नूरुल क़ुरआन** (भाग–1, 2)

लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

अनुवादक : अलीहसन एम.ए., एच.ए.

प्रथम संस्करण हिन्दी: 2016 ई.

संख्या : 1000

प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान

ISBN :?????????????????

प्रकाशक की ओर से

कुरआन करीम की रूहानी विशेषताओं के प्रकटन और उन बातों को प्रकाशित करने के लिए जो सत्य के जानने और पहचानने का कारण हों और जिनसे वह सच्चा दर्शन ज्ञात हो, जो दिलों को संतुष्टि और आत्मा को सुख-शान्ति देता है और ईमान को दिव्यज्ञान प्रदान करता है। इसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक मासिक पत्रिका जारी करने का इरादा किया और उस समय नूरुल क़ुरआन के नाम से एक पत्रिका जारी की। किन्तु अफ़सोस कि अत्यधिक कार्यों और व्यस्तताओं के कारण उसके केवल दो अंक ही प्रकाशित हो सके। पहला अंक जून, जुलाई, अगस्त 1895 ई. प्रकाशित हुआ और सितम्बर अक्टूबर नवम्बर, दिसम्बर सन् 1895 और जनवरी, फरवरी मार्च, अप्रैल 1896 ई. को मिलाकर दूसरा अंक प्रकाशित हुआ।

नूरुल क़ुरआन प्रथम अंक में आपने क़ुरआन करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत पर स्पष्ट अकाट्य तर्क और प्रमाण लिखे और दूसरे अंक में पादरी फतेह मसीह निवासी फतेहगढ़ ज़िला गुरदासपुर के उन दो पत्रों का उत्तर दिया, जिनमें उस ने सरवरे काइनात, मानवजाति के गौरव खात्मुन्नबीयीन, निष्पापों और शुद्धात्माओं के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गालियाँ देते और अनर्थ आरोप लगाते हुए उन पर व्यभिचार का आरोप लगाया

था। नऊज़बिल्लाह

इन दोनों अंको का हिन्दी अनुवाद आदरणीय मौलवी अलीहसन साहिब एम.ए.,एच.ए. ने किया है। इसका हिन्दी अनुवाद पहली बार प्रकाशित किया जा रहा है। आशा करता हूँ कि यह अनुवाद हिन्दी भाषियों के लिए अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होगा । अल्लाह से दुआ है कि वह ऐसा ही करे। तथास्तु

भवदीय

नाज़िर नश्रो इशाअत

विषय सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हिदायत

चूँकि इस युग में तरह-तरह के ग़लत विचार हर एक क़ौम में इस तरह फैल गए हैं कि उनके दुष्प्रभाव उन भोले-भाले दिलों को घोर अन्धकार तक पहुँचाते जाते हैं जिनको धार्मिक गहराइयों का पूर्ण रूप से ज्ञान नहीं होता या ऐसा अधूरा होता है जिसको दार्शनिकों के भ्रम शीघ्र मिटा सकते हैं। इसलिए मैंने केवल युग की वर्तमान स्थिति को देखते हुए इस मासिक पत्रिका में उन बातों को प्रकाशित करना चाहा है जिनमें उन मुसीबतों का पर्याप्त समाधान हो और वे सच्चाई के जानने, समझने और परखने का साधन हों और जिनसे वह सच्चा दर्शन ज्ञात हो जो दिलों को संतुष्टि और रूह को चैन और आराम दे और ईमान को ज्ञान के रंग में ले आता है। चूँकि इसके लिखने का उद्देश्य यही है कि क़ुरआन शरीफ़ का ज्ञान और उसकी सच्चाइयाँ लोगों को ज्ञात हों। इसलिए इस पत्रिका में सदैव के लिए यह अनिवार्य ठहराया गया है कि कोई दावा और प्रमाण अपनी ओर से न हो बल्कि क़ुरआन करीम की ओर से हो, जो ख़ुदा तआला की वाणी है और इस दुनिया के अन्धकारों को मिटाने के लिए आई है ताकि लोगों को ज्ञात हो कि यह क़ुरआन शरीफ़ में ही एक चमत्कारिक विशेषता है कि वह अपने **दावे और प्रमाण** को स्वयं ही वर्णन करता है और यही एक उसके ख़ुदा की ओर से होने की पहली निशानी है कि वह हमेशा अपना प्रमाण हर एक दृष्टि से स्वयं देता है और स्वयं ही दावे करता और स्वयं ही उस दावा के प्रमाण प्रस्तुत करता है और हम

ने क़ुरआन की इस चमत्कारिक विशेषता को इस पत्रिका में इसलिए प्रकाशित करना चाहा है ताकि इसके द्वारा वे सारे धर्म भी परखे जाएँ जिनके अनुयायी इस्लाम के सामने ऐसी किताबों की प्रशंसा कर रहे हैं जिनमें यह विशेषता कदापि नहीं कि वह अपने दावे को प्रमाण के साथ सिद्ध कर सकें। यह बात स्पष्ट है कि ख़ुदा की पत्रिका की पहली निशानी ज्ञान संबंधी विशेषता है और यह बात संभव ही नहीं कि एक किताब वस्तुतः ख़ुदा की किताब होकर किसी सच्चाई के वर्णन में जो धार्मिक आस्थाओं की आवश्यकताओं में से है, असमर्थ हो, या मानव रचित किसी किताब के सामने अन्धकार और त्रुटियों के गहराई में गिरी हुई हो। ख़ुदा की ओर से होने वाली किताब की पहली निशानी तो यही है कि जिस नुबुव्वत और आस्था की उसने नींव डाली है उसको बौद्धिक तौर पर सिद्ध भी करती हो क्योंकि अगर वह अपने दावों को सिद्ध नहीं करती बल्कि मनुष्य को चक्कर में डालती है तो ऐसी किताब को मनवाना अनैच्छिक और बलपूर्वक समझा जाएगा। यह बात अत्यन्त स्पष्ट और तुरन्त समझ में आने वाली है कि वह किताब जो वस्तुतः ख़ुदा की किताब है वह लोगों की प्रकृति पर कोई ऐसा बोझ नहीं डालती और बुद्धि के विपरीत कोई ऐसी बातें प्रस्तुत नहीं करती जिनका स्वीकार करना अनिच्छा और बलात् समझा जाए, क्योंकि कोई बुद्धि यह सत्य नहीं ठहरा सकती कि धर्म में अनिच्छा और जबरदस्ती जाइज़ हो। इसलिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में फ़रमाया है कि

لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ[1]

(अल्-बक़र:, आयत 257)

जब हम न्याय की दृष्टि से सोचते हैं कि ख़ुदा की ओर

1. धर्म में जबरदस्ती जाइज़ नहीं (अनुवादक)

से होने वाली किताब कैसी होनी चाहिए तो हमारा आत्मज्ञान पूरी दृढ़ता से यह गवाही देता है कि ख़ुदा की ओर से होने वाली किताब की मूल वास्तविकता यही हो कि वह अपनी शिक्षाओं से ज्ञान और कर्म के मार्गों में स्वयं पूर्ण विश्वास का मार्ग दिखाती हो और पूर्णत: विवेक पैदा कर के इसी दुनिया में स्वर्ग के जीवन का आदर्श स्थापित कर देती हो, क्योंकि ख़ुदा की ओर से होने वाली किताब का ज्वलंत चमत्कार केवल यही है कि वह ज्ञान, युक्ति और सच्चा दर्शन बताने वाली हो और जहाँ तक एक सोचने वाले के लिए आध्यात्मिक सच्चाइयों के बारे में पता लग सकता हो वे सारी सच्चाइयाँ उसमें मौजूद हों। केवल दावा करने वाली न हो बल्कि अपने हर एक दावे को ऐसे तौर पर सिद्ध करे कि पूर्णत: संतुष्ट कर दे और जिस गहराई और गंभीरता के साथ उस पर दृष्टि डाली जाए तो स्पष्ट दिखाई दे कि सचमुच वह ऐसा ही चमत्कार अपने अन्दर रखती है कि धार्मिक विषयों में मानवीय विवेकों को बढ़ाने के लिए उच्चकोटि की सहायक और अपने काम की स्वयं ही अधिवक्ता है।

अन्तत: मैं अपने हर एक मुख़ालिफ़ को संबोधित करके घोषणापूर्वक कहता हूँ कि अगर वे सचमुच अपनी किताबों को ख़ुदा की ओर से समझते हैं और विश्वास रखते हैं कि वे उस ख़ुदा की ओर से हैं जो अपनी पवित्र किताब को इस लज्जा और बदनामी का निशाना नहीं बनाना चाहता कि उसकी किताब केवल निरर्थक और निराधार दावों का संग्रह ठहरे जिनके साथ कोई प्रमाण न हो तो इस अवसर पर हमारे प्रमाणों के मुक़ाबले में वे भी प्रमाण प्रस्तुत करते रहें क्योंकि तुलनात्मक तौर पर बातों को देखकर सच्चाई शीघ्र समझ में आ जाती है और दोनों किताबों के तुलनात्मक अध्ययन के

बाद कमज़ोर और सुदृढ़ तथा अपूर्ण और पूर्ण का अन्तर स्पष्ट हो जाता है, परन्तु स्मरण रहे कि स्वयं ही अधिवक्ता न बन बैठें बल्कि हमारी तरह दावा और प्रमाण अपनी किताब में से ही प्रस्तुत करें। इसके अतिरिक्त मुबाहसा के निज़ाम (कानून) को यथावत् रखने के लिए इस बात को भी अनिवार्य ठहराएं कि जिस प्रमाण से अब हम प्रारम्भ करते हैं उसी प्रमाण को मुक़ाबले में लिखी जाने वाली अपनी अभीष्ट पत्रिका में, अपनी किताब में से निकाल कर दिखलाएं। इस सिद्धान्तानुसार हमारे हर एक अंक के सामने उसी प्रमाण को अपनी किताब के पक्ष में प्रस्तुत करें जो हमने उस अंक में प्रस्तुत किया हो। इस ढंग से बहुत शीघ्र फैसला हो जाएगा कि इन किताबों में से कौन सी किताब अपने सत्य को स्वयं सिद्ध करती है और धर्मज्ञान का अपार सागर है। अब हम ख़ुदा तआला से सामर्थ्य पाकर पहले अंक को प्रारंभ करते हैं और दुआ करते हैं कि हे ख़ुदा! सत्य को विजय दे और असत्य को लज्जित और पराजित करके दिखा।

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ۔ اٰمين[1]

1. अल्लाह के सिवा किसी को कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं - (अनुवादक)

पहला प्रमाण

क़ुरआन और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत पर प्रमाण

क़ुरआन शरीफ ने बड़ी दृढ़तापूर्वक से इस दावे को प्रस्तुत किया है कि वह ख़ुदा की वाणी है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके सच्चे नबी और रसूल हैं जिन पर वह पवित्र वाणी अवतरित हुई है। अत: यह दावा निम्नलिखित आयतों में पूर्णत: सुस्पष्ट रूप से लिखा हुआ है -

الٓمّٓ ۔ اَللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ ۙ الۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۔ نَزَّلَ عَلَیۡکَ الۡکِتٰبَ بِالۡحَقِّ

(सूर: आले इमरान, आयत 2-4)

अर्थात वही अल्लाह है उसका कोई भागीदार नहीं उसी से हर एक का जीवन है। उसने सत्य और सत्य की आवश्यकतानुसार तुझ पर किताब उतारी और फिर कहा -

یٰۤاَیُّہَا النَّاسُ قَدۡ جَآءَکُمُ الرَّسُوۡلُ بِالۡحَقِّ

(सूर: अन्निसा, आयत 171)

अर्थात् हे लोगो! सत्य और सत्य की आवश्यकतानुसार तुम्हारे पास यह नबी आया है।

फिर फ़रमाया -

وَبِالۡحَقِّ اَنۡزَلۡنٰہُ وَبِالۡحَقِّ نَزَلَ

(सूर: बनी इसराईल, आयत 106)

अर्थात सत्य की आवश्यकतानुसार हम ने इस वाणी को अवतरित किया है और सत्य की आवश्यकतानुसार उतरी है।

फिर फ़रमाया -

یٰۤاَیُّہَا النَّاسُ قَدۡ جَآءَکُمۡ بُرۡہَانٌ مِّنۡ رَّبِّکُمۡ وَ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَیۡکُمۡ نُوۡرًا

مُّبِيۡنًا ○

(सूर: अन्निसा, आयत 175)

हे लोगो! तुम्हारे पास यह सच्चा प्रमाण पहुँचा है और एक स्पष्ट नूर तुम्हारी ओर हमने उतारा है।

फिर फ़रमाया -

قُلۡ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ اِلَيۡكُمۡ جَمِيۡعًا

(सूर: अल्-आराफ़, आयत 159)

तू लोगों को कह दे कि मैं तुम सब की ओर पैग़म्बर होकर आया हूँ।

फिर फ़रमाया -

وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوۡا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الۡحَـقُّ مِنۡ رَّبِّهِمۡ‌ۙ كَفَّرَ عَنۡهُمۡ سَيِّاٰتِهِمۡ وَاَصۡلَحَ بَالَهُمۡ

(सूर: मुहम्मद, आयत 3)

अर्थात जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए और उस किताब पर ईमान लाए जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर अवतरित हुई और वही सत्य है। ख़ुदा उनके पाप दूर कर देगा और उनकी स्थिति को ठीक कर देगा।

इसी तरह सैकड़ों आयतें और भी हैं जिनमें बड़ी स्पष्टता के साथ यह दावा किया गया है कि क़ुरआन करीम ख़ुदा की वाणी और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके सच्चे नबी हैं पर हम इस समय इतना ही लिखना उचित और पर्याप्त समझते हैं और साथ ही अपने विरोधियों पर स्पष्ट करते हैं कि जिस दृढ़ता और चुनौती से क़ुरआन शरीफ़ में यह दावा मौजूद है किसी दूसरी किताब में कदापि मौजूद नहीं। हम इस बात के बड़े इच्छुक हैं कि आर्य साहिबान अपने वेदों से इतना ही सिद्ध कर दें कि उनके चारों वेदों ने ख़ुदा की वाणी होने का दावा किया और स्पष्टतापूर्वक

बताया कि अमुक-अमुक व्यक्ति पर अमुक काल में वे अवतरित हुए हैं। अल्लाह की किताब होने के प्रमाण के लिए पहली आवश्यक बात यही है कि वह किताब अपने ख़ुदा की ओर से होने की दावेदार भी हो, क्योंकि जो किताब अपने ख़ुदा की ओर से होने का स्वयं कोई संकेत नहीं करती उसको ख़ुदा तआला की ओर सम्बद्ध करना एक व्यर्थ हस्तक्षेप है।

अब **दूसरी बात** उल्लेखनीय यह है कि क़ुरआन करीम ने अपने ख़ुदा की ओर से होने और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पैग़म्बर होने के बारे में केवल दावा ही नहीं किया अपितु उस दावे को बड़े ठोस और सुदृढ़ प्रमाणों से सिद्ध भी कर दिया है और अल्लाह ने चाहा तो हम क्रमशः उन समस्त प्रमाणों को लिखेंगे और उनमें से पहला प्रमाण हम इसी लेख में क़लमबद्ध करते हैं ताकि सत्याभिलाषी सबसे पहले इसी प्रमाण में दूसरी किताबों को क़ुरआन के साथ तुलना करें और हम हर एक विरोधी से भी कहते हैं कि यदि प्रमाण देने का यह नियम जिसका एक किताब में पाया जाना उसकी सच्चाई पर एक स्पष्ट प्रमाण है उनकी किताबों और अवतारों के बारे में भी पाया जाता हो तो वह अवश्य अपने अखबारों और पत्रिकाओं के द्वारा प्रस्तुत करें अन्यथा उनको मानना पड़ेगा कि उनकी किताबें इस उच्चकोटि के प्रमाण प्रस्तुत करने से रहित और वंचित हैं। हम पूर्ण दृढ़ विश्वास से कहते हैं कि प्रमाण प्रस्तुत करने का यह नियम उनके धर्म में कदापि नहीं पाया जाता। अतः यदि हम ग़लती पर हैं तो हमारी ग़लती सिद्ध करें। क़ुरआन शरीफ़ ने अपने ख़ुदा की ओर से होने पर जो पहला प्रमाण प्रस्तुत किया है उसकी व्याख्या यह है कि सद्बुद्धि एक सच्ची किताब और एक सच्चे और ख़ुदा की ओर से होने वाले पैग़म्बर के मानने के लिए इस बात

को एक उच्चकोटि का प्रमाण ठहराती है कि उनका प्रकटन एक ऐसे काल में हो कि जब युग अन्धकार में पड़ा हो और लोगों ने एक ख़ुदा के स्थान पर अनगिनत ख़ुदा और सदाचार के स्थान पर दुराचार और न्याय के स्थान पर अन्याय और ज्ञान के स्थान पर मूर्खता अपना ली हो और एक सुधारक की अत्यधिक आवश्यकता हो और फिर ऐसे समय में वह पैग़म्बर मृत्यु पाए कि जब वह सुधार का काम अच्छी तरह से कर चुका हो और जब तक उसने सुधार न किया हो दुश्मनों से सुरक्षित रखा गया हो और नौकरों की तरह आदेश से आया हो और आदेश से वापिस गया हो। तात्पर्य यह कि वह ऐसे समय में प्रकट हो कि जब युग की परिस्थितियाँ पुकार-पुकार कर कह रही हों कि एक आसमानी सुधारक और किताब का आना ज़रूरी है। फिर ऐसे समय में ख़ुदा की भविष्यवाणी के द्वारा वापिस बुलाया जाए कि जब सुधार के पौधे को मज़बूती से क़ायम कर चुका हो और एक बहुत बड़ा बदलाव हो चुका हो।

अब हम इस बात को बड़े गर्व से वर्णन करते हैं कि यह प्रमाण जिस प्रकार क़ुरआन और हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पक्ष में अत्यन्त ज्वलंत ढंग से प्रकट हुआ है, किसी अन्य पैग़म्बर और किताब के पक्ष में कदापि प्रकट नहीं हुआ। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह दावा था कि मैं सारी क़ौमों के लिए आया हूँ इसलिए क़ुरआन शरीफ ने समस्त क़ौमों को आरोपी ठहराया है कि वे तरह-तरह के अनेकेश्वरवाद और दुराचारों में डूबे हैं जैसा कि वह फरमाता है-

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ

(सूर: अल-रोम, आयत 42)

अर्थात दरिया भी बिगड़ गए और जंगल भी बिगड़ गए।[1]

फिर फ़रमाता है -

لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا

(सूर: अल्-फ़ुर्क़ान, आयत 2)

अर्थात हमने तुझे इसलिए भेजा है कि तू संसार की सारी क़ौमों को डराए अर्थात सचेत करे कि वे ख़ुदा तआला के समक्ष अपने दुराचारों और ग़लत आस्थाओं के कारण घोर पापी ठहरी हैं।

स्मरण रहे कि जो इस आयत में ''नज़ीर'' का शब्द संसार के समस्त सम्प्रदायों के लिए प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ पापियों और दुराचारियों को डराना है। इसी शब्द से नि:सन्देह समझा जाता है कि **क़ुरआन** का यह दावा था कि समस्त संसार बिगड़ गया और हर एक ने सच्चाई और नेक आचरण का ढंग छोड़ दिया क्योंकि डराने के पात्र दुराचारी, अनेकेश्वरवादी और कुकर्मी ही हैं और डराना अपराधियों की ही चेतावनी के लिए होता है न कि सदाचारियों के लिए। इस बात को हर एक जानता है कि हमेशा अवज्ञाकारियों और दुष्टों को ही डराया जाता है। ख़ुदा का विधान इसी तरह पर जारी है कि नबी (अवतार) नेकों के लिए बशीर[2] होते हैं और बुरे लोगों के लिए नज़ीर[3]। फिर जब एक नबी समस्त संसार के लिए नज़ीर हुआ तो मानना पड़ा कि समस्त संसार को नबी पर होने वाली ईशवाणी ने दुराचार में डूबा हुआ ठहराया। यह एक ऐसा दावा है कि न तौरैत ने हज़रत मूसा के बारे में किया और न इन्जील ने

1. अर्थात् ज्ञानी और अज्ञानी दोनों प्रकार के लोग दुराचारी हो गए। - अनुवादक
2. अर्थात् शुभ-सूचना देने वाला - अनुवादक
3. अर्थात् चेतावनी देने वाला - अनुवादक

हज़रत ईसा के युग के संबंध में, बल्कि केवल क़ुरआन शरीफ़ ने किया और फिर फ़रमाया कि-

كُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ

(सूर: आले-इमरान, आयत 104)

अर्थात तुम इस नबी के आने से पहले नर्क के गढ़े के किनारे पर पहुँच चुके थे तथा ईसाइयों और यहूदियों को भी सचेत किया कि तुमने अपने छल से ख़ुदा की किताबों को बदल दिया और तुम हर एक बुराई और दुष्कर्म में समस्त क़ौमों के सरग़ना[1] हो, और मूर्तिपूजकों को भी जगह-जगह आरोपी ठहराया कि तुम पत्थरों, मनुष्यों, सितारों और क्षिति जल, पावक, गगन, समीर इत्यादि की पूजा करते हो और सच्चे स्रष्टा को भूल गए हो और तुम अनाथों का धन खाते और बच्चों का वध[2] करते और साझीदारों पर अन्याय और अत्याचार करते हो

1. सरदार
2. जैसा कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि -

يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ

(सूर: अन्नहल, आयत 60)

अर्थात् ख़ुदा पर विश्वास न रखने वाला अपनी लड़की को ज़िन्दा गाड़ देता है। फिर फ़रमाता है -

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ۔ بِاَىِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ۔

(सूर: अत्तक्वीर, आयत 9-10)

अर्थात् क़यामत के समय ज़िन्दा गाड़ी गईं लड़कियों से पूछा जाएगा कि वे किस अपराध से क़त्ल की गईं, यह मुल्क की वर्तमान परिस्थिति की ओर संकेत किया कि ऐसे बुरे-बुरे काम हो रहे हैं। इसी की ओर अरब के एक पुराने शायर इब्नुल आराबी ने संकेत किया है। अत: वह कहता है कि -

مالقی المؤودمن ظلم امّہ۔ کما لقیت ذھل جمیعا وعامر अर्थात ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की पर उसकी माँ की तरफ से वह अत्याचार नहीं होता जैसा कि ज़ुहल और आमिर पर हुआ - उसी में से।

और हर एक बात में हद से आगे बढ़ गए हो और फ़रमाया -

اِعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰہَ یُحۡیِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِہَا ؕ

(सूर: अल्-हदीद, आयत 18)

अर्थात् यह बात तुम्हें ज्ञात रहे कि धरती सब की सब मुर्दा हो गई थी। अब ख़ुदा नए सिरे से उसको ज़िन्दा करता है। तात्पर्य यह कि सारी दुनिया को क़ुरआन ने शिर्क (अनेकेश्वरवाद), दुराचार और मूर्तिपूजा का आरोपी ठहराया जो कि सारी बुराइयों की जड़ हैं और ईसाइयों और यहूदियों को संसार के समस्त दुराचारों की जड़ ठहराया और उनके हर प्रकार के दुराचार वर्णन कर दिए और एक ऐसा नक्शा खींचकर वर्तमान युग का कर्मपत्र दिखला दिया कि जब से दुनिया बनी नूह के युग के अतिरिक्त और कोई युग इस युग के समान दिखाई नहीं देता और हमने यहां जितनी आयतें लिख दी हैं वे निर्णायक प्रमाण के लिए प्रथम श्रेणी का काम देती हैं। हमने लेख के अधिक विस्तृत होने के डर से सारी आयतों को नहीं लिखा है। पाठकों को चाहिए कि क़ुरआन शरीफ को ध्यानपूर्वक पढ़ें ताकि उन्हें ज्ञात हो कि कितनी दृढ़ता और प्रभावी बातों से बार-बार क़ुरआन शरीफ वर्णन कर रहा है कि समस्त संसार बिगड़ गया। सारी नैतिकता मर गयी और लोग नर्क के गढ़े के निकट पहुँच गए और कैसे बार-बार कहता है कि समस्त संसार के लोगों को डरा कि वे खतरनाक हालत में पड़े हैं। नि:सन्देह क़ुरआन को ध्यानपूर्वक पढ़ने से ज्ञात होता है कि वे शिर्क (अनेकेश्वरवाद), दुराचार, मूर्तिपूजा और तरह-तरह के पापों में पड़ गए और दुराचार के अन्धकूप में डूब गए हैं। यह बात सच है कि इन्जील में भी काफी हद तक यहूदियों के दुष्कर्मों का वर्णन है, परन्तु मसीह ने कहीं यह वर्णन नहीं किया कि धरती में जितने लोग मौजूद हैं जिनको समस्त लोकों के नाम से नामित कर सकते हैं

वे बिगड़ गए, मर गए और दुनिया अनेकेश्वरवाद और दुराचार से भर गई और न ही रसूल होने का सार्वभौमिक दावा किया। इससे स्पष्ट है कि यहूदी एक थोड़ी सी क़ौम थी जो मसीह की संबोधित थी, अपितु वही थी जो मसीह की दृष्टि के सामने कुछ देहातों के लोग थे परन्तु क़ुरआन करीम ने तो सारी धरती के मर जाने का वर्णन किया है और सारी क़ौमों की बुरी हालत को वह बताता है और स्पष्ट रूप से कहता है कि ज़मीन[1] हर प्रकार के गुनाह से मर गई[2] यहूदी तो नबियों की औलाद और तौरात को अपनी कथनी से मानते थे लेकिन करनी से खाली थे किन्तु क़ुरआन के युग में दुराचार के अतिरिक्त आस्थाओं में भी ख़राबी आ गई थी। हज़ारों लोग नास्तिक थे, हज़ारों ख़ुदा तआला के इल्हाम (संवाद) के इन्कारी थे और हर प्रकार के दुराचार धरती पर फैल गए थे और दुनिया में आस्तिक और व्यवहारिक खराबियों का एक भयानक तूफान चल रहा था। इसके अतिरिक्त मसीह ने अपनी छोटी सी क़ौम यहूदियों के दुराचार का कुछ वर्णन तो किया जिससे अनिवार्य रूप से यह विचार पैदा होता है कि उस समय यहूद की एक विशेष क़ौम को एक सुधारक की आवश्यकता थी, परन्तु जिस प्रमाण को हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ुदा की ओर से होने के बारे में वर्णन करते हैं अर्थात यह कि आँहज़रत

1. अर्थात अन्तरात्मा - अनुवादक
2. नोट :- अगर कोई कहे कि खराबी और अन्धविश्वास और दुराचारों में यह युग भी तो कम नहीं, फिर इसमें कोई नबी क्यों नहीं आया तो जवाब यह है कि वह युग एकेश्वरवाद और सदाचार से बिल्कुल ख़ाली हो गया था और इस युग में चालीस करोड़ ''अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं'' कहने वाले मौजूद हैं और इस युग को भी ख़ुदा तआला ने मुजद्दिद (सुधारक) के भेजने से वंचित नहीं रखा। - उसी में से।

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सार्वभौमिक बिगाड़ के समय में आना और व्यापक सुधार के बाद वापिस बुलाया जाना और इन दोनों बातों का क़ुरआन का स्वयं प्रस्तुत करना और स्वयं दुनिया को इसकी ओर ध्यान दिलाना, यह एक ऐसा विषय है कि इंजील तो क्या क़ुरआन शरीफ के अतिरिक्त किसी पहली किताब में भी नहीं पाया जाता। क़ुरआन शरीफ़ ने स्वयं ये प्रमाण प्रस्तुत किए हैं और स्वयं कह दिया है कि इसकी सच्चाई इन दो पहलुओं पर दृष्टि डालने से सिद्ध होती है। अर्थात एक तो वही जो हम बयान कर चुके हैं कि ऐसे युग में प्रकट हुए कि जब युग में सार्वभौमिक तौर पर तरह-तरह के दुष्कर्म और कुधारणाएँ फैल गई थीं और दुनिया सच और यथार्थ और एक ख़ुदा पर विश्वास रखने और पवित्रता से बहुत दूर जा पड़ी थी और क़ुरआन करीम के इस कथन की उस समय पुष्टि होती है जब उस युग से संबंधित हर एक क़ौम का इतिहास पढ़ा जाए क्योंकि हर एक क़ौम के इक़रार से यह व्यापक गवाही पैदा होती है कि हर एक क़ौम सृष्टिपूजा की ओर झुक गई थी और यही कारण है कि जब क़ुरआन ने सारी क़ौमों को पथभ्रष्ट और दुराचारी कहा तो कोई अपना बरी होना सिद्ध न कर सका। देखो अल्लाह तआला कितनी दृढ़ता से यहूदियों और ईसाइयों के दुराचारों और सारी दुनिया के अध्यात्मिक रूप से मर जाने का वर्णन करता है और फ़रमाता है -

وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ
فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ؕ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُونَ۔ اِعْلَمُوٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ۔

(सूरः अल्-हदीद, आयत 17-18)

अर्थात् मोमिनों को चाहिए कि यहूदियों और ईसाइयों के चाल-चलन से बचें उनको इससे पहले किताब दी गई थी।

जब उन पर एक युग बीत गया तो उनके दिल कठोर हो गए और अधिकतर उनमें से अवज्ञाकारी और दुराचारी हैं। यह बात भी जान लो कि ज़मीन (अन्तरात्मा) मर गई थी और अब ख़ुदा नए सिरे से ज़मीन को ज़िन्दा कर रहा है। यह क़ुरआन की ज़रूरत और सच्चाई के निशान हैं जो इसलिए वर्णन किए गए ताकि तुम निशानों को जान लो।

अब सोच कर देखो कि यह प्रमाण जो तुम्हारे सामने प्रस्तुत किया गया है, यह हमने अपनी समझ-बूझ से नहीं बनाया बल्कि क़ुरआन शरीफ़ स्वयं ही उसको प्रस्तुत करता है और प्रमाण के दोनों हिस्से वर्णन करके फिर स्वयं ही फ़रमाता है कि -

قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ

(सूर: अल्-हदीद, आयत 18)

अर्थात् इस रसूल और इस किताब के ख़ुदा की ओर से होने पर यह भी एक निशान है जिसको हमने वर्णन कर दिया, ताकि तुम सोचो और समझो और सच्चाई तक पहुँच जाओ।[1]

---

1. क़ुरान शरीफ़ ने जितने अपने अवतरणकाल में उन ईसाइयों इत्यादि के दुराचारों का वर्णन किया है जो उस काल में मौजूद थे उन समस्त क़ौमों ने स्वयं अपने मुँह से इक़रार कर लिया था बल्कि बार-बार इक़रार करते थे कि वे अवश्य उन दुराचारों के दोषी हो रहे हैं और अरब का इतिहास देखने से सिद्ध होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाप दादों के अतिरिक्त जिनको अल्लाह तआला ने अपनी विशेष कृपा से अनेकेश्वरवाद और दूसरी मुसीबतों से बचाए रखा। शेष समस्त लोग ईसाइयों के बुरे नमूने को देखकर और उनके बुरे चाल-चलन के कुप्रभाव से प्रभावित होकर भिन्न-भिन्न प्रकार के लज्जाजनक पापों और दुराचारों में ग्रस्त हो गए थे और जितनी

दूसरा पहलू इस प्रमाण का यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसे समय में मृत्यु पाए कि जब वे अपने काम पूर्ण तौर पर कर चुके थे और यह बात क़ुरआन शरीफ़ से पूर्णतः सिद्ध है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि -

शेष हाशिया

बद्चलनी और दुराचारिता अरब लोगों में आई, वह वस्तुतः अरब लोगों की निजी प्रकृति का परिणाम नहीं था बल्कि एक बहुत ही गन्दी और बदचलन क़ौम उनमें आबाद हो गई जो एक झूठे षड़यन्त्र कफ़्फ़ारा पर भरोसा करके हर एक पाप को माँ के दूध के समान समझती थी और सृष्टिपूजा, मद्यपान एवं हर प्रकार के दुराचार को बड़े ज़ोर के साथ संसार में फैला रही थी और पहले दर्जे की झूठी, दग़ाबाज़ और दुष्चरित्र थी। स्पष्ट रूप से यह अन्तर करना मुश्किल है कि क्या उस युग में दुराचार और हर एक प्रकार की बद्चलनी में यहूदी बढ़े हुए थे या ईसाई पहले नम्बर पर थे लेकिन थोड़ा सा ध्यान देने के बाद ज्ञात होगा कि वस्तुतः ईसाई ही हर एक दुष्कर्म और दुराचार और अनेकेश्वरवादी प्रवृत्तियों में आगे-आगे थे क्योंकि यहूदी लोग लगातार तिरस्कारों और कष्टों से कम ज़ोर हो चुके थे और वे दुष्कृत्य जो एक नीच और कमीना आदमी अपनी ताक़त, दौलत और अपनी क़ौम के उत्थान को देखकर कर सकता है या वे दुराचार जो अत्यधिक धन-दौलत पर आधारित हैं ऐसे नीच कामों का यहूदियों को कम मौक़ा मिलता था परन्तु ईसाइयों का सितारा उन्नति पर था और नई दौलत और नई हुकूमत हर समय साथ दे रही थी कि वे समस्त बातें उनमें पाई जायें जो दुराचार के सहायतार्थ पैदा होने से प्राकृतिक तौर पर हमेशा पाई जाती हैं। अतः यही कारण है कि उस युग में ईसाइयों के दुराचार और हर एक प्रकार का दुष्कर्म सबसे ज़्यादा बढ़ा हुआ था और यह बात यहाँ तक प्रसिद्ध है कि पादरी फण्डल अपने अत्यधिक ईर्ष्या-

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ

(सूर: अल्-मायद:, आयत 4)

अर्थात् आज मैंने क़ुरआन शरीफ़ के उतारने और समस्त मानवीय विशेषताओं के चरमोत्कर्ष से तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिए

शेष हाशिया

द्वेष के बावजूद उसको छिपा नहीं सका और मजबूर होकर उस युग के ईसाइयों के दुराचारों का 'मीज़ानुल हक़' में उसको इक़रार करना ही पड़ा। मगर दूसरे अंग्रेज़ इतिहासकारों ने तो बड़े विस्तार से उनके दुष्कर्मों का हाल लिखा है। अत: उनमें से एक ड्यूनपोर्ट साहिब की किताब है जो अनुवादित होकर इस देश में फैल गई है। अतएव यह साबित शुदा सच्चाई है कि उस युग के ईसाई अपनी नई दौलत और हुकूमत और कफ़्फ़ार: के विषैले षड़यन्त्र से समस्त दुष्कर्मों में सबसे ज़्यादा बढ़े हुए थे। हर एक ने अपनी प्रवृत्ति के अनुसार अलग-अलग हद से आगे बढ़ने और पाप करने के मार्ग अपना रखे थे और उनकी दिलेरियों से ज्ञात होता है कि वे अपने धर्म की सच्चाई से बिल्कुल निराश हो चुके थे और एक छुपे हुए नास्तिक थे और उनकी आध्यात्मिकता की जड़ इस कारण से ख़त्म हो गई कि उन पर धन-दौलत के दरवाज़े खोल दिए गए और इन्जील की शिक्षा में मद्यपान की कोई मनाही न थी। जुआ खेलना मना नहीं था। अतएव यही सारे विष मिलकर उनका सत्यानाश कर गए। तिजोरियों में दौलत थी हाथ में हुकुमत थी शराबें[1] खुद बना लीं। फिर क्या था दुराचार की जननी अर्थात शराब के दुष्प्रभावों से सारे बुरे काम करने पड़े। यह बातें हमने अपनी ओर से नहीं कहीं बल्कि स्वयं बड़े-बड़े अंग्रेज़ इतिहासकारों ने इसकी गवाहियाँ दी हैं और अब भी दे रहे हैं।

1. नोट :- शराब बनाना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक चम त्कार गिना गया है अपितु शराब पीना ईसाई धर्म का सबसे बड़ा अंग है जैसा कि अशाए-रब्बानी से स्पष्ट है। *उसी में से।*

पूर्ण कर दिया और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म पसन्द कर लिया। सारांश यह है कि क़ुरआन मजीद जितना अवतरित होना था अवतरित हो चुका और तत्पर दिलों में अत्यन्त आश्चर्यजनक परिवर्तन पैदा कर चुका और शिक्षा-दीक्षा को चरमोत्कर्ष तक पहुँचा दिया

शेष हाशिया

प्रतिष्ठित **पादरी बास वर्थ** और विद्वान कसीस टेलर ने निकट ही कितने स्पष्टरूप से इन्हीं बातों पर लैक्चर दिए हैं और कितनी दृढ़ता से इस बात को साबित किया है कि ईसाई धर्म की पारम्परिक पुरानी बद्चलनियों ने उसको तबाह कर दिया है। अतः क़ौम के लीडर पादरी बास वर्थ साहिब अपने लैक्चर में घोषणार्पूक वर्णन करते हैं कि ईसाई क़ौम के साथ तीन लानतें चिमटी हुई हैं जो उसको तरक़्क़ी से रोकती हैं। वे क्या हैं? व्यभिचार, मद्यपान और जुआ खेलना। अतः उस युग में सबसे बढ़कर यह ईसाइयों का ही अधिकार था कि वे दुराचार के मैदानों में सबसे आगे रहें क्योंकि संसार में मनुष्य केवल तीन कारणों से पाप से रुक सकता है। (1) यह कि ख़ुदा तआला का डर हो (2) यह कि अत्यधिक धन जो बुरे कामों से जीविका चलाने का कारण है उसकी मुसीबत से बचे (3) यह कि ग़रीब और विनम्र होकर जीवनयापन करे, हुकूमत का ज़ोर पैदा न हो किन्तु ईसाइयों को इन तीनों रोकों से छूट मिल चुकी थी और कफ़्फ़ारः की आस्था ने पाप करने पर दिलेर कर दिया था और दौलत और हुकूमत अत्याचार करने के लिए मददगार हो गई थी। चूँकि दुनिया की राहतें और नेमतें और दौलतें उनको बहुत अधिक मिल चुकी थीं और एक शक्तिशाली सत्ता के वे मालिक भी हो गए थे और इससे पहले एक समय तक कंगाली और बड़ी-बड़ी तकलीफों में ग्रस्त रह चुके थे। इसलिए दौलत और हुकूमत को पाकर उनमें दुराचार का विचित्र तूफान पैदा हुआ। जिस तरह भयानक और तीव्र बाढ़ आने के समय बाँध टूट जाता है और फिर बाँध टूटने से चारों तरफ़

और अपनी नेमत को उन पर पूरा कर दिया और यही दो महान कार्य आवश्यक हैं जो एक नबी (अवतार) के आने का कारण होते हैं। अब देखो यह आयत कितनी दृढ़तापूर्वक बता रही है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तब तक मृत्यु न हुई जब तक इस्लाम धर्म को क़ुरआन के

शेष हाशिया ————————————

फसलों और आबादी की शामत आ जाती है। उसी तरह उन दिनों घटित हुआ जब ईसाइयों को व्यभिचार के समस्त साधन मिल गए और दौलत और ताक़त और बादशाहत में सारी दुनिया के शक्तिशाली लोगों से आगे बढ़ गए। जैसे एक नीच (कमीना) आदमी ग़रीबी का मारा हुआ दौलत और हुकूमत पाकर अपने लक्षण दिखलाता है। उसी तरह वे सारे लक्षण उन लोगों ने दिखलाए। सबसे पहले चीरने फ़ाड़ने वाले जानवरों और अत्यधिक अत्याचारियों की तरह वे मार-काट कीं और अकारण कई लाख लोगों को क़त्ल किया और वे क्रूरताएँ दिखलाईं जिनसे बदन काँप उठता है और फिर अमन और आज़ादी पाकर दिन रात मद्यपान, व्यभिचार और जुआ खेलना पसन्द करने लगे। चूँकि उनकी बद्क़िस्मती से कफ़्फ़ारा की शिक्षा ने पहले ही उनको दुष्कर्मों पर दिलेर कर दिया था और केवल [1]ستر بی بی از بے چادری की भाँति थी अब जब लक्ष्मी भी उनके घर में आ गई तो फिर क्या था, हर एक बुराई पर ऐसे टूट पड़े जैसे एक भयानक और तेज सैलाब अपने चलने की एक खुली-खुली राह पाकर बड़े ज़ोर से चलता है फिर देश पर ऐसा बुरा प्रभाव डाला कि ग़ाफ़िल और मूर्ख अरबवासी भी उन्हीं के दुष्प्रभाव से पीसे गए। वे अशिक्षित और अनपढ़ थे। जब उन्होंने अपने चारों ओर ईसाइयों के दुष्कर्मों का तूफान देखा तो उससे प्रभावित हो गए। यह बात बड़ी जाँच पड़ताल से साबित हुई है कि अरब के लोगों में जुआ, मद्यपान और व्यभिचार ईसाइयों के खज़ाने से आया था। **अख़तल ईसाई** जो उस युग में एक बड़ा कवि

1. अनुवाद :- नग्न स्त्री - अनुवादक।

अवतरण और समस्त मानवीय विशेषताओं के चरमोत्कर्ष से पूर्ण न किया गया[1] और यही एक अल्लाह की ओर से होने की विशेष पहचान है जो झूठे को कदापि नहीं दी जाती बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले किसी सच्चे नबी ने भी इस उच्चकोटि की महानता के चरमोत्कर्ष

1. ख़ुदा तआला ने क़ुरआन करीम में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहचरगणों को संबोधित किया कि मैंने तुम्हारे धर्म को पूरा किया और तुम पर अपनी नेमत पूरी की और आयत को इस तौर से न वर्णन किया कि हे नबी! आज मैंने क़ुरआन को पूर्ण कर दिया। इसमें युक्ति यह है कि स्पष्ट हो जाए कि केवल क़ुरआन ही अपनी पूर्णता को नहीं पहुँचा अपितु वे भी पराकाष्ठा को पहुँच गए जिनको क़ुरआन पहुँचाया गया और रसूल के आने का जो कारण था वह भी अपने चरमोत्कर्ष को पहुँच गया। - *उसी में से।*

शेष हाशिया

गुज़रा है। जिसका काव्य बहुत प्रतिष्ठित समझा जाता है और निकट ही में बेरूत में एक ईसाई फ़िर्क़े ने बड़ी देख-रेख और खूबसूरती से वह काव्य छापकर जगह-जगह फैलाया है और इस देश में भी आ गया है। उस काव्य में कई दोहे उसकी यादगार हैं जो उसकी और उस समय के ईसाइयों की अन्दरूनी हालत का नक्शा प्रकट कर रहे हैं उन सब में से एक यह है :-

بان الشباب و ربما علّلتہ

بالغانیات وبالشراب الاصھب

अर्थात् जवानी मेरी ख़त्म हो गई और मैंने उसके रोकने के लिए कई बार बल्कि बहुत बार कोशिश की कि खूबसूरत औरतों और लाल शराब[2] के साथ अपने आपको व्यस्त रखा।

2. इसे क़िरमिज़ी शराब (wine) भी कहते हैं यह काले रंग के अंगूर से बनती है। यूरोप के अधिकतर लोग इसे खाने के बाद पीते हैं। (अनुवादक)

का नमूना नहीं दिखाया कि एक ओर अल्लाह की किताब भी आराम और अमन के साथ पूरी हो जाए और दूसरी ओर समस्त मानवीय विशेषताएँ चरमोत्कर्ष को पहुँच जाएँ और इन दोनों के अतिरिक्त कुफ़्र (अधर्म) को हर एक पहलू से पराजय और इस्लाम को हर एक पहलू से विजय हो। फिर दूसरे स्थान पर फ़रमाया कि-

शेष हाशिया

अब इस दोहे से पूर्णत: स्पष्ट है कि यह व्यक्ति बूढ़ा होने और ईसाइयों का एक प्रतिष्ठित विद्वान कहलाने के बावजूद फिर भी व्यभिचार की एक बुराई में ग्रस्त रहा और अधिक लज्जाजनक बात यह है कि बूढ़ा होकर भी व्यभिचार से न रुका केवल इतना ही नहीं बल्कि शराब पीने का भी बहुत बड़ा अभ्यस्त था। अखतल की जीवनी से परिचित लोग इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि वह उस युग की ईसाई क़ौम में ज्ञान और प्रतिष्ठा की दृष्टि से बहुत ही प्रतिष्ठित था। उसकी किताबों से ज्ञात होता है कि वह न केवल उस विचार को जो कफ़्फ़ार: के सिद्धान्त से उसको मिला था शायराना अन्दाज़ में वर्णन करता बल्कि वह पादरी भी था और जिन गिरजाघरों का उसने अपनी किताब में वर्णन किया है माना जाता है कि वह उनमें एक मुखिया पादरी की हैसियत से प्रतिदिन जाता था और सब लोग उसी के पदचिन्हों पर चलते थे। क्या उस युग के समस्त ईसाइयों में से उसके अद्वितीय होने में यह उदाहरण काफी नहीं कि करोड़ों ईसाइयों और पादरियों में से केवल वही उस युग का एक आदमी है जिसकी यादगार तेरह सौ वर्ष में इस युग में भी पाई गई। अत: ईसाइयों में से केवल एक अख़तल ही है जो पुराने ईसाइयों के चाल-चलन का नमूना यादगार के तौर पर छोड़ गया और न केवल अपना ही नमूना अपितु उसने गवाही दे दी कि उस समय के समस्त ईसाइयों का यही हाल था और वस्तुत: वही चाल-चलन लगातार परस्पर व्यवहारिक रूप से अब तक यूरोप में चला आता है। ईसाई

اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ وَالۡفَتۡحُ ۔ وَرَاَيۡتَ النَّاسَ يَدۡخُلُوۡنَ فِىۡ دِيۡنِ اللّٰهِ اَفۡوَاجًا ۔ فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَاسۡتَغۡفِرۡهُ ۔ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا

(सूर: अन्नस्र, आयत 2-4)[1]

अर्थात जब वह आने वाली सहायता और विजय आ गई जिसका वादा दिया गया था और तूने देख लिया कि लोग

---

1. इस आयत से ज्ञात होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दिल में यह अत्यधिक तड़प थी कि मैं अपनी ज़िन्दगी में इस्लाम का धरती पर फैलना देख लूँ और यह बात बहुत ही अप्रिय थी कि सत्य को धरती पर क़ायम करने से पहले मृत्यु आ जाए। इसलिए ख़ुदा तआला इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को शुभसूचना देता है कि देख मैंने तेरी इच्छा पूरी कर दी और किसी हद तक इस इच्छा की हर एक नबी को तड़प थी परन्तु चूँकि इस उच्चकोटि की तड़प नहीं थी इसलिए न मसीह को और न मूसा को यह शुभसूचना मिली। अपितु उसी को मिली जिसके बारे में क़ुरआन में कहा कि - لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفۡسَكَ اَلَّا يَكُوۡنُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ (सूर: अश्-शु'अरा, आयत 4) अर्थात् क्या तू इस ग़म से मर जाएगा कि ये लोग क्यों ईमान नहीं लाते - *इसी से।*

शेष हाशिया ———

धर्म का मुख्य केन्द्र कन्आन* राज्य था और यूरोप में इसी राज्य से यह धर्म पहुँचा और साथ ही इन समस्त बुराइयों का तोहफा भी मिला। अत: अख़तल का काव्य बड़ी ही प्रतिष्ठा योग्य है जिसने उस युग के ईसाई चाल-चलन का सारा पर्दा खोल दिया। इतिहास बता नहीं सकता कि उस युग के ईसाइयों में से कोई और भी ऐसा है जिसकी कोई रचना ईसाइयों के हाथ में हो। हमें अख़तल की जीवनी पर दृष्टि डालने के बाद मानना पड़ता है कि वह इंजील का भी अत्यधिक जानकार था

---

* कन्आन, शाम (सीरिया) का एक प्रान्त है जो वर्तमान में फिलिस्तीन के नाम से जाना जाता है। अनुवादक

झुंड के झुंड इस्लाम धर्म में प्रवेश करते जाते हैं। इसलिए तू ख़ुदा की स्तुति और गुणगान कर अर्थात यह कह कि यह जो हुआ वह मुझ से नहीं अपितु उसकी कृपा और सहायता से है और अन्ततः क्षमायाचना कर, क्योंकि वह रहमत के साथ बहुत ही कृपा करने वाला है। क्षमायाचना की जो शिक्षा

शेष हाशिया ———

क्योंकि उसने उस समय के समस्त ईसाइयों और पादरियों की अपेक्षा विशेष रूप से वह विद्वता और योग्यता दिखलाई कि उस समय के ईसाइयों और पादरियों में से कोई भी दिखला न सका। इसलिए हमें मानना ही पड़ा कि वह इस समय के ईसाइयों का एक चुनिंदा आदर्श है। परन्तु अभी आप सुन चुके हैं कि वह इस बात को स्वयं स्वीकार करता है कि मैं खूबसूरत औरतों और उच्च क्वालिटी की शराब के साथ बुढ़ापे के ग़म को दूर करता हूँ और उस समय के शायरों का भी यही मुहावरा था कि वे अपने व्यभिचारों को इन्हीं शब्दों से वर्णन किया करते थे वे लोग वर्तमान के नासमझ शायरों की तरह केवल बनावटी विचारों की पाबन्दी नहीं करते थे। बल्कि अपनी ज़िन्दगी की घटनाओं का नक़्शा खींचकर दिखला देते थे। इसी कारण से उनके काव्य जाँच-पड़ताल करने वाले लोगों की दृष्टि में निकम्मे नहीं समझे गए, बल्कि ऐतिहासिक पुस्तकों में उनको पूरा स्थान दिया गया और वे पुराने युग के रीति-रिवाज प्रवृत्तियों, भावनाओं और विचारों को पूर्णतः खोलकर दर्शाते हैं। इसी कारण से मुसलमानों ने, जो विद्वान कहलाते हैं उनके क़सीदों और काव्यों को नष्ट नहीं किया, ताकि हर युग के लोग स्वयं अपनी आँखों से पढ़ सकें कि इस्लाम से पहले अरब का क्या हाल था और फिर इस्लाम के बाद सामर्थ्यवान ख़ुदा ने किस तक़्वा (संयम) और पवित्रता से उनको रंगीन कर दिया अगर अख़तल और दीवान-ए-हिमासा और सब्आ मुअल्लक़ः और अग़ानी के वे काव्य जो इस्लाम से पहले के शायरों के अगानी साहिब ने लिखे हैं और जो लिसानुल अरब और सिहाह जौहरी

नबियों (अवतारों) को दी जाती है उसको दूसरे लोगों की तरह पापों से संबंधित समझना पूर्णतः मूर्खता है। बल्कि दूसरे शब्दों में यह शब्द अपने अनस्तित्व और विनम्रता और कम ज़ोरी को स्वीकार करने और सहायता मांगने का विनम्रतापूर्ण ढंग है। चूँकि इस सूरः में कहा गया है कि जिस काम के

शेष हाशिया ———————————————

इत्यादि पुरानी किताबों में मौजूद हैं देखे जाएँ और फिर उनके सामने इस्लाम को देखा जाए तो स्पष्टरूप से ऐसा ज्ञात होता है कि उस अन्धकार के युग में इस्लाम इस तरह से चमका जैसे काली अंधियारी रात में अचानक सूरज निकल आता है। इस तुलना से क़ुदरत का एक नज़ारा (दृश्य) ज्ञात होता है और दिल कह उठता है कि अल्लाहो अकबर, कितनी उस समय क़ुरआन शरीफ़ के आने की ज़रूरत थी। वस्तुतः इसी ठोस प्रमाण ने सारे मुख़ालिफ़ों (विरोधियों) को पैरों के नीचे कुचल दिया है।

फिर हम अपने पहले लेख की ओर लौटकर लिखते हैं कि संभव है कि कोई मूर्ख अख़तल के बारे में यह कहे कि यदि अख़तल अपने बुढ़ापे में बहुत सी खूबसूरत औरतों से विवाह किया हो तो इस दशा में उस पर व्यभिचार का आरोप किस तरह लग सकता है? तो इसका उत्तर यह है कि अख़तल ने अपने दोहे में यह कदापि नहीं कहा कि वे खूबसूरत औरतें मेरी पत्नियाँ हैं। अपितु ऐसे ढंग से अपनी बात को वर्णन किया है जैसे कि दुराचारी और व्यभिचारी लोग हमेशा वर्णन किया करते हैं। इसी कारण उसने खूबसूरत औरतों के साथ उच्च क्वालिटी की शराब को भी जोड़ दिया क्योंकि शराब दुराचरण की वस्तुओं में से है और इसके अतिरिक्त यह बात किसी से छुपी नहीं कि ईसाई धर्म में केवल एक पत्नी ही रखना वैध है। फिर कैसे संभव था कि क़ौम के लोग अपने धर्म और रस्मोरिवाज के विपरीत उसको खूबसूरत लड़कियाँ दे देते। यह स्वीकार किया कि वह अपनी विद्वता की दृष्टि से सारे लोगों से बढ़कर था और जैसा

लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आए थे वह पूरा हो गया, अर्थात यह कि हज़ारों लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया और यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के देहान्त की ओर संकेत है। अतः इसके बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक वर्ष के अन्दर

शेष हाशिया

कि इस युग में एक बड़े विद्वान पादरी की अपनी क़ौम में एक बड़ी प्रतिष्ठा होती है। यही प्रतिष्ठा या इससे अधिक उसको प्राप्त थी और वह अनुकरणीय और अगुवा और सारी क़ौम का प्रिय था। लेकिन फिर भी यह किसी तरह संभव नहीं कि लोग जानबूझकर अपनी खूबसूरत लड़कियों का पुराने रस्मोरिवाज के उलट उसके साथ विवाह किया हो और उसका यह शे'र (दोहा) स्पष्ट रूप से बता रहा है कि केवल व्यभिचार के तौर पर ये अवैध काम उससे होते थे। तभी तो शराब कबाब का सिलसिला भी साथ चल रहा था। क्या कोई मान सकता है कि एक बूढ़ा आदमी और फिर लड़की वालों को सौतन का दुःख और धर्म के विपरीत, परम्परा के विपरीत, कौमी एकता के विपरीत और फिर लोग अन्धे होकर मियाँ अख़तल को अपनी खूबसूरत लड़कियाँ देते जाएँ और दो तीन प्याले शराब के भी साथ ले आएं। निःसन्देह इस दण्डनीय विचार को तो कोई भी स्वीकार न करेगा। मूल बात तो वही है जो हम लिख चुके जिसके उदाहरण अब भी यूरोप में सैकड़ों हज़ारों नहीं वरन् लाखों मौजूद हैं। यूरोप की यात्रा में समुद्र से पार होते ही यह दृश्य बार-बार दृष्टिगोचर होगा। इसके अतिरिक्त अख़तल का केवल यही शे'र (दोहा) नहीं अपितु इससे भी बढ़कर अख़तल के काव्य में एक और शे'र (दोहा) है उसे भी हम इस समय पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं और वह निम्नलिखित है -

انّ من يدخل الكنيسة يومًا

يلقَى فيها جأذر وَظباءً

इस शे'र का अनुवाद यह है कि अगर हमारे गिरजाघर में किसी

देहान्त पा गए। अतएव अवश्य था कि इस आयत के अवतरण से जितना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम प्रसन्न हुए थे उतना दु:खी भी हों, क्योंकि बाग़ तो लगाया गया परन्तु हमेशा के लिए सिंचाई का क्या प्रबन्ध हुआ। इसलिए ख़ुदा तआला ने इसी शोक को दूर करने के लिए क्षमायाचना

शेष हाशिया

दिन कोई जाए तो बहुत से बारहसिंगे बच्चे और हिरन उसमें पाएगा। अर्थात बहुत सी खूबसूरत और जवान सजी-धजी और चुस्त स्त्रियों को देखकर आनन्द उठाएगा। मानो इसमें मियाँ अख़तल लोगों को रुचि दिला रहे हैं कि गिरजा में अवश्य जाना चाहिए और यह आनन्द उठाना चाहिए।

अब इस शे'र से दो बातें पैदा होती हैं। प्रथम यह कि अख़तल ने अपनी क़ौम के लिए कोई गिरजाघर भी बनाया हुआ था जिसमें वह एक पादरी की हैसियत से जाया करता था और ज्ञात होता है कि इन्जील अपने हाथ में लेकर लोगों की लड़कियों और बहुओं को ताड़ा करता था और उन्हीं से अवैध संबंध बना रखे थे। दूसरी यह बात पैदा हेती है कि उन अवैध संबंधों को क़ौम कुछ भी बुरा नहीं मानती थी और ऐसे आँखे लड़ाने वाले को गिरजा से नहीं निकालती थी और पादरी के पद से नहीं हटाती थी। हालाँकि उनको कम से कम यह तो पता था कि यह व्यक्ति गन्दा दिल है और गंदी हरकतों का दिल में इरादा रखता है क्योंकि उसके गन्दे शे'र (दोहे) जो दोस्ती और व्यभिचार प्रकट करते थे लोगों से छुपे हुए नहीं थे। अत: इससे बढ़कर इस बात पर और क्या प्रमाण होगा कि वह सारी क़ौम ही दुराचार में ग्रस्त थी और उनके गिरजे वैश्याओं के कोठों की तरह थे और उन पुरुषों और स्त्रियों के एकत्र होने के लिए जो दुर्वृत्त और गन्दे विचार थे गिरजों से अच्छी और कोई जगह न थी। अर्थात वे गिरजों में ही अपनी काम-वासनाओं को पूरा करने के लिए मौक़ा पाते थे और अख़तल केवल अपने ही काम-वासना के विचारों में ग्रस्त न था बल्कि

का आदेश दिया। क्योंकि शब्दकोष में इस्तिग़फ़ार ऐसे ढाँकने को कहते हैं जिससे इन्सान आपत्तियों से बचा रहे। इसी कारण से मिग़फ़र जो ख़ोद[1] के अर्थ देता है इसी से बना है और क्षमायाचना से यह तात्पर्य होता है कि जिस मुसीबत का डर

1. अर्थात लोहे का बना हुआ टोप - अनुवादक

शेष हाशिया

वह ईसाइयों की किसी औरत या लड़की को भी पाकदामन नहीं समझता था। अत: उसके दीवान-ए-अख़तल में जिसके साथ ईसाई अन्वेषकों ने उसकी जीवनी भी प्रकाशित की है। उसकी जीवनी में यह लिखा है कि वह ऐसी ही औरतों के मामले में एक बार दमिश्क में यहूदियों के उपासनागृह में क़ैद भी किया गया और यह आरोप लगाया गया कि वह ईसाई औरतों के सतीत्व को नहीं मानता है। अत: एक कुलीन और प्रतिष्ठित मुसलमान के कहने पर दमिश्क के एक पादरी ने उसको रिहा कर दिया। लेकिन अख़तल ने मरते दम तक अपनी राय कदापि नहीं बदली। अत: ईसाई औरतों के बारे में उसके शे'र अब तक लोगों की ज़ुबान से सुनने को मिलते हैं।

उसी किताब के पृष्ठ 339 में अख़तल की जीवनी में लिखा है कि वह अपने शे'रों (दोहों) में शराब की बहुत प्रशंसा करता था और शराब के फायदों का खूब जानकार और अनुभवी था। फिर उसकी जीवनी में पृष्ठ 337 में लिखा है कि अख़तल एक पक्का ईसाई था और अपने धर्म पर दृढ़ता से क़ायम था और गिरजा की वसीयतों को खूब याद रखा हुआ था और सलीब को अपने सीने पर हर समय लटकाए रखता था। इसलिए उसका नाम लोगों में सलीब वाला मशहूर था। फिर उसी पृष्ठ में लिखा है कि एक बार सुल्तान अब्दुल मलिक पुत्र मर्वान जिसके दरबार में यह सेवारत भी था इसको कहा कि तू मुसलमान हो जा, तो इसने उत्तर दिया कि ''अगर शराब पीना मेरे लिए वैध कर दो और रमज़ान के रोज़े भी मुझे माफ हो जाएँ तो मैं मुसलमान होने के लिए तैयार हूँ।'' देखो अभी

है या जिस पाप का अन्देशा है ख़ुदा तआला उस मुसीबत या उस पाप को प्रकट होने से रोक दे और ढके रखे। इसलिए इस इस्तिग़्फ़ार के अन्तर्गत यह वादा दिया गया कि इस धर्म के लिए शोक मत कर। ख़ुदा तआला इसको नष्ट नहीं करेगा और हमेशा रहमत के साथ इसकी ओर ध्यान देता रहेगा और

शेष हाशिया

कहा था कि यह पक्का ईसाई और सलीब वाला इसका नाम है और अब यह भी लिख दिया कि यह व्यक्ति एक शराब के प्याले पर ईसाई धर्म को बेचने के लिए तैयार था। अतः उसकी जीवनी में यही लिखा है कि यह एक शराबी आदमी था और इस बात का उसको अपने शे'रों (दोहों) में भी स्वयं इक़रार है कि यह परायी औरतों से बिल्कुल परहेज़ नहीं कर सकता था और यह भी इक़रार है कि उस युग के ईसाई पुरुषों और स्त्रियों का आमतौर पर चाल-चलन अच्छा नहीं था और एक गुप्त व्यभिचार उनमें जारी था। हाँ उसमें एक बड़ी दिलेरी यह थी कि बड़ी दिलेरी के साथ ईसाइयों के दुराचार को वर्णन करता और उनके गिरजाघरों को व्यभिचार का अड्डा बतलाता था और अपनी बदचलनी को भी नहीं छुपाता था। अतएव इसी किताब के पृष्ठ 337 में लिखा है कि एक बार अब्दुल मलिक ने उससे पूछा कि तुझे शराब पीने से क्या मिलता है? तो उसने तुरन्त निम्नलिखित दो शे'र पढ़कर सुना दिए -

اذا ما ندیمی علّنی ثم علّنی
ثلٰث زجاجات لهن هدير
جعلت اجرّ الذيل منّی کانّنی
عليك امير المؤمنين امير

अर्थात जब मेरे शराब पिलाने वाले ने तीन ऐसी बोतलों की मुझे शराब पिलाई जिनसे शराब निकालने के समय एक प्यारी आवाज़ थी तो मैं मस्ती से ऐसे अकड़ कर चलने लगा कि मानो हे अमीरुल मोमिनीन तुम पर मैं शासक हूँ। चूँकि इस्लामी बादशाहों ने मुसलमान होने के लिए कभी किसी पर अत्याचार

उन मुसीबतों को रोक देगा जो किसी कमज़ोरी के समय आ सकती हैं।

अधिकतर मूर्ख ईसाई मग़फ़िरत की असल वास्तविकता न जानने के कारण यह सोच लेते हैं कि जो व्यक्ति क्षमायाचना करे वह दुराचारी और पापी होता है परन्तु मग़फ़िरत के

शेष हाशिया

नहीं किया इसलिए प्रचार के अतिरिक्त उस पर दूसरी कुछ भी वैमनस्यता प्रकट न की गई और वह मर्वानी बादशाहों के दरबार में हज़ारों रुपयों का इनाम पाता रहा और वह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग में ही पैदा हुआ था और चारों ख़लीफ़ाओं का कार्यकाल उसने देखा था और शाम प्रान्त में रहता था और अत्यन्त वृद्ध होने की हालत में मृत्यु पाई। उसने यह बहुत ही अच्छा काम किया कि अपने शे'रों (दोहों) में ईसाई चाल-चलन का नक्शा खींचकर दिखला दिया और बहुत ही स्पष्ट गवाही दे दी कि उस समय के ईसाई लोग अत्यन्त घृणित बदचलनियों में पड़े थे और शराबखोरी और हर प्रकार की बदकारी में डूब चुके थे और चूँकि ईसाई धर्म का प्रारंभिक उदगमस्थल शाम देश ही है। जिस देश का वह निवासी था उसी देश के रहने वालों के हालात का नक्शा खींचकर उसने प्रस्तुत किया है। इससे साफ तौर पर स्पष्ट होता है कि कफ़्फ़ार: का सिद्धान्त कितना झूठा और नीच धोखा है जिसका प्रारंभिक युग में ही यह प्रभाव हुआ कि ईसाई लोग हर प्रकार के दुराचार में ग्रस्त हो गए। अख़तल का युग हज़रत मसीह के युग से कुछ अधिक दूर नहीं था केवल 600 वर्ष गुज़रे थे परन्तु अख़तल की गवाही और उसके अपने इक़रार से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि उस समय के ईसाई अपने दुराचारों के कारण मूर्तिपूजकों से भी अधिक गिरे हुए थे।

अत: जब ताज़ा-ताज़ा समय में कफ़्फ़ारा ने यह प्रभाव दिखाया तो वे लोग अत्यधिक मूर्ख हैं जो अब उन्नीसवीं शताब्दी में इस आज़माए हुए कफ़्फ़ारा के सिद्धान्त से किसी

शब्द पर पूर्णतः ध्यान देने के बाद स्पष्ट तौर पर समझ आ जाता है कि दुराचारी और व्यभिचारी वही है जो ख़ुदा तआला से क्षमायाचना नहीं करता क्योंकि जब हर एक सच्ची पवित्रता उसी की ओर से मिलती है और वही अनुचित काम-वासना संबंधी भावनाओं के तूफान से सुरक्षित और निर्दोष

शेष हाशिया

भलाई की उम्मीद रखते हैं उस युग के ईसाइयों के चाल-चलन से संबंधित एक वह भी क़सीदा (दोहा) है जो ''सब्आ मुअल्लक़ा'' के चौथे मुअल्लक़ा में अम्र पुत्र कुलसूम तग़लबी की ओर से लिखा है यह बात किसी इतिहासवेत्ता से छुपी नहीं कि तग़लब क़ौम के सब लोग ईसाई थे और वही सारे अरब में सब से बढ़कर दुराचार और अत्याचार में गिने गए थे। अतः यह क़सीदा तग़लब की क़ौम के चाल-चलन पर गवाह है कि वे लोग कितने पहले दर्जे के ख़ूनी और लड़ाकू और द्वेषभावना रखने वाले, दुराचारी, शराबी और कामवासना को पूरा करने के लिए बेजा खर्च करने वाले और अपने दुराचार पर खुला-खुला गर्व करने वाले थे। हम इस जगह उपरोक्त तग़लब के केवल दो शे'र (दोहे) उदाहरण के तौर पर लिखते हैं और ये सब्आ मुअल्लक़ा के पाँचवे क़सीदा में मौजूद हैं। जिसका जी चाहे देख ले और वे यह हैं :-

الا حُبّی بصحنك فاصحبینا
ولا تُبقی خُمور الاندرینا
وکاسٍ قد شربت ببعلبكٍ
واُخرٰی فی دمشق وقاصرینا

अर्थात हे मेरी प्रेमिका (यहाँ उसकी प्रेमिका वस्तुतः उसकी माँ ही थी)! शराब का प्याला लेकर उठ, और क़स्बा ''अन्द'' में जितनी शराबें बनाई जाती हैं वे सब मुझे पिला दे और ऐसा कर कि शराब के भण्डारों में से कुछ भी शेष न रह जाए। फिर कहता है कि मैंने बालबिक में बहुत शराब पी है और

रखता है तो फिर ख़ुदा तआला के सच्चे लोगों का हर एक पल यही काम होना चाहिए कि वे उस सच्चे रक्षक एवं संरक्षक से क्षमायाचना किया करें। यदि हम भौतिक संसार में क्षमायाचना का कोई उदाहरण ढूँढें तो हमें इससे बढ़कर और कोई उदाहरण नहीं मिल सकता कि क्षमायाचना उस मज़बूत

शेष हाशिया

फिर उतनी ही मैंने दमिश्क में भी पी और इसी तरह क़ासिरीन में भी पीता रहा। सच है कि ईसाइयों को शराब पीने के अलावा और क्या काम थे। यही तो धर्म का वह बड़ा भाग है जो अशाए रब्बानी (रात के खाने) में भी शामिल है लेकिन सबसे अजीब बात यह है कि यह ईसाई अपनी सगी माँ पर आशिक हो गया। पाठकों को ज्ञात रहे कि अन्द शाम देश में एक कस्बे का नाम है जिसमें ईसाई लोग हर प्रकार की शराब बनाते थे और फिर उन शराबों को दूर-दूर के देशों में भी ले जाते थे और उनके धर्म में शराब पीना केवल जाइज़ (वैध) ही नहीं अपितु हिन्दुओं के बाममार्गी सम्प्रदाय की तरह धर्म का एक बड़ा भाग था जिसके बिना कोई ईसाई नहीं हो सकता था। इसलिए पुरातन से ईसाइयों को शराब के साथ बहुत कुछ संबंध रहे हैं और इस युग में भी भिन्न-भिन्न प्रकार की शराबों के बनाने वाले ईसाई लोग ही हैं। यह बात सिद्ध हो गई है कि अरब देश में भी ईसाई लोग ही शराब ले गए और देश को तबाह कर दिया। ज्ञात होता है कि मूर्तिपूजा की विचारधारा को भी ईसा परस्ती की विचारधारा ने ही बढ़ाया है और ईसाइयों को देख कर वे लोग भी सृष्टिपूजा पर दृढ़तापूर्वक जम गए। याद रहे कि अरब के जंगली लोग शराब को जानते भी नहीं थे कि वह किस चीज़ का नाम है लेकिन जब ईसाई लोग वहाँ पहुँचे और उन्होंने कुछ नए चेलों को भी भेंट किया तब फिर यह खराब आदत देखा-देखी व्यापक रूप से फैल गई और नमाज़ के पाँच समयों की तरह शराब पीने के पाँच समय निर्धारित हो गए।

और सुदृढ़ बाँध की तरह है जो एक तूफ़ान और बाढ़ को रोकने के लिए बनाया जाता है। अत: समस्त शक्तियाँ ख़ुदा तआला की ही हैं। इन्सान जिस तरह शारीरिक दृष्टि से कम ज़ोर है उसी तरह आध्यात्मिक दृष्टि से भी कमज़ोर है और अपने जीवन रूपी वृक्ष के लिए हर समय उस अविनाशी सत्ता

शेष हाशिया

(1) जाशरिया - भोर के समय सूरज निकलने से पहले पी जाने वाली शराब।

(2) सबूह - जो सूरज निकलने के बाद शराब पी जाती है।

(3) ग़बूक - ज़ुहर और अस्र के समय पी जाने वाली शराब का नाम है।

(4) क़ील - ठीक दोपहर के समय पी जाने वाली शराब का नाम है।

(5) फ़हम - रात को पी जाने वाली शराब का नाम है।

इस्लाम धर्म ने आकर यह परिवर्तन किया कि इन पाँच समयों पर पी जाने वाली शराबों की जगह पाँच नमाज़ें निर्धारित कर दीं और हर एक बुराई की जगह नेकी रख दी और सृष्टिपूजा की जगह ख़ुदा तआला का नाम सिखा दिया। इस पवित्र परिवर्तन से इन्कार करना किसी बड़े दुष्ट का काम है न कि किसी सत्प्रवृत्ति व्यक्ति का। क्या कोई धर्म ऐसे पवित्र परिवर्तन का उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है, कदापि नहीं। इस समय हम ईसाइयों के स्वयं स्वीकार किए हुए शे'रों (दोहों) में से इन्हीं पर खत्म करते हैं। लेकिन अगर किसी ने चूँ चिरा किया तो इस तरह के कई सौ शे'र (दोहे) उनको भेंट किए जाएँगे। परन्तु मैं विश्वास रखता हूँ कि इस अवसर पर कोई भी नहीं बोलेगा। क्योंकि ऐसे हज़ारों शे'र (दोहे) जो अनेक प्रकार के अपराध दुराचार और अत्याचार की स्वीकारिता पर आधारित हैं कैसे छुप सकते हैं।

अब कोई पादरी ठाकुरदास साहिब से जिन्होंने क़ुरआन की अनावश्यकता पर अकारण और अनर्थ की द्वेषभावना से झूठ

से सिंचन चाहता है जिसके उपकार के बिना यह जीवित ही नहीं रह सकता। इसलिए उपरोक्त अर्थों की दृष्टि से उसके लिए इस्तिग़्फ़ार (क्षमायाचना) अनिवार्य हुआ। जिस तरह वृक्ष चारों ओर अपनी टहनियाँ निकालता है मानो चारों ओर के झरने की तरफ अपने हाथों को फैलाता है कि हे झरने! मेरी

शेष हाशिया ———

बोला है पूछे कि क्या अब भी क़ुरआन की आवश्यकता के बारे में आपको पता चला कि नहीं। क्या हमने सिद्ध नहीं कर दिया कि क़ुरआन उस समय अवतरित हुआ कि जब समस्त ईसाई कोढ़ियों की तरह सड़ गल गए थे और उनके प्रेम में दूसरे लोग भी तबाह हो गए थे। वास्तविक आवश्यकता इसका नाम है या वह जो इन्जील के लिए प्रस्तुत की जाती है कि म सीह की जान गई और ईसाई पहले से भी बद्तर हो गए। यदि ठाकुरदास साहिब चाहें तो हम दस हज़ार तक ऐसे शे'र (दोहे) प्रस्तुत कर सकते हैं जिनमें मुख़ालिफ़ों ने स्वयं अपने अनेक प्रकार के अपराध दुराचार और अत्याचार को स्वीकार किया है। अब भी कई कई अपराधों में ईसाई सबसे पहले नम्बर पर हैं। बुराइयों की जड़ कहलाने वाली इस शराब के बारे में ही ले लीजिए कि केवल लन्दन शहर में ही शराब की इतनी दुकानें हैं कि हिसाब किया गया कि यदि उनको एक लाइन में लगाएँ तो 75 मील लम्बाई हो जाए। व्यभिचारिणी औरतों की इंग्लैंड में इतनी अधिकता है कि केवल लन्दन शहर में एक लाख से अधिक होंगी और जो चोरी छिपे पतिव्रता कहलाने वाली लेडियों से अवैध बच्चे पैदा होते हैं उनके बारे में कई लोगों ने अनुमान लगाया है कि वे 75 प्रतिशत हैं। जुआ खेलने का इतना चलन है कि खुदा की पनाह। ऐसा ज्ञात होता है कि इस क़ौम के दिलों से ख़ुदा की महानता का डर बिल्कुल उठ गया है इन्सान को ख़ुदा बना रखा है बुराइयों को नेकी समझ लिया है। सच तो यह है कि मसीह की आत्म-हत्या की विचारधारा ने इनको तबाह कर दिया। बद्कारियों से बचने

मदद कर और मेरे हरे-भरे होने में कोई कमी न होने दे और मेरे फलों का समय नष्ट होने से बचा। यही हाल सदाचारियों का है। रूहानी हरियाली के बचे और सही-सलामत रहने के लिए या उस हरियाली को बढ़ाने के उद्देश्य से अविनाशी सत्ता के झरने से सलामती का पानी माँगना भी वह काम है

शेष हाशिया

और नेक मार्गों पर चलने के लिए जितने आदेश तौरात में थे, कफ़्फ़ारा के सिद्धान्त ने उन सबसे आज़ाद कर दिया। इन लोगों को इस्लाम से इतनी दुश्मनी है जितनी शैतान को सच्चाई से है। इनमें से कोई ध्यानपूर्वक चिन्तन नहीं करता कि इस्लाम ने कौन सी नई बात प्रस्तुत की है जो आपत्तियोग्य है। मूसा ने कई लाख निरपराध बच्चे मार डाले, परन्तु कोई ईसाई नहीं कहता कि बुरा काम किया। लेकिन हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन पर तलवार उठाई जिन्होंने पहले तलवार उठाई थी और उनको मारा जो पहले बहुत से निरपराध मुसलमानों को मार चुके थे। फिर भी आपने पहल न की, बल्कि जब उन्होंने स्वयं पीछा किया और स्वयं चढ़ाई की तब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने न बच्चों को मारा और न बूढ़ों को बल्कि जो मुजरिम बन चुके थे उन्हीं को दण्ड दिया गया। यह दण्ड ईसाइयों को बहुत बुरा लगता है बार-बार यही रोना रोते हैं कि क्या इससे सिद्ध नहीं होता कि मारे जलन के उनके दिल काले हो गए। आश्चर्य की बात है कि एक कमज़ोर इन्सान को ख़ुदा कहकर उनका बदन नहीं काँपता, क़यामत के दिन का कुछ भी उनको डर नहीं लगता। अगर हज़रत मसीह एक दिन के लिए ज़िन्दा होकर आ जाएँ और इनसे कहा जाए कि देखो यह तुम्हारा ख़ुदा है!! इनसे ज़रा हाथ तो मिलाओ तो शर्म से डूब जाएँ। सृष्टि को पूजने वालों ने विनम्र लोगों के मरने के बाद न जाने उनको क्या-क्या बना डाला। शर्म नहीं, ख़ुदा तआला का डर नहीं, यह भी नहीं सोचते कि मसीह ने पहले नबियों से बढ़कर क्या दिखलाया।

जिसको क़ुरआन करीम दूसरे शब्दों में इस्तिग़्फ़ार के नाम से याद करता है। क़ुर्आन शरीफ़ पर चिन्तन करो और उसे ध्यान से पढ़ो, इस्तिग़फ़ार की एक बड़ी सच्चाई पाओगे। हम अभी वर्णन कर चुके हैं कि मग़्फ़िरत (क्षमायाचना) शब्दकोश के अनुसार ऐसे ढाँकने को कहते हैं जिससे किसी मुसीबत से बचना तात्पर्य है। उदाहरणत: पानी वृक्षों के लिए एक ढकने और बचाने वाला तत्व है अर्थात उनकी कमज़ोरियों को ढकता है। यह बात सोचो कि अगर किसी बाग़ को एक-दो वर्ष बिल्कुल पानी न मिले तो वह किस तरह दिखाई देगा। क्या यह सच नहीं कि उसकी ख़ूबसूरती बिल्कुल खत्म हो जाएगी

शेष हाशिया

ख़ुदाई के कौन से काम किए, क्या यह काम ख़ुदा के थे कि सारी रात रो-रोकर काटी फिर भी दुआ क़बूल न हुई। ईली ईली कहते हुए जान दी। बाप को कुछ भी रहम न आया, अधिकतर भविष्यवाणियाँ पूरी न हुईं, चमत्कारों पर तालाब ने दाग़ लगाया, फ़क़ीहों (यहूदी मौलवियों) ने पकड़ा और ऐसा पकड़ा कि फिर छूट न पाया। एलिया की तावील में कुछ बढ़िया उत्तर बन न सका और भविष्यवाणी को अपने ज़ाहिरी शब्दों पर पूरा करने के लिए एलिया को ज़िन्दा करके दिखा न सका और ''लिमा सबक़तनी'' कहकर सैकड़ों हसरतों के साथ इस दुनिया को छोड़ा, ऐसे ख़ुदा से तो हिन्दुओं का ख़ुदा रामचन्द्र ही अच्छा रहा, जिसने जीते जी रावण से अपना बदला ले लिया और उस समय तक न छोड़ा जब तक उसका वध न कर दिया और उसके शहर को जला न दिया। हाँ कफ़्फ़ारा का ढकोसला बाद में रचा गया परन्तु देखना चाहिए कि इससे लाभ क्या हुआ, ईसाइयों पर तो और भी दुष्कर्म का भूत सवार हो गया, कौन सी बुराई है जिससे वे रुक गए, कौन सी गन्दगी है जो उनमें न पाई जाती हो। अफ़सोस कि आत्महत्या यूँ ही व्यर्थ गई। - *उसी में से।*

और हरियाली और सुन्दरता का नामोनिशान नहीं रहेगा और वह समय पर कभी फल नहीं लाएगा और अन्दर ही अन्दर जल जाएगा और फूल भी नहीं आएँगे अपितु उसके हरे-भरे और नर्म-नर्म लहलहाते हुए पत्ते थोड़े ही दिनों में सूखकर गिर जाएँगे और सूखापन बढ़ जाने से कोढ़ की तरह धीरे-धीरे उसके सारे अंग गिरने शुरू हो जाएँगे। यह सारी मुसीबतें उस पर क्यों आयीं? इसका कारण यह है कि वह पानी जो उसके जीवन का आधार था उसने उसको सींचा नहीं। इस आयत में उसी की ओर संकेत है। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ

(सूर: इब्राहीम, आयत 25)

अर्थात पवित्र बात पवित्र वृक्ष के समान है। जिस तरह कोई ख़ूबसूरत और बढ़िया वृक्ष बिना पानी के बड़ा नहीं हो सकता उसी तरह सदाचारी व्यक्ति की पवित्र बातें जो उसके मुख से निकलती हैं तब तक अपना रंग नहीं दिखा सकतीं और न बढ़ सकती हैं जब तक पवित्र झरना उसकी जड़ों को क्षमायाचना के नाले में बह कर तर न करे। इसलिए इन्सान की रूहानी ज़िन्दगी इस्तिग़्फ़ार (क्षमायाचना) से है जिसकी नाली में से होकर जीवन का असल पानी इन्सानियत की जड़ों तक पहुँचता है और सूखने एवं मरने से बचा लेता है। जिस धर्म में इस फ़िलास्फ़ी (दर्शन) का वर्णन नहीं वह धर्म ख़ुदा तआला की ओर से कदापि नहीं और जिस व्यक्ति ने नबी या रसूल या सदाचारी या सत्प्रकृति कहलाकर इस झरने से मुँह मोड़ा है वह कदापि ख़ुदा तआला की ओर से नहीं और ऐसा आदमी ख़ुदा तआला से नहीं अपितु राक्षस से पैदा हुआ है क्योंकि अरबी भाषा में ''शयतुन'' मरने को कहते हैं। अत: जिसने अपने रूहानी बाग़ को हरा भरा करने के लिए

उस वास्तविक झरने को अपनी ओर खींचना नहीं चाहा और इस्तिग़्फ़ार की नाली को उस झरने से नहीं भरा वह शैतान है अर्थात मरने वाला है क्योंकि संभव नहीं कि कोई हरा-भरा वृक्ष बिना पानी के जीवित रह सके। हर एक अहंकारी जो उस ज़िन्दगी के झरने से अपने रूहानी वृक्ष को हरा-भरा करना नहीं चाहता वह राक्षस है और राक्षस की तरह मरेगा। कोई सच्चा नबी संसार में ऐसा नहीं आया जिसने इस्तिग़फ़ार (क्षमायाचना) की वास्तविकता से मुँह फेरा और उस वास्तविक झरने से हरा-भरा होना न चाहा। हाँ सबसे अधिक उस हरियाली को हमारे सैयद व मौला, नबियों के सरदार अगलों और पिछलों के गौरव मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने माँगा। इसलिए ख़ुदा ने उसको उसके समस्त हम मंसबों से अधिक सुप्रतिष्ठित और फलीभूत किया।

हम फिर अपने पहले उद्देश्य की ओर लौटते हुए लिखते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत और क़ुरआन करीम की सच्चाई पर इस तर्क से एक बड़ा और ज्वलंत प्रमाण सिद्ध होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसे समय में संसार में भेजे गए कि जब दुनिया एक महान सुधारक की प्रतीक्षा कर रही थी और फिर उस समय तक देहान्त न हुआ जब तक कि सच्चाई को धरती पर क़ायम न कर दिया।[1] जब नुबुव्वत के साथ प्रकट हुए तो

1. इस जगह देखने में एक आरोप पैदा होता है और वह यह है कि अगर एक मूर्तिपूजक यह कहे कि हम स्वीकार करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ से मूर्तिपूजा की जड़ें उखेड़ दी गईं। लेकिन हम यह स्वीकार नहीं करते कि मूर्तिपूजा बुरी थी बल्कि हम कहते हैं कि यही सन्मार्ग था जिससे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

आते ही अपनी ज़रूरत दुनिया पर सिद्ध कर दी और हर एक क़ौम को उनके शिर्क, झूठ और फसाद से भरी हुई हरकतों पर आरोपी ठहराया। जैसा कि क़ुरआन करीम इस से भरा हुआ है। उदाहरणतया इसी आयत को सोचकर देखो कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

शेष हाशिया ———————————

ने रोक दिया। अतएव इससे सिद्ध हुआ कि आप ने लोगों का सुधार न किया बल्कि दोस्ती के मार्ग को बिल्कुल ख़त्म कर दिया। इसी तरह अगर एक मजूसी कहे कि यह तो मैं मानता हूँ कि वास्तव में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अग्निपूजा की रस्म को समाप्त कर दिया और सूरज की पूजा का भी नामोनिशान न रहा। परन्तु मैं यह बात नहीं मानूँगा कि यह काम अच्छा किया बल्कि वही सच्चा मार्ग था जिसको मिटा दिया। इसी तरह अगर एक ईसाई कहे कि यद्यपि मैं मानता हूँ कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अरब से ईसाई आस्था की बुनियाद उखेड़ दी, परन्तु मैं इस बात को सुधार की श्रेणी में नहीं रख सकता कि ईसा और उसकी माँ की पूजा से मना किया गया और सूलियों और मूर्तियों को तोड़ दिया गया। क्या यह अच्छा काम था? बल्कि वही मार्ग अच्छा था जिसका विरोध किया गया। इसी तरह अगर जुआ खेलने वाला और मद्यपान करने वाला, व्यभिचारी, लड़कियों को क़त्ल करने वाले, और कंजूस या व्यर्थ खर्च करने वाले, तरह-तरह के अन्याय और छल कपट को पसन्द करने वाले, चोर-उचक्के, डाका डालने वाले अपने-अपने तर्क प्रस्तुत करें और कहें कि यद्यपि हम स्वीकार करते और मानते हैं कि इस्लाम में हमारे गिरोहों का बहुत ही बढ़िया सुधार किया गया है और हज़ारों चोरों को कठोर से कठोर दण्ड देकर धरती के अधिकतर भू-भाग से उनका आतंक मिटा दिया लेकिन हमारी समझ में उन पर अकारण अत्याचार किया गया। वे जान पर खेल कर चोरी करते और स्वयं ख़तरे में पड़कर डाका डालते

تَبٰرَكَ الَّذِیۡ نَزَّلَ الۡفُرۡقَانَ عَلٰی عَبۡدِہٖ لِیَکُوۡنَ لِلۡعٰلَمِیۡنَ نَذِیۡرَا

(सूर: अल्-फ़ुर्क़ान, आयत 2)

अर्थात् वह बहुत ही बरकत वाला है जिसने क़ुरआन शरीफ़ को अपने भक्त पर इसलिए उतारा कि सारी दुनिया को डराने वाला हो अर्थात उनके व्यभिचार और अन्धविश्वास

शेष हाशिया

थे। इसलिए उनका धन इतनी मेहनत के बाद वैध के ही अन्तर्गत था, अकारण उनको सताया गया और एक पुरानी रस्म जो इबादत समझी जाती थी मिटा दी। अत: उन सब गिरोहों का जवाब यह है कि यों तो कोई व्यक्ति भी उन गिरोहों में से अपने मुँह से स्वयं को दोषी नहीं ठहराएगा, लेकिन उनके कई एक दूसरे पर गवाह हैं। उदाहरणतया रामचन्द्र और कृष्ण जी की पूजा करने वाला और उनको ख़ुदा ठहराने वाला इस बात को कभी नहीं स्वीकार करेगा कि वह रामचन्द्र और कृष्ण को केवल एक मनुष्य ठहराए, अपितु बार-बार इसी बात पर बल देगा कि उन दोनों महापुरुषों में परमात्मा की ज्योति थी और वे मनुष्य होने के बावजूद ख़ुदा भी थे और अपने अन्दर एक सृजित होने का कारण भी रखते थे और एक सृजन करने का भी। उनका सृजित होना नश्वर था और इसी तरह ही उनके सृजित होने की व्याधियाँ भी अर्थात मरना और दु:ख उठाना या खाना-पीना सब नश्वर थे परन्तु सृजन शक्ति उनकी पुरातन है और सृजन करने की विशेषता भी पुरातन। लेकिन अगर उनको कहा जाए कि हे भले मानुषो! अगर यही बात है तो इब्ने मरयम[1] के ईश्वरत्व को भी मान लो और बेचारे ईसाई जो दिन-रात यही रोना रो रहे हैं उनका भी तो कुछ ध्यान रखो कि [2]چوں آب از سر گذشت چہ نیزہ چہ بالشت तब वे हज़रत मसीह को इतनी अशिष्टता से झुठलाते हैं कि ईश्वरत्व तो भला कौन माने उस बेचारे को नबी भी नहीं मानते। बल्कि

1. अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम - अनुवादक
2. अनुवाद :- जब पानी सिर से ऊपर हो गया है - अनुवादक

पर उनको आगाह करे। अतः यह आयत स्पष्ट तौर पर इस बात पर प्रमाण है कि क़ुरआन का यही दावा है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसे समय में पैदा हुए थे जब सारी दुनिया और सारी क़ौमें बिगड़ चुकी थीं और विरोधी क़ौमों ने इस दावा को न केवल अपने चुप रहने से बल्कि

शेष हाशिया

कभी-कभी गालियों तक नौबत पहुँचाते हैं और कहते हैं कि उसकी श्री महाराज ब्रह्ममूर्त रामचन्द्रजी और कृष्ण गोपाल रुद्र से क्या तुलना। वह तो एक आदमी था जिसने पैग़म्बरी का झूठा दावा किया। कहाँ श्री महाराज कृष्ण जी और कहाँ मरयम का पुत्र ईसा। आश्चर्य यह है कि अगर ईसाइयों के पास इन दोनों महात्मा अवतारों की चर्चा की जाए तो वे भी उनके ईश्वरत्व को नहीं मानते अपितु अशिष्टता से बातें करते हैं। हालाँकि संसार में ईश्वरत्व की सबसे पहले बुनियाद डालने वाले यही दोनों महात्मा हैं और छोटे-छोटे ख़ुदाओं के मूरिसेआला और इब्ने मरयम इत्यादि तो पीछे से निकले और उनकी शाखें हैं और ईसा मसीह को ख़ुदा बनाने में उन्हीं लोगों के पदचिह्नों पर चले हैं जिन्होंने उन महात्माओं को ख़ुदा बनाया। जैसा कि क़ुरआन करीम इसी की ओर संकेत करता है। देखो आयत -

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ۨابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝۳۰

(सूरः अत्तौबः, आयत 30)

अर्थात् यहूदियों ने कहा कि उज़ैर ख़ुदा का बेटा है और ईसाइयों ने कहा कि मसीह ख़ुदा का बेटा है। यह सब उनके मुँह की बातें हैं। यह लोग उन लोगों के पदचिह्नों पर चलते हैं जो उनसे पहले इन्सानों को ख़ुदा बनाकर काफ़िर (अधर्मी) हो गए। ख़ुदा के मारों ने कहाँ से कहाँ पल्टा खाया। अतः यह आयत स्पष्ट तौर पर हिन्दियों और यूनानियों की ओर संकेत

अपने इक़रारों से भी मान लिया है। इसलिए इससे यह खुला-खुला परिणाम निकला कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वास्तव में ऐसे समय में आए थे कि जिस समय में एक सच्चे और महानतम नबी को आना चाहिए। फिर जब हम दूसरा पहलू देखते हैं कि वे किस समय मृत्यु पाए,

शेष हाशिया

कर रही है और बता रही है कि पूर्वजों को इन्हीं लोगों ने ख़ुदा बनाया। फिर ईसाइयों के दुर्भाग्य से यह सिद्धान्त उन तक पहुँच गए। तब उन्होंने कहा कि हम उन क़ौमों से क्यों पीछे रहें और उनके दुर्भाग्य से तौरात में पहले से यह मुहावरा था कि इन्सानों को कई जगहों पर ख़ुदा के बेटे कहा गया था अपितु ख़ुदा की बेटियाँ भी, बल्कि कुछ पूर्वजों को ख़ुदा भी कहा गया था। इस साधारण मुहावरे की दृष्टि से मसीह पर भी इंजील में ऐसा ही शब्द बोला गया। अत: वही शब्द मूर्खों के लिए घातक विष हो गया। सारी बाइबल दुहाई दे रही है कि यह शब्द इब्ने मरयम से कुछ विशेष नहीं बल्कि हर एक नबी और सदाचारी पर बोला गया है। अपितु याक़ूब सबसे पहलौठा कहलाया है। लेकिन दुर्भाग्यशाली इन्सान जब किसी जाल में फँस जाता है तो फिर उससे निकल नहीं सकता। फिर आश्चर्य यह है कि जो कुछ मसीह के ईश्वरत्व के लिए आधार वर्णन किए गए हैं कि वह ख़ुदा भी है और इन्सान भी। यह सारे आधार कृष्ण और रामचन्द्र के लिए हिन्दुओं की किताबों में पहले से मौजूद हैं और इस नई शिक्षा से ऐसे मेल खाते हैं कि हम इसके अतिरिक्त और कोई राय नहीं प्रकट कर सकते कि यह सारी हिन्दुओं की आस्थाओं से नक़ल की गई है। हिन्दुओं में त्रिमूर्ति की भी आस्था थी जिससे ब्रह्मा, विष्णु और महादेव का समूह तात्पर्य है। अत: तस्लीस ऐसी आस्था की नक़ल की हुई मालूम होती है। परन्तु विचित्र बात यह है कि जो कुछ म सीह के ख़ुदा बनाने के लिए और बौद्धिक आरोपों से बचने के लिए ईसाई लोग जोड़-तोड़ कर रहे हैं और मसीह की मनुष्यता

तो क़ुरआन शरीफ स्पष्ट तौर पर हमें बताता है कि ऐसे समय में बुलावा आया कि जब अपना काम पूरा कर चुके थे अर्थात उस समय के बाद बुलाए गए जब यह आयत अवतरित हो चुकी कि मुसलमानों के लिए शिक्षा का संकलन पूरा हो गया और जो कुछ धर्म की आवश्यकताओं में अवतरित होना

शेष हाशिया

को ईश्वरत्व के साथ ऐसे तौर पर जोड़ रहे हैं जिससे उनका तात्पर्य यह है कि किसी तरह बौद्धिक आरोपों से बच जाएँ लेकिन फिर भी वे किसी तरह बच भी नहीं सकते और अन्ततः ख़ुदा का रहस्य कह कर पीछा छुड़ाते हैं। ठीक इसी तरह यही उदाहरण उन हिन्दुओं का है जो रामचन्द्र और कृष्ण को ईश्वर ठहराते हैं अर्थात वे भी बिल्कुल वही बातें सुनाते हैं जो ईसाई सुनाया करते हैं और जब हर एक दृष्टिकोण से विवश हो जाते हैं तब कहते हैं कि यह ईश्वर का एक भेद है और उन्हीं पर खुलता है जो ध्यान लगाते और संसार को त्यागते और तपस्या करते हैं। लेकिन यह लोग नहीं जानते कि यह भेद तो उसी समय खुल गया जब उन झूठे खुदाओं ने अपनी खुदाई का कोई ऐसा नमूना न दिखलाया, जो इन्सान ने न दिखलाया हो। सच है कि ग्रन्थों में यह क़िस्से भरे पड़े हैं कि उन अवतारों ने बड़ी बड़ी शक्ति के काम किए हैं मुर्दे जीवित किए और पहाड़ों को सिर पर उठा लिया। लेकिन अगर हम उन कहानियों को सच मान लें तो यह लोग स्वयं स्वीकार करते हैं कि कुछ ऐसे लोगों ने भी चमत्कार दिखलाए जिन्होंने ख़ुदा होने का दावा नहीं किया। उदाहरणतया थोड़ा सा सोचकर देख लो कि क्या मसीह के काम मूसा के कामों से बढ़कर थे, बल्कि मसीह के चमत्कारों को तो तालाब के क़िस्से ने मिट्टी में मिला दिया। क्या आप लोग उस तालाब को नहीं जानते जो उसी युग में था, और क्या इस्राईल में ऐसे नबी नहीं हुए जिनके शरीर के छूने से मुर्दे ज़िन्दा हुए, फिर खुदाई की डींग मारने के लिए कौन से कारण हैं, शर्म का स्थान है!!!

था वह सब अवतरित हो चुका और केवल यही नहीं अपितु यह भी खबर दी गई कि ख़ुदा तआला के समर्थन भी अपने चरमोत्कर्ष को पहुँच गए और खुशी से लोग इस्लाम धर्म स्वीकार करने लगे और यह आयतें भी अवतरित हो गईं कि ख़ुदा तआला ने ईमान और तक़्वा (संयम) को उनके दिलों में

शेष हाशिया

यद्यपि हिन्दुओं ने अपने अवतारों के बारे में शक्ति के काम बहुत लिखे हैं और बिना किसी कारण के उनको परमेश्वर सिद्ध करना चाहा है परन्तु वे क़िस्से भी ईसाइयों के व्यर्थ क़िस्सों से कुछ कम नहीं हैं और यदि मान भी लें कि कुछ उनमें से सही भी है तब भी विवश इन्सान जिसके अन्दर बुढ़ापा और कमज़ोरी का तत्व होता है परमेश्वर नहीं हो सकता और मूलरूप से सदैव जीवित रहना तो स्वयं में झूठ है और ख़ुदा की किताबों के विपरीत है। हाँ आदर और सम्मान के तौर पर जीवित रहना, जिसमें संसार में पुन: भौतिक शरीर के साथ लौटकर आना और संसार में आबाद होना नहीं होता, यह संभव है परन्तु यह ख़ुदा होने का प्रमाण नहीं क्योंकि इसके दावेदार बहुत हैं। मुर्दों से बातें करा देने वाले बहुत गुज़रे हैं, परन्तु यह तरीक़ा कश्फ़े-ए-क़ुबूर की क़िस्म में से है। हाँ हिन्दुओं को ईसाइयों पर एक विशेषता अवश्य है नि:सन्देह हम उसे मानते हैं और वह यह है कि वह इन्सानों को ख़ुदा बनाने में ईसाइयों के गुरू हैं। उन्हीं के आविष्कार का ईसाइयों ने भी अनुसरण किया। हम किसी तरह इस बात को छुपा नहीं सकते कि जो कुछ ईसाइयों ने बौद्धिक आरोपों से बचने के लिए बातें बनाई हैं ये बातें उन्होंने अपने मस्तिष्क से नहीं बनाईं बल्कि शास्त्रों और ग्रन्थों में से चुराई हैं यह आँधी का सारा ढेर पहले ही से ब्राह्मणों ने कृष्ण और रामचन्द्र के लिए बना रखा था जो ईसाइयों के काम आया। इसलिए यह विचार खुला-खुला झूठ है कि शायद हिन्दुओं ने ईसाइयों की किताबों में से चुराया है। क्योंकि उनके यह लेख उस समय के हैं कि जब हज़रत ईसा

लिख दिया और अवज्ञा और दुराचार से उन्हें विमुख कर दिया और पवित्र एवं नेक शिष्टाचार से वे विभूषित हो गए और एक बड़ा परिवर्तन उनकी शिष्टता, चाल-चलन और रूह में आ गया। तब इन समस्त बातों के बाद सूर: अन्नसर अवतरित हुई जिसका सारांश यही है कि नुबुव्वत के सारे उद्देश्य पूरे हो

शेष हाशिया

पैदा भी नहीं हुए थे। अत: विवश हो कर मानना पड़ा कि चोर ईसाई ही हैं। अत: पोर्ट साहिब भी इस बात को मानते हैं कि ''तस्लीस अफ़्लातून के लिए एक ग़लत धारणा के अनुसरण का परिणाम है। परन्तु वास्तविक बात यह है कि यूनानी और हिन्दुस्तानी अपने विचारों में परस्पर एक जैसे थे अधिक अनुमान यह है कि ये शिर्क के भण्डार पहले हिन्दुस्तान से वेद विद्या के रूप में यूनान में गए फिर वहाँ से मूर्ख ईसाइयों ने चुरा चुरा कर इन्जील पर हाशिए चढ़ाए और अपना आमालनामा ठीक किया।''

अब हम वास्तविक अर्थों की ओर आते हुए लिखते हैं कि जब इन समस्त सम्प्रदायों में से एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय को झुठलाने वाला है तो इसमें कुछ सन्देह नहीं कि उनमें से हर एक अपने विचार में दुनिया का सुधार इस बात में समझता है कि उसके विरोधी सम्प्रदाय की आस्था खत्म हो और इस बात को मानता है कि उसके विरोधी की आस्था अत्यन्त खराब और झूठी है। जब हर एक फ़िर्क़ा अपने विरोधी को देखकर इस ख़राबी को मान रहा है तो इस दशा में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में हर एक सम्प्रदाय को आवश्यकता पड़ने पर स्वीकार करना पड़ा है कि वास्तव में आप स.अ.व. के हाथ से दुनिया का व्यापक सुधार हुआ और आप वास्तव में सबसे बड़े सुधारक थे। इसके अतिरिक्त हर एक सम्प्रदाय के धर्मवेत्ता इस बात को स्वीकार करते हैं कि उन के धर्म के लोग वस्तुत: उस युग में अत्यन्त व्यभिचारी और कुमार्गों में पड़ गए थे। अत: उस युग का व्यभिचार और खराब

गए और इस्लाम ने दिलों को जीत लिया तब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने व्यापक तौर पर यह घोषणा कर दी कि यह सूरः मेरे देहान्त की ओर संकेत करती है। बल्कि इसके बाद हज किया और उसका नाम हज्जतुल विदा* रखा और हज़ारों लोगों की मौजूदगी में एक ऊँटनी पर सवार

शेष हाशिया

हालत के बारे में पादरी फण्डल किताब 'मीज़ानुल हक़' में और धर्मवेत्ता पोर्ट अपनी किताब में और पादरी जेम्स कैमरून लीस अपने प्रकाशित भाषण मई 1882 ई. में इस बात को स्वीकार कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त सच्ची नेकी और सन्मार्ग को पहचानने वाले जानते हैं कि यह समस्त फ़िर्क़े एक अन्धकार के गढ़े में पड़े हुए हैं[1] और उन ख़ुदाओं में से कोई भी असली और सच्चा ख़ुदा नहीं, जिन लोगों को इन मूर्खों ने ख़ुदा समझ रखा है क्योंकि वास्तविक तौर पर ख़ुदा होने की यह निशानी है कि उसकी महानता और प्रताप उसके जीवन की घटनाओं से ऐसे तौर पर प्रकट होता हो जैसे कि आसमान और ज़मीन एक सच्चे और प्रतापी ख़ुदा की महानता प्रकट कर रहे हैं। परन्तु इन विवश और कष्टग्रस्त ख़ुदाओं में इस लक्षण का पूर्णतया अभाव है। क्या विवेक इस बात को स्वीकार कर लेगा कि एक मरने वाला और स्वयं कमज़ोर किसी दृष्टि से ख़ुदा भी है? कदापि नहीं। बल्कि सच्चा ख़ुदा वही ख़ुदा है जिसकी अपरिवर्तनीय विशेषताएँ प्रारंभ से प्रकृति में दिखाई दे रही हैं और जिसको इन बातों की आवश्यकता नहीं कि कोई उसका बेटा हो और आत्महत्या करे तब लोगों को मुक्ति मिले। बल्कि मुक्ति का सच्चा तरीक़ा प्रारंभ से एक ही है जो नवीनीकरण

---

1. पंडित दयानन्द ने भी अपनी सत्यार्थ प्रकाश में यह स्वीकार किया है और पंडित जी इस बात को मानते हैं कि आर्यवर्त उस युग में मूर्तिपूजन में डूबा हुआ था। - *उसी में से।*

---

* अर्थात आख़िरी हज - अनुवादक।

होकर एक विस्तृत भाषण दिया और कहा कि सुनो! हे ख़ुदा के बन्दो! मुझे मेरे रब्ब की ओर से यह आदेश मिले थे ताकि मैं यह सारे आदेश तुम्हें पहुँचा दूँ अब क्या तुम गवाही दे सकते हो कि यह सब बातें मैंने तुम्हें पहुंचा दीं। तब सारी क़ौम ने ऊँचे स्वर से कहा कि हम तक यह सब पैग़ाम

शेष हाशिया ———————————

और बनावट से पवित्र है। जिस पर चलने वाले सच्ची मुक्ति और उसके फलों को इसी दुनिया में पा लेते हैं और उसके सच्चे नमूने अपने अन्दर देखते हैं अर्थात वह सच्चा तरीक़ा यही है कि ख़ुदा के आदेशों को स्वीकार करके उसके अधीन रहकर ऐसे जीवनयापन करें कि मन में अहंकार लेशमात्र न रह जाए और इसी प्रकार अपने लिए स्वयं क़ुर्बानी दें। यही तरीक़ा है जो ख़ुदा तआला ने प्रारंभ से सत्याभिलाषियों की प्रकृति में रखा है। जब से इन्सान बनाया गया है उसे इस आध्यात्मिक क़ुर्बानी का सामान भी प्रदान कर दिया गया और उसकी प्रकृति उस सामान को अपने साथ लाई है और उसी पर सचेत करने के लिए बाह्य क़ुर्बानियाँ भी रखी गईं। यह वह अमिट सच्चाई है जिसको कायर और दुर्भाग्यशाली हिन्दुओं और ईसाइयों ने नहीं समझा और आध्यात्मिक सच्चाइयों पर ध्यान नहीं दिया और अत्यन्त बुरे एवं घृणित और घोर अन्धकारमय विचारों में पड़ गए। मैंने कभी किसी चीज़ पर ऐसा आश्चर्य नहीं किया जितना कि इन लोगों की हालत पर करता हूँ कि ये शाश्वत और सर्वशक्तिमान ख़ुदा को छोड़कर ऐसे निरर्थ विचारों के अनुयायी हैं और उन पर गर्व करते हैं।

फिर हम मूल उद्देश्य की ओर लौट कर कहते हैं कि जैसा हम वर्णन कर चुके हैं कि हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम द्वारा सुधार का काम बहुत व्यापक और समस्त लोगों एवं समस्त सम्प्रदायों पर प्रमाणित है और सुधार का यह स्थान किसी पूर्व नबी को नहीं मिला। अगर कोई अरब का इतिहास पढ़कर देखे तो उसे ज्ञात होगा कि

पहुँचाए गए तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीन बार आसमान की ओर इशारा करके कहा कि हे ख़ुदा! इन बातों का गवाह रह, और फिर फ़रमाया कि यह सारी बातें इस लिए वर्णन की गईं कि शायद अगले साल मैं तुम्हारे मध्य नहीं हूँगा और फिर दूसरी बार तुम मुझे इस जगह नहीं

शेष हाशिया

उस समय के मूर्तिपूजक और ईसाई और यहूदी कितनी ईर्ष्या रखते थे और किस तरह उनके सुधार की सैकड़ों वर्षों से नाउम्मीदी हो चुकी थी। फिर दृष्टि दौड़ाकर देखिए कि क़ुरआन की शिक्षा ने जो उनके बिल्कुल विपरीत थी कितने स्पष्ट प्रभाव दिखलाए और कैसे हर एक बुरी आस्था और हर एक व्यभिचार को खत्म कर दिया। शराब को जो हर एक बुराई की जड़ है दूर किया। जुआ खेलने की रस्म को खत्म किया। कन्या वध का अन्त किया और जो इन्सानी दया और न्याय और पवित्रता के विपरीत आदतें थीं उन सब को दूर किया। हाँ अपराधियों ने अपने अपराधों के दण्ड भी पाए जिनके पाने के वे पात्र थे। अतः सुधार का विषय ऐसा विषय नहीं है जिससे कोई इन्कार कर सके। यहाँ यह भी याद रहे कि सच्चाई को छुपाने वाले इस युग के पादरियों ने जब देखा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ से इतना व्यापक सुधार हुआ कि उसको किसी तरह छुपा नहीं सकते और इसकी अपेक्षा मसीह ने जो अपने समय में सुधार किया वह बहुत ही थोड़ा है तो उन पादरियों को चिन्ता हुई कि पथभ्रष्टों को सुधारना और व्यभिचारियों को नेकी के रंग में लाना जो सच्चे नबी का मूल निशान है वह जितनी व्यापक तौर पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रकट हुआ मसीह के सुधार के कामों में उसकी कोई भी तुलना नहीं पाई जाती। तब उन्होंने अपने दज्जाली धोखों के साथ सूरज पर धूल झोंकना चाहा, तो जैसा कि पादरी जेम्स कैमरून लिस ने अपने भाषण में प्रकाशित किया कि विवश होकर मूर्खों को इस तरह पर

पाओगे, तब मदीना में जाकर दूसरे वर्ष में देहान्त पा गए। हे अल्लाह! उन पर अपनी बरकत और सलामती करता रह। वस्तुतः यह सारे संकेत क़ुरआन शरीफ़ से ही सिद्ध होते हैं जिसका प्रमाण इस्लाम के सर्वमान्य इतिहास से भी पूर्णतया मिलता है।

शेष हाशिया

धोखा दिया कि वे लोग पहले से नेक बनने के लिए तैयार थे और मूर्तिपूजा इत्यादि उनकी दृष्टि में व्यर्थ ठहर चुका था लेकिन अगर ऐसी राय प्रकट करने वाले अपने इस विचार में सच्चे हैं तो उन पर अनिवार्य है कि अपने इस विचार के सम र्थन में वैसा ही प्रमाण दें जैसा कि क़ुरआन करीम उनके विरुद्ध देता है अर्थात फ़रमाता है कि

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا[1]

(सूरः अल्-हदीद, आयत 18)

और उन सब को मुर्दे ठहराकर उनका ज़िन्दा किया जाना केवल अपनी ओर मंसूब करता है और बार-बार कहता है कि वे पथभ्रष्टता की जंजीरों में जकड़े हुए थे हमने उनको मुक्ति दी। वे धर्मान्ध थे हमने उनका मार्ग दर्शन किया। वे अन्धकार में थे हमने ही ज्ञान दिया और यह बातें छुपकर नहीं कहीं बल्कि क़ुरआन उन सब के कानों तक पहुँचा और उन्होंने उन वर्णनों का इन्कार न किया और कभी यह न कहा कि हम तो पहले से ही तत्पर थे क़ुरआन का हम पर कुछ उपकार नहीं। अतः यदि हमारे विरोधियों के पास अपने वर्णन के समर्थन में ऐसा कोई मुख़ालिफ़ाना लेख हो जो क़ुरआन करीम के साथ-साथ तेरह सौ वर्ष से चला आता हो तो उसे प्रस्तुत कर दें अन्यथा ऐसी बातें केवल ईसाई प्रवृत्ति की मनगढ़त बातें हैं इससे बढ़कर कुछ भी नहीं, यह

1. जान लो कि अल्लाह धरती को उसके मर जाने के बाद अवश्य जीवित करता है - अनुवादक

अब क्या दुनिया में कोई ईसाई या यहूदी या आर्य अपने किसी ऐसे सुधारक को उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत कर सकता है जिसका आना सारी क़ौमों के लिए हो और अत्यन्त आवश्यकता पर आधारित हो और जाना उस उद्देश्य के पूरा होने के बाद हो और उन विरोधियों को अपनी नीच हालत

शेष हाशिया ——————————————

जेम्स का कथन है जो किताब मजाहब-ए-आलम में प्रकाशित हुआ है। परन्तु कुछ ईसाई पादरियों ने इससे भी बढ़कर यथार्थ के समझने का साहस दिखलाया है। वे कहते हैं कि वस्तुतः सुधार कोई वस्तु नहीं, और न कभी किसी का सुधार हुआ। तौरात की शिक्षा सुधार के लिए नहीं थी बल्कि इस संकेत के लिए थी कि पापी इन्सान ख़ुदा के आदेशों पर चल नहीं सकता और इन्जील की शिक्षा भी इसी उद्देश्य से थी, अन्यथा थप्पड़ खाकर दूसरा गाल भी फेर देना न कभी हुआ न होगा और कहते हैं कि क्या मसीह कोई नई शिक्षा लेकर आया था, और फिर स्वयं ही उत्तर देते हैं कि इन्जील की शिक्षा तो पहले से ही तौरात में मौजूद थी और बाईबल की विविध बातों को एकत्र करने से इन्जील बन जाती है। फिर मसीह क्यों आया? इसका उत्तर देते हैं कि केवल आत्महत्या के लिए, लेकिन आश्चर्य यह कि आत्महत्या से भी मसीह ने जी चुराया और "ईली ईली लिमा सबक़तनी" मुँह से कहता रहा। फिर यह भी आश्चर्य की बात है कि ज़ैद की आत्महत्या से बकर को क्या मिलेगा। अगर किसी का कोई रिश्तेदार उसके घर में बीमार हो और वह उसके शोक से छुरी मार ले तो क्या वह रिश्तेदार इस नीच हरकत से अच्छा हो जाएगा। या किसी के बेटे की आंतों में भयानक दर्द है तो उसका बाप उसके शोक में अपना सिर पत्थर से फोड़ ले तो क्या इस मूर्खतापूर्ण हरकत से बेटा अच्छा हो जाएगा।

यह भी समझ नहीं आता कि ज़ैद कोई पाप करे और बकर को उसके बदले सूली पर चढ़ाया जाए, यह न्याय है या दया,

और दुराचारों का स्वयं इक़रार हो जिनकी ओर वह रसूल भेजा गया हो। मैं जानता हूँ कि यह प्रमाण इस्लाम के अतिरिक्त और किसी के पास मौजूद नहीं। स्पष्ट है कि **हज़रत मूसा** केवल फ़िरऔन को मात देने और अपनी क़ौम को छुड़ाने एवं सन्मार्ग दिखाने के लिए आए थे। सारी दुनिया के उपद्रव या शान्ति से उनको कोई मतलब न था। यह सच है कि फिरऔन के हाथ से उन्होंने अपनी क़ौम को छुड़ा दिया परन्तु शैतान के हाथ से छुड़ा न सके और वादा के देश तक उनको पहुँचा न सके और उनके हाथ से बनी इस्राईल क़ौम को आत्मशुद्धि न मिली और बार-बार अवज्ञाएँ करते रहे। यहाँ तक कि हज़रत मूसा देहान्त पा गए और उनका वही हाल रहा। हज़रत मसीह के हवारियों की हालत तो स्वयं इन्जील से स्पष्ट है अधिक स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं और यह बात कि यहूदी, जिनके लिए हज़रत मसीह नबी होकर आए थे कितने उनकी जीवन में हिदायत पा चुके थे। यह भी एक ऐसी बात है जो किसी से छुपी नहीं। बल्कि अगर हज़रत मसीह की नुबुव्वत को उस कसौटी से जाँचा जाए तो बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि उनकी नुबुव्वत भी उस कसौटी की दृष्टि से

शेष हाशिया

कोई ईसाई हमें बताए। हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि ख़ुदा के बन्दों की भलाई के लिए जान देना या जान देने के लिए तैयार हो जाना एक उच्चकोटि का सदाचरण है लेकिन यह बड़ी मूर्खता होगी कि आत्महत्या की बेजा हरकत को उस चलन में सम्मिलित किया जाए। अत: ऐसी आत्महत्या तो सख़्त अवैध है और मूर्खों तथा बेसब्रों का काम है। हाँ बलिदान का सुन्दर ढंग उस महानतम सुधारक के जीवन में चमक रहा है जिसका नाम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है। - *उसी में से।*

किसी तरह सिद्ध नहीं हो सकती।[1]

क्योंकि नबी के लिए सर्वप्रथम आवश्यक है कि वह उस समय आए कि जब वस्तुत: उस क़ौम का सदाचार पूर्णत: समाप्त हो गया हो जिसकी ओर वह भेजा गया है। लेकिन हज़रत मसीह यहूदियों पर कोई भी ऐसा आरोप नहीं लगा सके जिससे सिद्ध होता हो कि उन्होंने अपने ईमान बदल डाले हैं या वे चोर और व्यभिचारी और जुएबाज़ इत्यादि हो गए हैं या उन्होंने तौरात को छोड़कर किसी और किताब का अनुसरण कर लिया है अपितु स्वयं गवाही दी कि यहूदी मौलवी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं और न यहूद क़ौम ने अपने व्यभिचार और दुराचारी होने का इक़रार किया।

द्वितीय यह कि सच्चे नबी की सच्चाई पर यह एक बड़ा प्रमाण होता है कि वह व्यापक सुधार का एक बड़ा नमूना दिखाए। अत: जब हम इस नमूने को हज़रत मसीह की ज़िन्दगी में ढूँढते हैं और देखना चाहते हैं कि उन्होंने कौन सा सुधार किया और कितने लाख या हज़ार लोगों ने उनके हाथ पर तौबा की, तो यह भाग भी खाली पड़ा हुआ दिखाई देता है। हाँ बारह हवारी (सहचर) हैं। परन्तु जब उनकी करनी देखते हैं तो दिल काँप उठता है और अफसोस होता है कि

---

1. नोट :- ईसाई कफ़्फ़ारा पर बहुत गर्व करते हैं। परन्तु इतिहास की जानकारी रखने वाले ईसाई इससे अनभिज्ञ नहीं कि मसीह की आत्महत्या से पहले ईसाइयों के विचार के अनुसार ही थोड़े बहुत सदाचारी ईसाई थे परन्तु आत्महत्या के बाद तो ईसाइयों के कुकृत्यों का बाँध टूट गया। क्या यह कफ़्फ़ारा की नस्ल जो अब यूरोप में मौजूद है अपने चाल-चलन में उन लोगों से मिलती जुलती है जो कफ़्फ़ारा से पहले मसीह के साथ चलते फिरते थे। - *उसी में से।*

यह लोग कैसे थे कि इतना निष्कपट प्रेम का दावा करके फिर ऐसी नीच हरकत दिखावें कि जिसका उदाहरण संसार में नहीं पाया जाता। क्या तीस रुपये लेकर एक सच्चे नबी और प्यारे मार्गदर्शक को कातिलों के हवाले करना, हवारी कहलाने की यही वास्तविकता थी? क्या यह अनिवार्य था कि हवारियों का सरदार पतरस हज़रत मसीह के सामने खड़े होकर उन पर लानत डाले और इस कुछ दिनों की ज़िन्दगी के लिए अपने मार्गदर्शक को उसके मुँह पर गालियाँ दे? क्या यह उचित था कि हज़रत मसीह के पकड़े जाने के समय सारे हवारी भाग खड़े हों और एक पल के लिए भी धैर्य न रखें? क्या जिनका प्यारा नबी वध करने के लिए पकड़ा जाए उन लोगों की सच्चाई के यही निशान हुआ करते हैं, जो उस समय हवारियों ने दिखाए। उनके मरने के बाद दुनियादारों ने बातें बनायीं और आसमान पर चढ़ा दिया। परन्तु जो कुछ उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में अपनी आस्था दिखलाई वह बातें तो अब तक इंजीलों में मौजूद हैं। तात्पर्य यह कि वह प्रमाण जो रसूल होने के अर्थों में एक सच्चे नबी के लिए प्रमाणित होता है वह हज़रत मसीह के लिए प्रमाणित नहीं हो सका।अगर क़ुरआन शरीफ उनकी नुबुव्वत का वर्णन न करता तो हमारे लिए कोई भी स्पष्ट प्रमाण न था कि हम उनको सच्चे नबियों के गिरोह में दाखिल कर सकें। क्या जिसकी यह शिक्षा हो कि मैं ही ख़ुदा हूँ और ख़ुदा का बेटा और इबादत और आज्ञापालन से मुक्त, और जिसकी बुद्धि केवल इतनी हो कि मेरी आत्महत्या से लोग पाप से मुक्ति पा जाएँगे, तो क्या ऐसे आदमी के बारे में एक पल के लिए भी कह सकते हैं कि वह बुद्धिमान है और सन्मार्ग पर है पर यह अल्लाह की कृपा है कि क़ुरआन की शिक्षा ने हम पर यह स्पष्ट कर

दिया कि **मरयम के पुत्र ईसा** पर यह सारे आरोप झूठे हैं। **इन्जील** में तस्लीस[1] का नामोनिशान नहीं। इब्नुल्लाह (अल्लाह का बेटा) शब्द का साधारण मुहावरा जो पहली किताबों में आदम से लेकर आख़िर तक हज़ारों लोगों पर बोला गया था वही साधारण शब्द हज़रत मसीह के लिए इन्जील में आ गया, फिर बात का बतंगड़ बनाया गया यहाँ तक कि हज़रत मसीह इसी शब्द के आधार पर ख़ुदा भी बन गए। हालाँकि न कभी मसीह ने ख़ुदा होने का दावा किया और न कभी आत्महत्या की इच्छा प्रकट की। जैसा कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया कि यदि ऐसा करता तो सच्चों की सूची से उसका नाम काट दिया जाता। यह भी मुश्किल से विश्वास होता है कि ऐसे शर्मनाक झूठ की बुनियाद हवारियों के विचारों की सरकशी ने पैदा की हो क्योंकि उनके बारे में जो इन्जील में वर्णन किया गया है यद्यपि यह सत्य भी हो कि वे मोटी बुद्धि के और बहुत जल्द ग़लती खाने वाले लोग थे, लेकिन हम इस बात को मान नहीं सकते कि वे एक नबी की संगति में रहकर ऐसे नीच विचारों को अपनी हथेली पर लिए फिरते थे। लेकिन इन्जील के हाशियों पर पूर्णत: ध्यान देने से असल वास्तविकता यह ज्ञात होती है कि यह सारा षड़यंत्र हज़रत पोलूस का है जिसने राजनीतिक चालबाज़ों की तरह बहुत गूढ़ धोखों से काम लिया है।

अत: जिस मरयम के पुत्र के बारे में क़ुरआन शरीफ़ ने हमें बताया है वह उसी अमिट और अमर शिक्षा का पाबन्द था जो प्रारम्भ से मानव जाति के लिए निर्धारित की गई है। इसलिए उसके पैग़म्बर होने के लिए क़ुरआन द्वारा दिया गया प्रमाण पर्याप्त है चाहे इंजील के अनुसार उसकी पैग़म्बरी के

1. त्रित्ववाद (Trinity) - अनुवादक

बारे में कितने ही सन्देह पैदा हों। सलामती हो उस पर जिसने हिदायत का अनुसरण किया।

लेखक

ख़ाकसार

ग़ुलाम अहमद

नूरुल क़ुरआन
(क़ुरआन की ज्योति)

भाग – 2

(सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर, दिसम्बर 1895 ई.
और जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल 1896 ई.)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद, क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

प्रकाशक
नज़ारत नश्र-व-इशाअत
सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

हम इस बात को बड़े खेद के साथ प्रकट करते हैं कि एक ऐसे व्यक्ति के मुकाबले पर नूरुल क़ुरआन का यह अंक जारी हुआ है जिसने शिष्टतापूर्ण बातों की बजाय हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में गालियों से काम लिया है और अपनी व्यक्तिगत दुष्चरित्रता से पवित्र लोगों के सरदार और इमाम पर सरासर झूठ से ऐसे आरोप लगाए हैं कि एक शुद्ध हृदय मनुष्य का शरीर उनके सुनने से काँप जाता है। इसलिए ऐसे बकवास करने वाले लोगों के इलाज के लिए जैसे को तैसा उत्तर देना पड़ा। हम पाठकों पर स्पष्ट करते हैं कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर हमारी बहुत ही नेक आस्था है और हम दिल से विश्वास रखते हैं कि वे ख़ुदा तआला के सच्चे और प्यारे नबी थे और हमारा इस बात पर ईमान है जैसा कि क़ुरआन शरीफ हमें बताता है कि वे अपनी मुक्ति के लिए हमारे सैयद व मौला **हज़रत मुहम्मद** मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दिलो जान से ईमान लाए थे और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत के सैकड़ों सेवकों में से एक निश्छल सेवक वह भी थे। अतएव हम उनकी हैसियत के अनुसार हर तरह से उनका सम्मान करते हैं परन्तु ईसाइयों ने जो एक ऐसा यीशू प्रस्तुत किया है जो ख़ुदाई का दावा करता था और अपने अतिरिक्त समस्त पूर्वकालीन तथा बाद में आने वालों को लानती समझता था अर्थात उन्हें उन दुष्कर्मों का दोषी मानता था जिनका दण्ड लानत है। ऐसे व्यक्ति को हम भी ख़ुदा की रहमत से वंचित समझते हैं। क़ुरआन शरीफ़ ने हमें उस धृष्ट और अपशब्द बोलने वाले यीशू की खबर नहीं दी उस व्यक्ति के चाल-चलन पर हमें बड़ा आश्चर्य

है जिसने ख़ुदा पर मौत का आना जायज़ रखा और स्वयं खुदाई का दावा किया और ऐसे शुद्धात्माओं को जो उससे हज़ारों गुना अच्छे थे गालियाँ दीं। इसलिए हमने अपने लेख में हर जगह ईसाइयों का बनावटी यीशू अभिप्राय लिया है और ख़ुदा तआला का एक विनम्र भक्त ईसा इब्ने मरयम जो नबी था जिसका वर्णन क़ुरआन में है वह हमारे कठोर सम्बोधनों में कदापि अभिप्राय नहीं और यह तरीक़ा हमने चालीस वर्ष तक पादरी साहिबों की गालियाँ सुनने के बाद अपनाया है। कई मूर्ख मौलवी जिनको अन्धे कहना चाहिए वे ईसाइयों को क्षमायोग्य समझते हैं कि वे बेचारे कुछ भी मुँह से नहीं बोलते और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कुछ भी अपमान नहीं करते परन्तु याद रहे कि वस्तुत: पादरी लोग अपमान और तौहीन करने एवं गालियाँ देने में पहले नम्बर पर हैं। हमारे पास ऐसे पादरियों की किताबों का एक भण्डार है जिन्होंने अपने लेखों को सैकड़ों गालियों से भर दिया है जिस मौलवी को देखने की इच्छा हो वह आकर देख ले और याद रहे कि भविष्य में जो पादरी साहिब गाली देने के मार्ग को छोड़कर शिष्टता से बात करेंगे हम भी उनके साथ शिष्टतापूर्ण व्यवहार करेंगे। अब तो वे किसी तरह गाली गलौज से रुकते नहीं और ख़ुद अपने यीशू पर स्वयं हमला कर रहे हैं। हम सुनते सुनते थक गए। अगर कोई किसी के बाप को गाली दे तो क्या उस पीड़ित का अधिकार नहीं कि वह उसके बाप को भी गाली दे। हमने तो जो कुछ कहा, सच कहा। कर्मों का दारोमदार नीयतों पर होता है।

खाकसार

ग़ुलाम अहमद

20 दिसम्बर सन् 1895 ई.

***

पत्रिका

फ़तह मसीह

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَالسَّلَامُ عَلٰی عِبَادِہِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی

इसके पश्चात् स्पष्ट हो कि, चूँकि पादरी फ़तह मसीह ने जो फतेहगढ़ (चूड़ियाँ) ज़िला गुरदासपुर में नियुक्त है हमारे पास एक अत्यन्त दुःखदायी पत्र भेजा है और उसमें हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर व्यभिचार का आरोप लगाया है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से गाली गलौज के शब्द प्रयोग किए हैं। इसलिए युक्तिसंगत लगा कि उसके पत्र का उत्तर प्रकाशित कर दिया जाए। इसलिए यह किताब लिखी गई। आशा है कि पादरी साहिबान इसको ध्यानपूर्वक पढ़ें और इसके शब्दों से दुःखी न हों क्योंकि यह सारा ढंग मियाँ फ़तह मसीह के कठोर शब्दों और अत्यन्त गंदी गालियों का परिणाम है। फिर भी हम हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की पवित्र शान का प्रत्येक दृष्टि से सम्मान करते हैं। यहाँ केवल फतह मसीह के कठोर शब्दों के कारण एक बनावटी मसीह का अपेक्षाकृत वर्णन किया गया है और वह भी बड़ी मजबूरी से, क्योंकि उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बहुत गालियाँ दी हैं और हमारा दिल दुखाया है और अब हम उसके पत्र का उत्तर नीचे लिखते हैं :-

मेरे मित्र पादरी साहिब! यथोचित अभिवादन के पश्चात् लिखता हूँ कि इस समय मुझे बहुत कम फ़ुर्सत है किन्तु जब मैंने आपका वह पत्र देखा जो आपने मेरे धर्मभ्राता मौलवी

अब्दुल करीम साहिब के नाम भेजा था तो उचित समझा कि अपनी इस किताब के बारे में जो संकलित हो रही है स्वयं आपको शुभ सूचना दूँ ताकि आपको अधिक कष्ट उठाने की आवश्यकता न रहे। याद रखें कि किताब ऐसी होगी कि आप बहुत ही खुश हो जाएँगे। आपकी उन मेहरबानियों के कारण जो इस बार आपके पत्र में बहुत ही पाई जाती हैं मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया है कि इस किताब के प्रकाशन का कारण केवल आपके प्रार्थना पत्र को ही ठहराया जाए। क्योंकि जिस लेख के लिखने के लिए अब हम तैयार हैं अगर आपका यह पत्र न आया होता जिसमें आपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा और सौदः रज़ि. के बारे में अपशब्द कहे हैं, तो शायद वह लेख देर से छपता। यह आपकी बड़ी मेहरबानी हुई कि आप ही इसके प्रेरक बन गए। आशा है कि दूसरे पादरी साहिबान आप पर बहुत ही खुश होंगे और कुछ आश्चर्य नहीं कि हमारी किताब छपने के बाद आपकी कुछ तरक़्क़ी भी हो जाए। पादरी साहिब हमें आपकी हालत पर रोना आता है कि आप अरबी भाषा से तो अनभिज्ञ थे ही परन्तु वे ज्ञान भी जो धार्मिक विषयों से कुछ संबंध रखते हैं जैसे प्रकृति और चिकित्सा विज्ञान उन से भी आप अनभिज्ञ सिद्ध हुए। आपने जो हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का वर्णन करके 9 वर्ष की शादी के रस्म का वर्णन लिखा है। प्रथम तो 9 वर्ष का वर्णन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ुबान से सिद्ध नहीं और न उस बारे में कोई वह्यी हुई और न क्रमागत हदीसों से सिद्ध हुआ कि वास्तव में 9 वर्ष की ही आयु थी। केवल एक रावी (वर्णनकर्ता) से वर्णित है। अरब के लोग जंत्रियाँ नहीं रखते थे क्योंकि वे अनपढ़ थे और उनकी हालत को

देखकर दो-तीन वर्ष कम-ज़्यादा हो जाना एक साधारण सी बात है। जैसा कि हमारे देश में भी अधिकतर अनपढ़ लोग दो-चार वर्ष के अन्तर को अच्छी तरह याद नहीं रख सकते। फिर यदि कल्पना के तौर पर मान भी लें कि सचमुच दिन-दिन का हिसाब करके 9 वर्ष ही थे। लेकिन फिर भी कोई बुद्धिमान आपत्ति नहीं करेगा किन्तु मूर्ख का कोई इलाज नहीं। हम आपको अपनी किताब में सिद्ध करके दिखाएँगे कि वर्तमान शोधकर्ता डाक्टर इस पर सहमत हैं कि 9 वर्ष तक की भी लड़कियाँ वयस्क हो सकती हैं। यहाँ तक कि सात वर्ष तक की आयु में भी सन्तान हो सकती हैं और बड़े-बड़े अनुभवों से डाक्टरों ने इसको सिद्ध किया है और स्वयं सैकड़ों लोगों की यह बात आँखों देखी है कि इसी देश में आठ-आठ नौ-नौ वर्ष की लड़कियों के यहाँ सन्तान मौजूद है परन्तु आप पर तो कुछ भी अफ़सोस नहीं और न ही करना चाहिए, क्योंकि आप केवल हठधर्म और संकीर्ण ही नहीं अपितु **प्रथम श्रेणी के मूर्ख भी हैं**। आपको अब तक इतना भी ज्ञान नहीं कि सरकार के कानून प्रजा की माँग के अनुसार उनकी रस्म और समाज के साधारण तौर तरीकों के आधार पर तैयार होते हैं। उनमें दार्शनिकों की पद्धति पर जाँच पड़ताल नहीं होती और आप जो बार-बार अंग्रेज़ी सरकार का नाम लेते हैं यह बिल्कुल सच है कि हम अंग्रेज़ी सरकार के कृतज्ञ हैं और उसके शुभचिन्तक हैं और जब तक जीवित हैं, रहेंगे। परन्तु फिर भी हम उसको गल्तियों से रहित नहीं समझते और न उसके क़ानूनों को युक्तिपूर्ण शोधों पर आधारित समझते हैं अपितु क़ानूनों के बनाने का नियम प्रजा के बहुमत पर है। सरकार पर कोई ईशवाणी नहीं उतरती ताकि वह अपने कानून में ग़लती न करे। यदि ऐसे ही कानून सुरक्षित होते तो हमेशा

नए-नए क़ानून क्यों बनते रहते। ब्रिटेन में लड़कियों के वयस्क होने की आयु 18 वर्ष ठहराई गई है परन्तु गर्म देशों में तो लड़कियाँ बहुत जल्द वयस्क हो जाती हैं। आप यदि सरकार के कानूनों को ख़ुदा की वह्यी (वाणी) की तरह समझते हैं कि उनमें गल्तियाँ संभव नहीं तो हमें डाक द्वारा सूचित करें ताकि इन्जील और कानून की थोड़ी सी तुलना करके आपकी कुछ सेवा की जाए। सरकार ने अब तक कोई घोषणापत्र नहीं दिया कि हमारे कानून भी तौरात और इन्जील की तरह त्रुटि और गल्तियों से पवित्र हैं। अगर आपको कोई घोषणापत्र पहुँचा हो तो उसकी एक प्रति हमें भी भेज दें फिर यदि सरकार के कानून ख़ुदा की किताबों की तरह त्रुटि से खाली नहीं तो उनका वर्णन करना या तो मूर्खता के कारण से है या द्वेष के कारण से। परन्तु आप विवश हैं। यदि सरकार को अपने क़ानून पर विश्वास था तो क्यों उन डाक्टरों को दण्ड नहीं दिया जिन्होंने अभी निकट ही यूरोप में बड़ी जाँच-पड़ताल से 9 वर्ष अपितु 7 वर्ष को भी कई स्त्रियों के वयस्क होने का समय ठहराया है। नौ वर्ष की आयु के बारे में आप ऐतराज़ करके फिर तौरात या इन्जील का कोई प्रमाण न दे सके केवल सरकार के क़ानून का वर्णन किया। इससे ज्ञात हुआ कि आप का तौरात और इन्जील पर ईमान नहीं रहा। अन्यथा नौ वर्ष का निषेध या तो तौरात से सिद्ध करते या इन्जील से सिद्ध करना चाहिए था। **पादरी साहिब यही तो दजल (झूठ) है** कि इल्हामी किताबों के सिद्धान्तों में आपने सरकार के कानून को प्रस्तुत कर दिया। अगर आपके निकट सरकार के क़ानून की सारी बातों में कोई त्रुटि नहीं पाई जाती और इल्हामी किताबों की तरह वरन् उनसे श्रेष्ठ हैं तो मैं आपसे पूछता हूँ कि जिन नबियों ने अंग्रेज़ी कानून के विपरीत **कई लाख दूध पीते बच्चे**

क़त्ल किए यदि वे इस समय होते तो सरकार उनसे क्या व्यवहार करती। अगर वे लोग सरकार के सामने पकड़ कर लाए जाते जिन्होंने दूसरों के खेतों के गुच्छे तोड़कर खा लिए थे तो सरकार उनको और उनके अनुमति देने वाले को क्या क्या दण्ड देती। फिर मैं पूछता हूं कि वह व्यक्ति जो अंजीर का फल खाने दौड़ा था और इन्जील से सिद्ध है कि वह अंजीर का पेड़ उसकी जायदाद न था अपितु दूसरे की जायदाद था यदि वह व्यक्ति सरकार के सामने यह हरकत करता तो सरकार उसको क्या दण्ड देती? इन्जील से यह भी सिद्ध है कि बहुत से सूअर जो दूसरों की जायदाद थे और पादरी क्लार्क के कथनानुसार जिनकी संख्या दो हज़ार थी उनको मसीह ने मार डाला, अब आप ही बताएँ कि दण्डविधान की दृष्टि से उसका क्या दण्ड है। अभी इतना लिखना पर्याप्त है उत्तर अवश्य लिखें ताकि फिर और भी बहुत से प्रश्न किए जाएँ।

पादरी साहिब! आपका यह विचार कि नौ वर्ष की लड़की के साथ सहवास करना व्यभिचार है, पूर्णत: असत्य है। आपकी ईमानदारी यह थी कि आप इंजील से इसको सिद्ध करते। इन्जील ने आपको धक्के दिए और वहाँ कुछ न मिला तो सरकार के पैरों पर आ पड़े। याद रखें कि यह गालियाँ केवल शैतानी (पैशाचिक) द्वेष से हैं। पवित्र नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुराचार का आरोप लगाना यह शैतानी (पैशाचिक) प्रवृत्ति के लोगों का काम है। इन दो पवित्र नबियों अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर कुछ नीच और दुष्ट प्रकृति लोगों ने बहुत झूठे आरोप लगाए हैं। अत: उन दुष्टों ने, लानतुल्लाहि अलैहिम (उन पर अल्लाह की लानत हो) पहले नबी को तो व्यभिचारी कहा जैसा कि आप ने, और दूसरे

को अवैध संतान कहा जैसा कि दुष्प्रकृति यहूदियों ने। आपको चाहिए कि ऐतिराज़ों से बचें।

यह ऐतिराज़ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी पत्नी सौदः को बूढ़ी होने के कारण तलाक़ देने के लिए तैयार हो गए थे, पूर्णतः गलत और घटना के विरुद्ध है और जिन लोगों ने ऐसा वर्णन किया है वे इस बात का प्रमाण नहीं दे सके कि किस व्यक्ति के पास आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऐसा इरादा प्रकट किया था। अतः असल वास्तविकता जो हदीस की विश्वस्त किताबों में वर्णित है यह है कि स्वयं सौदः ने ही अपने बुढ़ापे के कारण डर कर दिल में यह सोचा कि अब मेरी हालत आकर्षक नहीं रही ऐसा न हो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम स्वाभाविक अनिच्छा के कारण जो मनुष्य की मादकता के साथ जुड़ी हुई है, मुझ को तलाक़ दे दें और यह भी सम्भव है कि अनिच्छा की कोई बात भी उसने अपने दिल में समझ ली हो और उससे तलाक़ का अन्देशा दिल में जम गया हो क्योंकि औरतों के स्वभाव में ऐसे विषयों में वह्म बहुत हुआ करता है। इसलिए उसने स्वयं ही अपनी ओर से कह दिया कि मैं इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहती कि आपकी धर्म पत्नियों में मुझे गिना जाए। अतः नैलुल अवतार के पृष्ठ 140 में यह हदीस है :-

قَالَ[1] السَّوْدَةَ بِنْت زَمعة حين اسنّت و خافت اَن يفارقها رسول الله قالت يا رسول الله وهبت يومى لعائشة فقبل ذالك منها... و رواه ايضًا سعد و سعيد ابن منصور والترمذى و عبد الرزاق قال الحافظ فى الفتح فتواردت هذه الروايات على انها خشيت الطلاق

1. हदीस में असल अरबी शब्द ''क़ालत्'' है धोखे से प्रथम संस्करण में क़ाला शब्द लिखा गया है - प्रकाशक।

अर्थात् सौद: पुत्री जम्आ को जब अपने बुढ़ापे के कारण इस बात का अन्देशा हुआ कि अब सम्भवत: मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जुदा हो जाऊँगी तो उसने कहा हे अल्लाह के रसूल! मैंने अपनी बारी आयशा को प्रदान कर दी है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनका यह निवेदन स्वीकार कर लिया। इब्ने सअद और सईद इब्ने मंसूर और तिर्मिज़ी और अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने भी यही हदीस वर्णन की है और फ़तहुलबारी में लिखा है कि इसी पर हदीसों की सहमति है कि सौद: को स्वयं ही तलाक़ का अन्देशा हुआ था। अब इस हदीस से स्पष्ट है कि वस्तुत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस प्रकार की कोई बात नहीं कही अपितु सौद: ने अपने बुढ़ापे को देखकर स्वयं ही अपने दिल में यह विचार बैठा लिया था। यदि इन हदीसों के मूल वर्णन और स्पष्टीकरण से दृष्टि हटाते हुए मान भी लें कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वाभाविक अनिच्छा के कारण सौद: को बूढ़ी देखकर तलाक़ का इरादा किया था तो इसमें भी कोई बुराई नहीं और न यह बात किसी शिष्टाचार के विरुद्ध है क्योंकि जिस बात पर स्त्री और पुरुष के परस्पर वैवाहिक संबंध आधारित हैं अगर उसमें किसी प्रकार की कोई ऐसी रोक पैदा हो जाए कि उसके कारण पुरुष उस से संबंध स्थापित न कर सके तो ऐसी हालत में अगर वह तक़्वा (संयम) की दृष्टि से कोई कार्यवाही करे तो बुद्धि के निकट कुछ भी ऐतिराज़ नहीं।

पादरी साहिब! आपका यह प्रश्न कि अगर आज आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जैसा व्यक्ति अंग्रेज़ी सरकार के युग में होता तो सरकार उस से क्या व्यवहार करती?

आपको विदित हो कि अगर वह दोनों लोकों का सरदार

इस सरकार के युग में होता तो यह भाग्यशाली सरकार उनके जूते उठाने को अपना गर्व समझती जैसे कि रोम का बादशाह केवल फोटो देखकर उठ खड़ा हुआ था। आपकी यह मूर्खता और दुर्भाग्य है कि इस सरकार पर ऐसी बद्‌गुमानी रखते हैं कि मानो वह ख़ुदा के अवतारों की दुश्मन है। यह सरकार इस युग में छोटे-छोटे मुसलमान लीडरों का सम्मान करती है। देखो नसरुल्ला खान जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दासों जैसा भी दर्जा नहीं रखता हमारी तेजस्विनी महारानी क़ैसर: हिन्द (विक्टोरिया) ने उसका कैसा सम्मान किया। फिर वह महामान्य पवित्र अस्तित्व रखने वाला जिसका इस संसार में वह स्थान था कि बादशाह उसके चरणों पर गिरते थे अगर वह इस समय में होता तो यह सरकार नि:सन्देह उससे सेवा और आवभगत का व्यवहार करती। ख़ुदा की सरकार के आगे इन्सानी सरकारों को विनय और विनम्रता के अतिरिक्त कुछ नहीं बन पड़ता। क्या आपको ज्ञात नहीं कि क़ैसर रोम जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में ईसाई बादशाह था और इस सरकार से प्रताप में कुछ कम न था। वह कहता है कि यदि मुझे यह सौभाग्य प्राप्त होता कि मैं उस महान नबी की संगति में रह सकता तो मैं उनके पाँव धोया करता। अत: जो रोम के बादशाह ने कहा नि:सन्देह यह भाग्यवान सरकार भी वही बात कहती, अपितु इससे बढ़कर कहती। यदि हज़रत मसीह के बारे में उस समय के किसी छोटे से जागीरदार ने भी यह बात कही हो जो रोम के बादशाह ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में कही थी जो आज तक प्रमाणित इतिहास और हदीसों में मौजूद है, तो हम आपको अभी एक हज़ार रुपया नकद इनाम के तौर पर देंगे यदि आप सिद्ध कर सकें और यदि

आप यह प्रमाण न दे सकें तो इस लज्जाजनक ज़िन्दगी से आपके लिए मरना अच्छा है क्योंकि हमने सिद्ध कर दिया कि रोम का बादशाह इस शक्तिशाली सरकार के समतुल्य था। अपितु इतिहास से ज्ञात होता है कि उस युग में उसकी शक्ति के बराबर दुनिया में और कोई शक्ति मौजूद न थी, हमारी सरकार तो उस दर्जे तक नहीं पहुँची। फिर जब क़ैसर[1] राजा होते हुए आह भर कर यह बात कहता है कि अगर मैं उस महामान्य की सेवा में पहुँच सकता तो उस पवित्रात्मा के पाँव धोया करता तो क्या यह सरकार उससे कम सम्मान करती। मैं दावे से कहता हूँ कि अवश्य यह सरकार भी ऐसे महान नबी के पाँव में गिरना अपना गर्व समझती। क्योंकि यह गवर्नमेन्ट उस आसमानी बादशाह की इन्कारी नहीं जिसकी ताक़तों के आगे इन्सान एक मरे हुए कीड़े के समान भी नहीं। हमने एक विश्वस्त सूत्र से सुना है कि हमारी महारानी विक्टोरिया वास्तव में इस्लाम से प्रेम रखती है और उसके दिल में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बड़ा सम्मान है। अतः एक मुसलमान विद्वान से वह उर्दू भी पढ़ती है। उनकी ऐसी प्रशंसाओं को सुनकर मैंने इस्लाम की ओर एक विशेष सन्देश से महारानी विक्टोरिया को संबोधित किया था। अतः यह बहुत बड़ी ग़लती है कि आप लोग इस मर्तबा को पहचानने वाली सरकार को भी एक नीच और कमीने पादरी की तरह सोचते हैं। जिनको ख़ुदा राजपाट और धन दौलत देता है उनको विवेक और बुद्धि भी देता है। हाँ अगर यह प्रश्न प्रस्तुत हो कि यदि कोई ऐसा व्यक्ति इस सरकार के साम्राज्य में यह शोर मचाता है कि मैं ख़ुदा हूँ या ख़ुदा का बेटा हूँ तो सरकार उसका निवारण क्या करती? तो इसका

1. रोम का बादशाह

उत्तर यही है कि यह दयालु सरकार उसको किसी डाक्टर के सुपुर्द करती ताकि उसके दिमाग का उपचार हो या उस बड़े घर में क़ैद रखती जैसा कि लाहौर में इस प्रकार के बहुत से लोग एकत्र हैं।

जब हम हज़रत मसीह और जनाब हज़रत ख़ात्मुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस बात पर तुलना करते हैं कि तत्कालीन सरकारों ने उनके साथ क्या व्यवहार किया और कितना उनके ख़ुदाई रौब और समर्थन ने असर दिखाया तो हमें स्वीकार करना पड़ता है कि हज़रत मसीह में हज़रत खात्मुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तुलना में खुदाई तो क्या नुबुव्वत की शान भी नहीं पाई जाती। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेश बादशाहों के नाम जारी हुए तो रोम के बादशाह ने आह भरकर कहा कि मैं तो ईसाइयों के पंजे में फँसा हुआ हूँ। काश यदि मुझे इस जगह से निकलने की गुंजाइश होती तो मैं इस पर अपना गर्व समझता कि सेवा में हाज़िर हो जाऊँ और ग़ुलामों की तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पाँव धोया करूँ। परन्तु ईरान के एक गन्दे और नापाक दिल बादशाह किसरा के गवर्नर ने गुस्से में आकर आपके पकड़ने के लिए सिपाही भेज दिए। वे शाम के समय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुँचे और कहा कि हमें आपको गिरफ्तार करने का आदेश है। आपने उस व्यर्थ बात से मुँह फेरते हुए कहा कि तुम इस्लाम स्वीकार करो। उस समय आप केवल दो-चार सहाबियों के साथ मस्जिद में बैठे थे परन्तु ख़ुदाई रौब के कारण वे दोनों बेंत की लकड़ी की तरह काँप रहे थे। अन्ततः उन्होंने कहा कि हमारे खुदावन्द के आदेश अर्थात गिरफ्तारी के संबंध में श्रीमान का क्या उत्तर है ताकि

हम उत्तर ही ले जाएँ। हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा कि इसका उत्तर तुम्हें कल मिलेगा। प्रातः काल जब वे हाज़िर हुए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा कि जिसे तुम खुदावन्द खुदावन्द कहते हो वह खुदावन्द नहीं है। खुदावन्द वह है जिस पर मौत नहीं आती। परन्तु तुम्हारा खुदावन्द आज रात को मारा गया। मेरे सच्चे खुदावन्द ने उसी के पुत्र शेरविया को उस पर हावी कर दिया है। अतः वह आज की रात उसके हाथ से क़त्ल हो गया है और यही उत्तर है। यह एक बड़ा चमत्कार था। उसको देखकर उस देश के हज़ारों लोग ईमान ले आए, क्योंकि वस्तुतः उसी रात खुसरो परवेज़ अर्थात किसरा जो ईरान का बादशाह था मारा गया था। याद रखना चाहिए कि यह वर्णन इन्जीलों की व्यर्थ और निराधार बातों की तरह नहीं, अपितु प्रभाणित हदीसों और ऐतिहासिक प्रमाणों और विरोधियों की स्वीकारिता से सिद्ध है। अतः ड्यून पोर्ट साहिब ने भी इस वृत्तान्त को अपनी किताब में लिखा है। परन्तु उस समय के बादशाहों के सामने हज़रत मसीह का जो सम्मान था वह आपसे छुपा नहीं। वे पन्ने शायद अब तक इन्जील में मौजूद होंगे जिनमें लिखा है कि हैरोदिस ने हज़रत मसीह को अपराधियों की तरह पिलातूस के पास चालान किया और वे एक लम्बे समय तक सरकारी जेल में रहे। कुछ भी खुदाई रौब ने काम न किया और किसी बादशाह ने यह न कहा कि अगर मैं उसकी सेवा में रहूँ या उसके पाँव धोया करूँ तो मेरा गर्व होगा। अपितु पिलातूस ने यहूदियों के हवाले कर दिया। क्या यही खुदाई थी। बड़ी विचित्र तुलना है दो लोगों पर एक ही प्रकार की घटनाएँ घटीं और दोनों परिणाम की दृष्टि से एक दूसरे से उलट सिद्ध होते हैं। एक व्यक्ति के गिरफ्तार करने को एक अहंकार से

भरे हुए अत्याचारी का शैतान के बहकाने से आग बबूला होना और स्वयं अन्तत: ख़ुदा की ला'नत में गिरफ्तार होकर अपने पुत्र के हाथ से बड़े अपमान के साथ क़त्ल किया जाना और एक दूसरा इन्सान जिसके अपने असली दावों को छोड़कर अतिशयोक्ति करने वालों ने आसमान पर चढ़ा रखा है उसका सचमुच गिरफ़्तार हो जाना, चालान किया जाना और अजीब तरह से अत्याचारी पुलिस की जेल में एक शहर से दूसरे शहर में स्थानान्तरित किया जाना.... खेद है कि यह बौद्धिक विकास का युग और ऐसी व्यर्थ आस्थाएँ। शर्म! शर्म! शर्म।

यदि यह कहो कि किस किताब में लिखा है कि क़ैसर-ए-रोम ने यह इच्छा की थी कि यदि मैं महामान्य नबी पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुँच सकता तो मैं एक तुच्छ सेवक बनकर पैर धोया करता। इसके उत्तर में आपके लिए क़ुरआन शरीफ के बाद दूसरी सर्वमान्य किताब बुखारी शरीफ की इबारत लिखता हूँ ज़रा आँखें खोल कर पढ़ो और वह यह है :-

وقد كنت اعلم انه خارج ولم اكن اظن انه منكم فلو انى اعلم انى اخلص اليه لتجشمت لقاءه ولو كنت عنده لغسلت عن قدميه

अर्थात यह तो मुझे ज्ञात था कि अन्तिम युग का नबी आने वाला है परन्तु मुझे यह पता नहीं था कि वह तुम में से ही (हे अरब वालो) पैदा होगा। अत: यदि मैं उसकी सेवा में पहुँच सकता तो मैं बहुत ही प्रयत्न करता कि उसका दर्शन मुझे प्राप्त हो और अगर मैं उसकी सेवा में होता तो मैं उसके पाँव धोया करता। अब अगर कुछ स्वाभिमान और शर्म है तो मसीह के लिए यह सम्मान किसी बादशाह की ओर से जो उस काल में था प्रस्तुत करो और नक़द एक हज़ार रुपया हम

से लो और कोई आवश्यक नहीं कि इन्जील से ही प्रस्तुत करो अपितु चाहे कूड़े के ढेर में पड़ा हुआ कोई पन्ना ही दिखा दो और अगर कोई बादशाह या अमीर (मुखिया) नहीं तो कोई छोटा सा नवाब ही प्रस्तुत कर दो और याद रखो कि कभी भी प्रस्तुत न कर सकोगे। अतः यह दुःख भी नर्क के दुःख से कुछ कम नहीं कि स्वयं ही बात को उठाकर स्वयं ही दोषी ठहर गए। शाबाश! शाबाश! शाबाश! खूब पादरी हो।

मसीह का चाल चलन आपके निकट क्या था एक खाऊ पीऊ, शराबी, न इबादत करने वाला, न सच का पुजारी, घमंडी, स्वार्थी खुदाई का दावा करने वाला। परन्तु उससे पहले और भी कई खुदाई का दावा करने वाले गुज़र चुके हैं। एक मिस्र में ही मौजूद था। दावों को अलग करके कोई सदाचरण की हालत जो वास्तविक रूप से सिद्ध हो तनिक प्रस्तुत तो करो ताकि सच्चाई मालूम हो। किसी की केवल बातें ही उसका शिष्टाचार नहीं कहला सकतीं। आप ऐतिराज़ करते हैं कि वे मुर्तद जो स्वयं खूनी थे और अपने कर्म से दण्डनीय ठहर चुके थे, निर्दयता से क़त्ल किए गए। परन्तु आपको याद न रहा कि इस्राईली नबियों ने तो दूध पीते बच्चे भी क़त्ल किए एक-दो नहीं अपितु लाखों तक नौबत पहुँची, क्या उनकी नुबुव्वत के इन्कारी हो या वह खुदा तआला का आदेश नहीं था या मूसा अलैहिस्सलाम के समय खुदा और था और जनाब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय कोई और खुदा था।

हे अत्याचारी पादरी! कुछ शर्म कर आखिर मरना है। मसीह बेचारा तुम्हारी जगह उत्तरदायी नहीं हो सकता। अपने कर्मों से तुम ही पकड़े जाओगे, उससे कोई पूछताछ न होगी। हे मूर्ख! तू अपने भाई की आंख में तिनका देखता है और

अपनी आँख का शह्तीर क्यों तुझे दिखाई नहीं देता। तेरी आंखें क्या हुईं जो तू अपनी आंखों को देख नहीं सकता।

ज़ैनब के विवाह का वर्णन जिसे आपने अकारण व्यभिचार के आरोप में प्रस्तुत कर दिया है उस पर इसके अतिरिक्त क्या कहें कि :-

بد گہر از خطا خطا نہ کند 1

हे मूर्ख लेपालक की तलाकशुदा पत्नी से विवाह करना व्यभिचार नहीं। केवल मुँह की बात से न कोई बेटा बन सकता है न कोई बाप बन सकता है और न माँ बन सकती है। उदाहरणतया अगर कोई ईसाई ग़ुस्से में आकर अपनी पत्नी को माँ कह दे, तो क्या वह उस पर अवैध हो जाएगी और तलाक हो जाएगी। अपितु वह पूर्वानुसार उसी माँ से व्यभिचार करता रहेगा। अत: जिस व्यक्ति ने यह कहा कि तलाक बिना व्यभिचार के नहीं हो सकती उसने स्वयं स्वीकार कर लिया कि केवल अपने मुँह से किसी को माँ या बाप या बेटा कह देना कुछ चीज़ नहीं अन्यथा वह अवश्य कह देता कि माँ कहने से तलाक हो जाती है। लगता है मसीह को वह अक़्ल न थी जो फ़तह मसीह को है। अब तुम पर अनिवार्य है कि इस बात का प्रमाण इन्जील में से दो कि अपनी पत्नी को माँ कहने से तलाक पड़ जाती है या फिर अपने मसीह की शिक्षा को अपूर्ण मान लो या यह प्रमाण दो कि बाइबल के अनुसार लेपालक वास्तव में बेटा हो जाता है और बेटे की तरह उत्तराधिकारी हो जाता है और अगर कुछ प्रमाण न दे सको तो इसके अतिरिक्त और क्या कहें कि झूठों पर अल्लाह की धिक्कार हो। मसीह भी तुम पर लानत करता है क्योंकि मसीह ने इन्जील में किसी जगह नहीं कहा कि अपनी पत्नी को माँ

1. अनुवाद :- दुष्ट ग़लत काम करने से नहीं चूकता - अनुवादक

कहने से उस पर तलाक़ पड़ जाती है और आप जानते हैं कि यह तीनों बातें एक जैसी हैं। अगर केवल मुँह के कहने से माँ नहीं बन सकती तो फिर बेटा भी नहीं बन सकता और न बाप बन सकता है। अब अगर कुछ शर्म हो तो मसीह की गवाही स्वीकार कर लो या इसका कुछ उत्तर दो और याद रखो कि कदापि नहीं दे सकोगे चाहे सोचते-सोचते मर ही जाओ, क्योंकि तुम झूठे हो और मसीह तुम से विमुख है।

इसके अतिरिक्त आपका यह शैतानी (पैशाचिक) विचार कि खन्दक खोदने के समय चारों नमाज़ें 'क़ज़ा' की गईं। प्रथम आप लोगों की विद्वता तो यह है कि 'क़ज़ा' का शब्द प्रयोग किया है। हे मूर्ख क़ज़ा नमाज़ अदा करने को कहते हैं। नमाज़ छोड़ने का नाम 'क़ज़ा' कदापि नहीं होता। अगर किसी की नमाज़ छूट जाए तो उसका नाम फ़ौत है इसीलिए हमने पाँच हज़ार रुपए का इश्तिहार (घोषणापत्र) दिया था कि ऐसे मूर्ख भी इस्लाम पर ऐतिराज़ करते हैं जिन को अभी तक क़ज़ा का अर्थ भी ज्ञात नहीं। जो व्यक्ति शब्दों को भी यथास्थान प्रयोग नहीं कर सकता वह मूर्ख कब यह योग्यता रखता है कि गंभीर विषयों पर आलोचना कर सके। रहा खन्दक खोदने के समय कि चार नमाज़ों को जमा करके एक साथ पढ़ा गया इस मूर्खतापूर्ण विचार का उत्तर यह है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि धर्म में सख़्ती नहीं अर्थात ऐसी सख़्ती नहीं जो मनुष्य की तबाही का कारण हो इसीलिए उसने ज़रूरतों के समय और मुसीबतों की हालत में नमाज़ों के जमा करने और क़सर करने का आदेश दिया है। परन्तु इस जगह हमारी किसी सर्वमान्य हदीस में चार नमाज़ें जमा करने का वर्णन नहीं। अपितु फ़तहुलबारी शरह बुखारी में लिखा है कि घटना केवल यह हुई थी कि एक नमाज़ अर्थात अस्र की नमाज़ अन्य

दिनों की अपेक्षा देर से पढ़ी गई। अगर आप उस समय हमारे सामने होते तो हम आपको तनिक बिठाकर पूछते कि क्या यह सर्वमान्य हदीस है कि चारों नमाज़ें फौत हो गई थीं। चार नमाज़ें तो स्वयं शरीयत के अनुसार जमा करके पढ़ी जा सकती हैं अर्थात ज़ुहर और अस्र तथा मग़रिब एवं इशा। हाँ एक कमज़ोर रिवायत में है कि ज़ुहर अस्र और मग़रिब इशा इकट्ठी करके पढ़ी गई थीं, लेकिन दूसरी सर्वमान्य हदीसें इसका खण्डन करती हैं और केवल यही सिद्ध होता है कि अस्र की नमाज़ देर से पढ़ी गई थी। आप अरबी ज्ञान से पूर्णत अनभिज्ञ और प्रथम श्रेणी के मूर्ख हैं। ज़रा क़ादियान आओ और हम से मिलो तो फिर आपके आगे किताबें रखी जाएँगी ताकि झूठी और मनगढ़त बात बनाकर कहने वाले को कुछ सज़ा तो हो शर्मिंदगी की सज़ा ही सही हालाँकि ऐसे लोग शर्मिन्दा भी नहीं हुआ करते।

चोरी के माल को आपके मसीह के सामने बुज़ुर्ग हवारियों का खाना अर्थात दूसरे के खेतों की बालियाँ तोड़ना क्या यह सही था। अगर किसी युद्ध में काफ़िरों के बलवे और खतरनाक परिस्थिति के समय अस्र की नमाज़ देर से पढ़ी गई तो इसमें केवल यह बात थी कि दो इबादतों के इकट्ठे होने के समय उस इबादत को प्राथमिकता दी गई जिसमें काफ़िरों के खतरनाक हमले की रोक और आत्मरक्षा एवं क़ौम और देश की उचित और मौक़ा महल के अनुसार रक्षा करनी थी और यह सारी कार्यवाही उस महान व्यक्ति की थी जो शरीयत (धर्म विधान) लाया और यह विल्कुल क़ुरआन करीम के अनुसार थी। ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى (النجم، آيت:4-5)

अर्थात नबी की हर एक बात ख़ुदा तआला के आदेश

से होती है। नबी का युग शरीयत (धर्म विधान) के अवतरित होने का युग होता है और शरीयत वही ठहर जाता है जो नबी कर्म करता है अन्यथा जो-जो कार्यवाहियाँ मसीह ने तौरात के विपरीत की हैं यहाँ तक कि सब्त की भी परवाह न की और खाने पर हाथ न धोए वे सब मसीह को दोषी ठहराते हैं। ज़रा तौरात से उन सब का प्रमाण तो दो। मसीह पतरस को शैतान कह चुका था फिर अपनी बात क्यों भूल गया और शैतान को हवारियों में क्यों सम्मिलित रखा।

फिर आपका ऐतिराज़ है कि बहुत सी औरतों और दासियों को रखना यह दुराचार है। हे मूर्ख! हज़रत दाऊद नबी अलैहिस्सलाम की पत्नियाँ तुझ को याद नहीं जिसकी प्रशंसा किताब-ए-मुक़द्दस में है क्या वह मरते दम तक व्यभिचार करता रहा। क्या उसी व्यभिचार की यह पवित्र नस्ल है जिस पर तुम्हें भरोसा है। जिस ख़ुदा ने ओरिया की पत्नी के बारे में दाऊद को दण्ड दिया। क्या वह दाऊद के उस अपराध से अनभिज्ञ रहा जो मरते दम तक उससे होता रहा अपितु ख़ुदा ने उसकी छाती गर्म करने को एक और लड़की भी उसे दी और आपके ख़ुदा की गवाही मौजूद है कि दाऊद ओरिया के क़िस्से के अतिरिक्त अपने समस्त कामों में सदाचारी है। क्या कोई बुद्धिमान मान सकता है कि अगर अधिक पत्नियाँ रखना ख़ुदा की दृष्टि में बुरा था तो ख़ुदा इस्राईली नबियों को जो अधिक पत्नियाँ रखने में सबसे बढ़कर एक नमूना हैं उनको एक बार भी इस काम पर दण्डित न करता। इसलिए यह घोर अन्याय है कि जो बात ख़ुदा के पहले नबियों में मौजूद है और ख़ुदा ने उसे आपत्तियोग्य नहीं ठहराया, अब शरारत और दुष्टता से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के संबंध में आपत्तियोग्य ठहराया जाए। अफसोस ये लोग ऐसे

निर्लज्ज हैं कि इतना भी नहीं सोचते कि अगर एक से अधिक पत्नी रखना व्यभिचार है तो हज़रत मसीह जो दाऊद की सन्तान कहलाते हैं उनकी पवित्र पैदाइश के बारे में एक बड़ा सन्देह पैदा होगा और कौन सिद्ध कर सकेगा कि उनकी बड़ी नानी हज़रत दाऊद की पहली ही पत्नी थी।

फिर आप हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि. का नाम लेकर ऐतिराज़ करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का शरीर से शरीर लगाना और ज़ुबान चूसना शरीयत के विपरीत था। अब इस अपवित्र द्वेष पर कहाँ तक रोएं। हे मूर्ख! जो हलाल और जाइज़ निकाह हैं उनमें यह सब बातें जाइज़ होती हैं। यह ऐतिराज़ कैसा है क्या तुम्हें मालूम नहीं कि पौरुष और कामशक्ति मनुष्य के प्रशंसनीय गुणों में से है। हिजड़ा होना कोई अच्छा गुण नहीं। जैसे मूक और बधिर होना कोई विशेषता नहीं। हाँ यह ऐतिराज़ बहुत बड़ा है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पौरूष गुणों की सर्वश्रेष्ठ विशेषता से रहित होने के कारण पत्नियों से परस्पर सच्चे और पूर्ण मेल-मिलाप का कोई व्यवहारिक आदर्श प्रस्तुत न कर सके। इसलिए यूरोप की औरतें अत्यन्त लज्जाजनक आज़ादी से फ़ायदा उठाकर संयम की हद से इधर-उधर निकल गईं और अन्ततः न वर्णन करने योग्य दुराचार तक नौबत पहुँची।

हे मूर्ख! मानवीय प्रकृति और उसकी सच्ची और पवित्र मनोभावना से अपनी पत्नियों से प्रेम करना और परस्पर मेल मिलाप में हर प्रकार की जाइज़ चीज़ों को प्रयोग में लाना, मनुष्य की प्राकृतिक और आतुर विशेषता है। इस्लाम धर्म के संस्थापक ने उसे किया और अपने अनुयायियों को एक आदर्श प्रस्तुत किया। मसीह ने अपनी शिक्षाओं में त्रुटि के कारण अपने उपदेशों और आदर्शों में यह कमी रख दी।

लेकिन चूँकि यह स्वाभाविक इच्छा थी इसलिए यूरोप और ईसाइयत ने स्वयं इसके लिए क़ानून बनाए। अब तुम स्वयं न्यायपूर्वक देख लो कि गन्दा कुकर्म और पूरा देश का देश रंडियों का नापाक चकला बन जाना, हाईड पार्को में हज़ारों हज़ार का खुले आम कुत्तों और कुतियों की तरह ऊपर-तले होना और अन्ततः इस अनुचित आज़ादी से तंग आकर रोना चिल्लाना और वर्षों भड़वेपन (निर्लज्जताओं) और कुकर्मों की मुसीबतें झेलकर अन्त में तलाक का कानून पास कराना, यह किस बात का परिणाम है? क्या यह उस पवित्र और दूसरों को पवित्रता सिखाने वाले नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वैवाहिक जीवन के उस आदर्श का परिणाम है जिस पर आप अपनी नीच आदत के जोश में आकर ऐतिराज़ करते हैं? और क्या इस्लामी राज्यों में यह दुर्गन्धपूर्ण और विषैली हवा फैली हुई है या एक अत्यन्त त्रुटिपूर्ण और अक्षम किताब पोलूसी इन्जील की अस्वाभाविक और अधूरी शिक्षा का यह प्रभाव है। अब आराम से बैठकर सोचो और फल के दिन का नक्शा खींचकर सोचो।

हाँ मसीह की दादियों और नानियों के बारे में जो ऐतिराज़ है उसका उत्तर भी कभी आपने सोचा है? हम तो सोचकर थक गए अब तक कोई बढ़िया उत्तर सोच में नहीं आया। क्या ही बढ़िया खुदा है जिसकी दादियाँ और नानियाँ इस कमाल की हैं आप याद रखें कि हम आपके कथनानुसार मर्दे मैदान बनकर ही किताब लिखेंगे और आप को भी दिखाएँगे कि भ्रमों का समूल नष्ट करना इसे कहते हैं। उस मूर्ख पथभ्रष्ट को पराजित करना कौन सी बड़ी बात है जो मनुष्य को ख़ुदा बनाता है। आप कृपा करके उन कतिपय प्रश्नों का अवश्य उत्तर लिखें जो मैंनें पूछा है और

इन शब्दों से आप रुष्ट न हों जो लिखे गए हैं क्योंकि शब्द दशा, यथास्थान तथा आपकी प्रतिष्ठा के अनुसार हैं। जिस हालत में आपने अनभिज्ञता और मूर्खता के बावजूद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जो समस्त पवित्रात्माओं के सरदार हैं व्यभिचार का आरोप लगाया है तो उस गन्दे झूठ और मनगढ़त आरोप का यही उत्तर था जो आपको दिया गया। हमने बहुत चाहा कि आप लोग भलेमानुष बन जाएँ और गालियाँ न दिया करें पर आप लोग नहीं मानते। आप अकारण मुसलमानों का दिल दु:खाते हैं आप नहीं जानते कि हमारे निकट वह मूर्ख हर एक व्यभिचारी से भी बुरा है जो इन्सान के पेट से निकलकर ख़ुदा होने का दावा करे। अगर आप लोग मसीह के शुभचिन्तक होते तो हम से नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में शिष्टतापूर्वक वार्तालाप करते। एक सहीह हदीस में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम अपने बाप को गाली मत दो, लोगों ने पूछा कि क्या कोई बाप को भी गाली देता है। तो आपने कहा हाँ, जब तू किसी के बाप को गाली देगा तो वह अवश्य तेरे बाप को भी गाली देगा। तब वह गाली उसने नहीं दी अपितु तूने दी है। इसी तरह आप लोग चाहते हैं कि आपके डरपोक झूठे ख़ुदा की भी अच्छी तरह भगत सँवारी जाए। अब हम यह पत्र नोटिस के तौर पर आपको भेजते हैं कि यदि फिर ऐसे अपशब्द आपने प्रयोग किए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर गन्दा आरोप लगाया तो हम भी आपके झूठे और बनावटी ख़ुदा की वह खबर लेंगे कि जिससे उसकी सारी खुदाई अपमान की गन्दगी में जा गिरेगी।

हे मूर्ख! क्या तू अपने पत्र में नबियों के सरदार

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर व्यभिचार का आरोप लगाता है और दुराचारी ठहराता है और हमारा दिल दुखाता है। हम किसी अदालत में नहीं जाते और न जाएँगे, परन्तु भविष्य के लिए समझाते हैं कि ऐसी गन्दी बातें करना छोड़ दो और ख़ुदा से डरो जिसकी ओर लौटकर जाना है और हज़रत मसीह को भी गालियाँ मत दो। निःसन्देह जो कुछ तुम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में बुरा कहोगे वही तुम्हारे बनावटी मसीह को कहा जाएगा परन्तु हम उस सच्चे मसीह को पवित्र और महान जानते और मानते हैं जिसने न ख़ुदाई का दावा किया और न बेटा होने का और जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आने की शुभ सूचना दी और उन पर ईमान लाया। इति

अमृतसर के मौलवियों की इस्लामी सहानुभूति

अमृतसर के मौलवी साहिबान जो छः सात आदमी से अधिक नहीं अर्थात मौलवी अब्दुल जब्बार साहिब ग़ज़नवी, मौलवी सनाउल्लाह साहिब अमृतसरी, मौलवी ग़ुलाम रसूल साहिब अमृतसरी, मौलवी अहमदुल्लाह साहिब इत्यादि साहिबों ने उस प्रार्थनापत्र पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया जो गवर्नमेन्ट में धारा 298 ताज़ीराते हिन्द के विस्तार और दो शर्तों के पास कराने के उद्देश्य से भेजा जाएगा और बेतुका विरोध करके सिद्ध कर दिया कि वे किस तरह इस्लाम के पक्के दुश्मन और इस्लामी भलाइयों के घोर विरोधी हैं। मैंने सुना है कि अधिकतर मुसलमानों को इनकी इस व्यर्थ हरकत से बहुत ही दुःख हुआ है और अधिकतर लोगों ने बहुत लान-

तान भी की, कि ये कैसे मौलवी और कैसे मुसलमान हैं जिन्होंने केवल अपने एक आन्तरिक विवाद के कारण उस सीधी सच्ची और अत्यन्त यथोचित तहरीर से विमुखता प्रकट की, जिसमें सरासर इस्लाम की भलाई थी और जिससे भविष्य के लिए उस गाली गलौज और व्यर्थ आरोप और गन्दी गालियों का जो झूठे और बकवासी आर्य और पादरी हमारे पैग़म्बर ख़ात्मुर्रुसुल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देते हैं, दरवाज़ा बन्द हो जाता था। लेकिन मौलवी साहिबों के इश्तिहार से पता चलता है कि वे पादरी साहिबों और आर्यों को गालियाँ देने और धर्म का अपमान करने में बिल्कुल निर्दोष ठहराते हैं और ये सारे आरोप इस विनीत पर लगाते हैं कि सर्व प्रथम इस विनीत ने उनके बुज़ुर्गों को गालियाँ दीं और फिर विवशतापूर्वक उन भोले भालों को भी कुछ कहना पड़ा। अतः यह आरोप यदि कुछ पोशीदा और ध्यान देने योग्य होता तो हम इसको पूर्णतः खोलकर और विस्तार से उत्तर देते परन्तु ऐसे सफेद झूठ का क्या उत्तर दें जिसमें लेशमात्र भी सच्चाई नहीं। हम बड़े आश्चर्य में हैं कि इतने बड़े झूठ का क्या नाम रखें, बेईमानी रखें या नीचता कहें या ईर्ष्या-द्वेष से भरा हुआ उन्माद ठहराएं क्या कहें?!! इस बात को कौन नहीं जानता कि हिन्दुस्तान और पंजाब में कम से कम 45 वर्ष से यह अत्याचार हो रहे हैं। हमारे सैयद व मौला हज़रत खात्मुल अंबिया समस्त शुद्धात्माओं के सरदार और सब अगलों और पिछलों से श्रेष्ठ मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इतनी गालियां दी गई हैं और इतना क़ुरआन करीम को व्यर्थ हँसी और ठट्ठे का निशाना बनाया गया है कि संसार में किसी नीच से नीच इन्सान के लिए भी किसी व्यक्ति ने यह शब्द प्रयोग नहीं किए। यह किताबें कुछ एक दो नहीं बल्कि हज़ारों

तक नौबत पहुँच चुकी है और जो व्यक्ति इन किताबों के लेख को पढ़कर और समझकर अल्लाह और उसके पवित्र रसूल के लिए कुछ भी ग़ैरत नहीं रखता वह एक लानती आदमी है न कि मौलवी और एक सूअर है न कि इन्सान।

स्मरण रहे कि इन में बहुत सी ऐसी किताबें हैं जो मेरी युवावस्था के दिनों से भी पहले की हैं और कोई सिद्ध नहीं कर सकता कि इन किताबों के लिखने का यह कारण था कि मैं या किसी अन्य मुसलमान ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को गालियाँ दी थीं जिससे उत्तेजित होकर पादरी फण्डल और सफ़दर अली और पादरी ठाकुरदास और इमामुद्दीन और पादरी विलयम्स रेवारी ने वे किताबें लिखीं कि यदि उनकी गालियाँ और धृष्टताएँ एकत्र की जाएँ तो उससे सौ जिल्द की किताब बन सकती हैं। इसी तरह कोई इस बात का भी प्रमाण नहीं दे सकता कि जितनी ग़ालियाँ और धृष्टताएँ पंडित दयानन्द ने अपनी किताब सत्यार्थ प्रकाश में हमारे सैयद व मौला नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दीं और इस्लाम धर्म का अपमान किया ये किसी ऐसी भड़काऊ बातों के कारण था जो हमारी ओर से हुआ था। इसी तरह आर्यों में से लेखराम इत्यादि जो अब तक गन्दी किताबें छाप रहे हैं उसका मूल कारण कदापि यह नहीं है कि हमने वेद के ऋषियों को गालियाँ दी थीं बल्कि यदि हमने कुछ वेद के बारे में बराहीन में लिखा तो बड़ी ही शिष्टतापूर्ण शैली में लिखा और उस समय लिखा गया कि जब दयानन्द अपने सत्यार्थ प्रकाश में और कन्हैयालाल अलखधारी लुधियानवी अपनी किताबों में और इन्द्रमन मुरादाबादी अपनी अशिष्ट पुस्तकों में हज़ारों गालियाँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दे चुके थे और उनकी किताबें प्रकाशित हो चुकी थीं और कई दुर्भाग्यशाली

और आंखों के अन्धे मुसलमान आर्य बन चुके थे और इस्लाम से अत्यन्त ठट्ठा किया गया था, फिर भी हमने बराहीन में शिष्टता को हाथ से न जाने दिया। यद्यपि हमारा दिल दुखाया गया और बहुत ही द:ुखाया गया। परन्तु हमने अपनी किताब में कदापि झूठ और कटुकता नहीं अपनाई और जो घटनाएँ वास्तव में यथातथ्य और यथास्थान थीं वही वर्णन कीं। हम आर्यों की गालियों के मुक़ाबले में वेदों के ऋषियों को क्योंकर गालियाँ देते। हमें तो अब तक भी यह पता नहीं लगा कि वेदों के ऋषियों का कुछ अस्तित्व भी था या नहीं और कहाँ थे और किस शहर में रहते थे और उनके जीवन की परिस्थितियों क्या थीं? और उनके जीवन-यापन का सिलसिला किस तरह का था? फिर हम कैसे उनकी आलोचना करते? हमें अब तक उनके अस्तित्व में ही सन्देह है और हमारा यही मत है कि अग्नि और वायु और अदिति इत्यादि जो वेद के ऋषि समझे जाते हैं यह केवल मनगढ़त और कल्पित नाम हैं और हम बिल्कुल इस बात को नहीं जानते कि यह लोग कौन थे? यदि उनका कुछ भी भौतिक अस्तित्व होता तो अवश्य उनकी जीवनी लिखी जाती। वेद के संकलनकर्ता वही मालूम होते हैं जिनके नाम सूक्तों के प्रारम्भ में मौजूद हैं फिर हम ऐसे गुप्त और लुप्त ऋषियों को किस तरह गालियाँ दे सकते थे। इस्लाम का नियम गाली देना नहीं है परन्तु हमारे मुख़ालिफ़ों ने अकारण गालियों से भरी हुई इतनी किताबें लिखी हैं कि यदि उनका एक जगह ढेर लगाया जाए तो उनकी ऊँचाई हज़ार फुट तक पहुँच सकती है और अभी तक रुकने का नाम नहीं लेते। हर महीने हज़ारों पत्रिकाएँ, किताबें और अख़बार गाली गलौज और अपमान से भरे हुए निकलते हैं। अत: हमें इन मौलवियों की हालत पर अफसोस तो यही है कि ऐसे मौलवी

जो कहते हैं कि जो कुछ होता है होता रहे कोई हर्ज नहीं। यदि उनकी माँ को कोई ऐसी गाली दी जाती जो हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दी जाती है या उनके बाप पर वह आरोप लगाया जाता जो नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर लगाया जाता है तो क्या ये ऐसे ही चुप बैठे रहते, कदापि नहीं बल्कि तुरन्त अदालत तक पहुँचते और जहाँ तक बस चलता कोशिश करते कि ऐसे दुराचारी व्यक्ति को इसका दण्ड मिले परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रतिष्ठता उनके निकट कुछ चीज़ नहीं। आश्चर्य की बात है कि विरोधियों की ओर से तो अब तक इस्लाम के खण्डन और अपमान में छः करोड़ किताबें लिखी जा चुकीं और गाली गलौज की कोई सीमा न रही और ये लोग कहते हैं कि कुछ हर्ज नहीं, होने दो जो कुछ होता है। निकट है कि इन गालियों से आसमान टुकड़े-टुकड़े हो जाए, परन्तु इन मौलवियों को कुछ परवाह नहीं। खेद है ऐसे इस्लाम और मुसलमानी पर कि कहते हैं कि कुछ भी हर्ज नहीं। हज़ारों आदमी इन झूठे आरोपों को सुनकर इस्लाम से मुर्तद हो गए परन्तु इनके विचार में अभी किसी सुव्यवस्था की आवश्यकता नहीं। हे खुदा यह लोग क्यों अन्धे हो गए मुझे कुछ कारण मालूम नहीं होता क्यों बहरे हो गए मुझे कुछ भी पता नहीं लगता। हे सर्वशक्तिमान खुदा! हे मुस्तफा के धर्म के सहायक! तू इनके दिलों के कोढ़ को दूर कर इनकी आंखों को रोशनी दे, कि तू जो चाहता है करता है, तेरे आगे कोई बात अनहोनी नहीं। हम तेरी रहमतों पर भरोसा रखते हैं तू कृपा करने वाला और सामर्थ्यवान है।

प्रिय पाठको! एक और अजूबा भी सुनो कि यह लोग अपने इश्तिहार में लिखते हैं कि इस प्रकार का क़ानून पास

करना कि कोई व्यक्ति किसी धर्म पर ऐसा ऐतिराज़ न करे जो स्वयं उस पर होता हो यह केवल हमें पकड़वाने के लिए है। हे अत्याचारी मौलवियो! तुम विश्वास रखो कि हम तुम्हारे झूठ और आरोप लगाने के कारण तुम पर कदापि नालिश नहीं करेंगे यहाँ तक इस दुनिया से गुज़र जाएँगे। लेकिन ख़ुदा के वास्ते अपनी खियानतों से इस्लाम पर अत्याचार मत करो। यह बात पूर्णतया सत्य है कि इस्लाम पर ईसाई धर्म और दूसरों की ओर से जितने ऐतिराज़ हो रहे हैं वे आरोप उनकी किताबों पर भी पड़ते हैं। इसलिए स्पष्ट है कि यदि कानून का डर बीच में रहेगा तो ऐसे ऐतिराज़ भविष्य में खत्म हो जाएँगे और जो पहले कर चुके उनकी पोल खुल जाएगी और इस तरह से इस्लाम का चमकदार चेहरा सब को दिखाई देने लगेगा और सारे धोखा देने वालों के षड़यन्त्र धूल में मिल जाएँगे। इसलिए तुम सच को मत छुपाओ। बेईमानी मत करो, उससे डरो जिसका प्रकोप एक भस्म कर देने वाली आग है।

मैंने आप लोगों की यह बात भी सुनी है कि हम क्या हस्ताक्षर करें अब्दुल्लाह आथम के बारे में हम बहुत ही शर्मिन्दा हैं। इसका हम इसके अतिरिक्त और क्या उत्तर दें कि वास्तव में आप लोग आथम की भविष्यवाणी के बारे में बहुत ही शर्मिन्दा हैं आपका कुछ बाक़ी नहीं रहा। हम मानते हैं कि यह बिल्कुल सत्य है कि आपकी उस भविष्यवाणी से नाक कट गई और आपकी अत्यन्त शर्मिन्दगी हुई, परन्तु हमें अब तक मालूम नहीं कि इस शर्मिन्दगी और नाक कटने का आपके निकट कारण क्या है। हाँ भविष्यवाणी की बातों और आप लोगों की हठधर्मी पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि यह शर्मिन्दगी वस्तुतः दो कारणों से है और तीसरा कोई कारण

नहीं।

प्रथम यह कि आप लोगों के दिल में यह बहुत बड़ी चोट लगी कि आथम ने अपनी करनी और कथनी और स्वयं अपने इक़रार से भविष्यवाणी का सच्चा होना सिद्ध कर दिया और क़सम खाने से इन्कार करके भविष्यवाणी की उस शर्त की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया जिसमें स्पष्ट तौर पर लिखा गया था कि अगर सत्य की तरफ झुकेगा तो यह अज़ाब उस पर नहीं पड़ेगा। अत: अगर इस बात के सोचने से शर्मिन्दगी हुई है कि आप लोगों के विरुद्ध अर्थात ईसाइयों पर ऐसा अकाट्य और निर्णायक तर्क प्रस्तुत किया गया कि वे मुँह नहीं दिखा सकते तो नि:सन्देह आपकी हालत दयनीय है बल्कि हमें तो आश्चर्य है कि आप लोग इस सदमा से मर क्यों न गए। क्योंकि यह सदमा भी कुछ थोड़ा सदमा नहीं कि आथम आप लोगों के प्रेरित करने के बावजूद क़सम खाकर अपनी सफाई न दे सका और अब तक मुर्दे की तरह बैठा है। नि:सन्देह यह शर्मिन्दगी का स्थान था। आप लोग विवश हैं और फिर किताब ज़ियाउलहक़ ने प्रकाशित होकर और भी आपके सिर पर धूल डाली।

दूसरा कारण आपके शर्मिन्दा होने का यह भी मालूम होता है कि जिन तीन हमलों का आथम ने दावा किया था कि मानो वह उनके कारण डरता रहा न कि भविष्यवाणी के इस्लामी रौब से। उन तीन हमलों को न आथम अब तक सिद्ध कर सका और न आप लोग सिद्ध कर सके। इसलिए पूरी स्पष्टता से यह सिद्ध हो गया कि आथम ने इस्लामी भविष्यवाणी से अत्यन्त डर कर और सत्य का एक बड़ा प्रभाव अपने दिल में डालकर ख़ुदा की ओर झुकने की शर्त को पूरा कर दिया। फिर क्यों आप लोग शर्मिन्दा न हों

बल्कि जितना भी शर्मिन्दा हों वह थोड़ा है। आप लोग तो मर गए, नाक कट गई, क्या बाकी रहा?

पादरी फ़तह मसीह द्वारा किए गए अन्य ऐतिराज़ जिनको उन्होंने दूसरे पत्र में लिखा

एक यह ऐतिराज़ है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीन जगह झूठ बोलने की आज्ञा दी है और अपने धर्म को छुपा लेने के लिए क़ुरआन में स्पष्ट आदेश दिया है। परन्तु इन्जील ने ईमान को छुपाने का आदेश नहीं दिया।

उत्तर - स्पष्ट हो कि सच बोलने के लिए क़ुरआन शरीफ में जितनी सख़्ती से आदेश है कि मैं कदापि सोच नहीं कर सकता कि इन्जील में उसका सौवाँ भाग भी हो। लगभग 20 वर्ष का समय बीत गया कि मैंने इसी बारे में एक घोषणापत्र दिया था और क़ुरआन की आयतें लिखकर और ईसाइयों इत्यादि को एक बड़ी रक़म इनाम के तौर पर देने का वादा करके इस बात का वादा किया था कि जिस तरह इन आयतों में सच बोलने का सख्ती से आदेश है। अगर कोई ईसाई इस ज़ोर शोर का आदेश इन्जील में से निकालकर दिखा दे तो इतना इनाम उसको दिया जायेगा। परन्तु पादरी साहिबान अब तक ऐसे चुप रहे कि मानो उनमें जान नहीं, अब एक लम्बा समय बीतने के बाद फतह मसीह साहिब कफ़न में से बोले। शायद एक लम्बा समय बीत जाने के कारण हमारा वह घोषणापत्र उनको याद नहीं रहा। पादरी साहिब आप कूड़ा करकट को सोना बनाना चाहते हैं और सोने की खान से मुँह मोड़कर इधर-उधर भागते हैं अगर यह दुर्भाग्य नहीं तो

और क्या है? क़ुरआन शरीफ ने झूठ को मूर्तिपूजा के समान ठहराया है। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है :-

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ

(الحج، آیت:13)

अर्थात मूर्तिपूजा और झूठ की गंदगी से बचो।

फिर एक जगह फ़रमाता है :-

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ **(النسآ، آیت:136)**

अर्थात हे ईमान वालो! न्याय और सत्य पर क़ायम हो जाओ और सच्ची गवाहियों को अल्लाह के लिए अदा करो, चाहे तुम्हारे प्राण ही चले जाएँ या तुम्हारे माँ-बाप या रिश्तेदारों को उन गवाहियों से हानि उठानी पड़े।

अब हे ख़ुदा से निडर व्यक्ति! ज़रा इन्जील को खोल और हमें बता कि सच बोलने के लिए ऐसा सख्त आदेश इन्जील में कहाँ है? यदि इन्जील में ऐसा सख्त आदेश होता तो पतरस जो पहले दर्जे का हवारी था, झूठ क्यों बोलता और क्यों झूठी क़सम खाकर और हज़रत मसीह पर लानत डाल कर फिर जाता कि मैं इसको नहीं जानता। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा केवल सच बोलने के कारण शहीद होते रहे और ख़ुदाई गवाही को उन्होंने कभी न छुपाया यहाँ तक कि उनके खून से धरती लाल हो गई। परन्तु इन्जील से सिद्ध है कि स्वयं आपके यीशू साहिब ही उस गवाही[1] को छुपाते रहे हैं जिसका उजागर करना उनका कर्तव्य था और वह ईमान भी दिखा न सके जो मक्का में मुसीबतों के समय आँहज़रत

1. देखो मती अध्याय 16 आयत 20,
   (तब यीशू ने शिष्यों को आदेश दिया कि किसी को मत बताओ कि मैं ही ''मसीह हूँ''। - अनुवादक)

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा ने दिखाया था। आशा है कि आप इसका इन्कार नहीं करेंगे और अगर ख़ियानत के तौर पर इन्कार भी कर दिया तो वे समस्त स्थान हम दिखा देंगे अभी यह केवल उदाहरण के तौर पर प्रमाण में लिखा गया है।

फिर आप लिखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीन जगह झूठ बोलने की आज्ञा दी है परन्तु यह आपको अपनी मूर्खता के कारण ग़लती लगी है। सच्ची बात यही है कि किसी हदीस में झूठ बोलने की कदापि इजाज़त नहीं है। अपितु हदीस में तो यह शब्द हैं कि :-

اِنْ قُتِلْتَ وَاُحْرِكْتَ

अर्थात सच को मत छोड़ चाहे तू क़त्ल किया जाए या जलाया जाए। जब क़ुरआन यह कहता है कि तुम न्याय और सच को मत छोड़ो चाहे तुम्हारे प्राण भी उससे चले जाएँ और हदीस यह कहती है कि चाहे तुम जलाए जाओ या क़त्ल किए जाओ परन्तु सच ही बोलो फिर इस आदेश के अनुसार यदि कोई हदीस क़ुरआन और सर्वमान्य हदीसों के विपरीत हो तो वह सुनने योग्य नहीं होगी क्योंकि हम लोग उसी हदीस को स्वीकार करते हैं जो सर्वमान्य हदीसों और क़ुरआन करीम के विपरीत न हो। हाँ कुछ हदीसों में तौरिय:[1] वैध होने की ओर संकेत पाया जाता है और नफरत दिलाने के उद्देश्य से उसी को झूठ के नाम से नामित किया गया है। सम्भव है कि एक जाहिल और मूर्ख जब ऐसा शब्द किसी हदीस में अनेकार्थ के रूप में लिखा हुआ पाए तो उसको पक्का झूठ ही समझ ले क्योंकि वह उस अटल निर्णय से अनभिज्ञ है कि वस्तुत: झूठ इस्लाम में अपवित्र और अवैध और शिर्क के बराबर है।

1. अर्थात संदिग्ध बात कहना - अनुवादक।

लेकिन तौरियः जो वस्तुतः झूठ नहीं यद्यपि झूठ के रंग में है और बेबसी के समय लोगों के लिए उसका वैध होना हदीस में पाया जाता है। परन्तु फिर भी लिखा है कि सबसे अच्छे वही लोग हैं जो संदिग्ध बातों के कहने से भी बचें।

तौरियः इस्लामी परिभाषा में उसको कहते हैं कि फ़ित्ने के डर से एक बात को छुपाने के लिए या किसी अन्य युक्ति से एक रहस्य की बात गुप्त रखने के उद्देश्य से ऐसी शैली और उदाहरणों में उसका वर्णन किया जाए कि बुद्धिमान तो उसको समझ जाए और मूर्ख की समझ में न आए और उसका ध्यान उस ओर चला जाए जो वक्ता का उद्देश्य नहीं और अत्यधिक चिन्तन मनन के बाद ज्ञात हो कि जो कुछ वक्ता ने कहा है वह झूठ नहीं बल्कि पूर्णतः सत्य है, इसके अतिरिक्त उसमें कुछ भी झूठ का अंश न हो और न दिल ने लेशमात्र भी झूठ की ओर झुकाव किया हो, जैसा कि कतिपय हदीसों में दो मुसलमानों में सुलह कराने के लिए या अपनी पत्नी को किसी फ़ित्ना में पड़ने या घरेलू नाराज़गी और झगड़े से बचाने के लिए या युद्ध में अपने रहस्य दुश्मन से गुप्त रखने के उद्देश्य से और दुश्मन को दूसरी ओर झुका देने की नीयत से तौरियः का जाइज़ होना पाया जाता है। लेकिन इसके अतिरिक्त बहुत सी हदीसें दूसरी भी हैं जिनसे ज्ञात होता है कि संदिग्ध बात कहना उच्चकोटि के संयम के विपरीत है और खुली-खुली सच्चाई हर हाल में सर्वश्रेष्ठ है चाहे उसके कारण कत्ल किया जाए या जलाया जाए। खेद है कि यह तौरियः आपके यीशू साहिब की बातों में बहुत ही पाया जाता है। समस्त इन्जीलें इससे भरी पड़ी हैं इसलिए हमें मानना पड़ता है कि यदि तौरियः झूठ है तो यीशू से अधिक दुनिया में कोई भी झूठा नहीं हुआ। यीशू साहिब का यह कथन कि मैं खुदा

के हैकल को गिरा सकता हूँ और फिर मैं तीन दिन में उसे बना सकता हूँ। यही वह कथन है जिसको तौरियः कहते हैं। इसी तरह वह कथन भी कि एक घर का मालिक था जिसने अंगूरिस्तान लगाया। यह सब बातें तौरियः के प्रकार हैं और यीशू साहिब की बातों में इसके बहुत से नमूने हैं क्योंकि वह हमेशा चबा-चबाकर बातें करता था और उसकी बातों में दोरंगी पायी जाती थी।

इस जगह हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा का एक महान आदर्श सिद्ध होता है और वह यह है कि जिस तौरियः को आपका यीशू माँ के दूध की तरह सारी उम्र हज़्म करता रहा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सामर्थ्यानुसार उससे बचते रहने का आदेश दिया है ताकि बात का आशय अपने प्रत्यक्ष रूप में भी झूठ से संदिग्ध न हो, परन्तु क्या कहें और क्या लिखें कि आपके यीशू साहिब इतना भी न सच बोल सके। जो व्यक्ति ख़ुदाई का दावा करे वह तो बबरशेर की तरह दुनिया में आना चाहिए था न कि सारी उम्र दोरंगी बातें करके और सारी बातें झूठ की तरह कह कर यह सिद्ध कर दे कि वह उन महान लोगों में से नहीं है जो मरने से निडर होकर दुश्मनों के सामने अपने आप को घोषित करते हैं और खुदा तआला पर पूरा भरोसा रखते हैं और कभी भी कायरता नहीं दिखाते। मुझे तो उन बातों को याद करके रोना आता है कि अगर कोई ऐसे कमज़ोर दिल यीशू की उस कमज़ोर हालत और संदिग्ध बातों के कहने पर जो एक प्रकार का झूठ है, आपत्ति करे तो हम क्या उत्तर दें। जब मैं देखता हूँ कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हुनैन नामक युद्ध में अकेले होने की दशा में भी नंगी तलवारों के

सामने कह रहे थे कि मैं **मुहम्मद** हूँ, मैं अल्लाह का नबी हूँ, मैं इब्ने अब्दुल मुत्तलिब हूँ और जब दूसरी तरफ देखता हूँ कि आपका यीशू काँप-काँप कर अपने शिष्यों को यह सच्चाई के विरुद्ध शिक्षा देता है कि किसी से न कहना कि मैं यीशू मसीह हूँ हालाँकि इस बात से कोई उसको क़त्ल न करता, तो मैं आश्चर्य में पड़ जाता हूँ कि या इलाही यह व्यक्ति भी नबी कहलाता है जिसकी हिम्मत का ख़ुदा की राह में यह हाल है।

तात्पर्य यह कि फ़तह मसीह ने अपनी मूर्खता का खूब पर्दा खोला बल्कि अपने यीशू साहिब पर भी प्रहार किया कि कुछ वे हदीसें प्रस्तुत कर दीं जिनमें तौरियः के उचित होने का वर्णन है। अगर किसी हदीस में तौरियः को अनेकार्थ के रूप में झूठ के शब्द से वर्णन भी किया गया हो तो यह बड़ी मूर्खता होगी कि कोई व्यक्ति उसको पूर्णतया झूठ पर चरितार्थ करे जबकि क़ुरआन और सर्वमान्य हदीसें दोनों पक्के झूठ को पूर्णतया अवैध और अपवित्र ठहराती हैं और उच्चकोटि की हदीसें तौरियः के विषय को खोलकर वर्णन कर रही हैं तो फिर यदि मान भी लें कि किसी हदीस में संदिग्धपरक शब्द के स्थान पर झूठ का शब्द आ गया हो तो उससे तात्पर्य पूर्णतः झूठ क्यों कर हो सकता है? अपितु उसके कहने वाले के अत्यन्त सूक्ष्म संयम की यह पहचान होगी कि जिसने तौरियः को झूठ समझकर अनेकार्थ के तौर पर झूठ का शब्द प्रयोग किया हो। हमें क़ुरआन और सच्ची हदीसों का अनुसरण करना ज़रूरी है। यदि कोई बात उसके विरुद्ध होगी तो हम उसके वे अर्थ कभी स्वीकार नहीं करेंगे जो विरुद्ध हों। हदीसों को देखते समय यह बात बहुत ज़रूरी होती है कि ऐसी हदीसों पर भरोसा न करें जो उन हदीसों से उलट और विपरीत हों

जिनकी प्रामाणिकता उच्च स्तर तक पहुँच चुकी हो और न ऐसी हदीसों पर भरोसा करें जो क़ुरआन की स्पष्ट और खुली-खुली आयतों के पूर्णत: विपरीत, सामंजस्यरहित और उलट हों, फिर एक ऐसी बात जिस पर क़ुरआन और सच्ची हदीसें सहमत हैं और धार्मिक पुस्तकों में स्पष्टरूप से उनका वर्णन मौजूद है उसके विरुद्ध किसी झूठी बात या किसी गड़बड़ और अप्रामाणिक हदीस या संदेहात्मक हदीस का उदाहरण देकर आपत्ति करना यह अन्याय और शरारत का काम है। असल में ईसाइयों को ऐसी शरारतों ने ही धार्मिक दृष्टि से रहित किया है। इन लोगों में व्यक्तिगत तौर पर हदीस समझने का तत्व नहीं, अधिक से अधिक मिश्कात नामक किताब का कोई अनुवाद देखकर जिस बात पर अपनी विकृतबुद्धि से दोष लगा सकते हैं उसी बात को ले लेते हैं। हालाँकि हदीसों की किताबों में अच्छा-बुरा सब कुछ होता है और हदीस पर अनुसरण करने वाले को जाँच पड़ताल की ज़रूरत पड़ती है और यह एक बहुत ही नाज़ुक काम है कि हर एक प्रकार की हदीसें पाए जाने वाले ढेर में से सच्ची हदीसें ढूँढें और फिर उसके सच्चे अर्थ ज्ञात करें और फिर उसके लिए सही अवसर पर सही तर्क देने की जगह तलाश करें।

क़ुरआन ने झूठों पर लानत की है और कहा है कि झूठे शैतान के साथी होते हैं और झूठे बेईमान होते हैं और झूठों पर शैतान उतरते हैं और केवल यही नहीं कहा कि तुम झूठ मत बोलो बल्कि यह भी कहा है कि तुम झूठों की संगति भी छोड़ दो और उनको अपना संघी साथी मत बनाओ और ख़ुदा से डरो और सच्चों के साथ रहो। इसके अतिरिक्त एक जगह फ़रमाता है कि जब तू कोई बात करे तो तेरी बात पूर्णत: सच हो और हँसी मज़ाक़ के तौर पर भी उसमें झूठ न हो।

अब बतलाओ कि यह शिक्षाएँ इन्जील में कहाँ हैं यदि ऐसी शिक्षाएँ होतीं तो ईसाइयों में अप्रैल फूल की गन्दी परम्पराएँ अब तक क्यों जारी रहतीं। देखो अप्रैल फूल कितनी बुरी रस्म है कि अकारण झूठ बोलना उसमें सभ्यता की बात समझी जाती है। यह ईसाई सभ्यता और इंजील की शिक्षा है। ज्ञात होता है कि ईसाई लोग झूठ से बहुत ही प्यार करते हैं। अत: व्यावहारिक हालत इस पर गवाह है। उदाहरणतया क़ुरआन तो समस्त मुसलमानों के हाथ में एक ही है। परन्तु सुना गया है कि इन्जीलें साठ से भी अधिक हैं। शाबाश हे पादरियो! झूठ का अभ्यास भी इसे ही कहते हैं। सम्भवत: आपने अपने एक पवित्र बुज़ुर्ग की बात सुनी है कि झूठ बोलना केवल वैध ही नहीं बल्कि पुण्य की बात है। ख़ुदा तआला ने न्याय के बारे में जो पूर्णत: सच्चाई को अपनाए बिना नहीं हो सकता, फ़रमाया है कि :-

لَا یَجۡرِمَنَّکُمۡ شَنَاٰنُ قَوۡمٍ عَلٰۤی اَلَّا تَعۡدِلُوۡا ؕ اِعۡدِلُوۡا ۟ هُوَ اَقۡرَبُ لِلتَّقۡوٰی (المائدہ آیت:۹)

अर्थात दुश्मन क़ौमों की दुश्मनी तुम्हें न्याय से न रोके, न्याय पर क़ायम रहो क्योंकि तक़्वा (संयम) इसी में है। अब आपको ज्ञात होना चाहिए कि जो क़ौमें अकारण सताएं और दु:ख दें और रक्तपात करें और पीछा करें और बच्चों एवं औरतों को क़त्ल करें जैसा कि मक्का वाले काफ़िरों ने किया था और फिर लड़ाइयों से न रुकें, ऐसे लोगों के साथ पारस्परिक व्यवहारों में न्याय के साथ व्यवहार करना कितना कठिन होता है। परन्तु क़ुरआन की शिक्षा ने ऐसे जानी दुश्मनों के अधिकारों का भी हनन नहीं किया और न्याय और सच्चाई पर चलने की वसीयत की। परन्तु आप तो ईर्ष्या-द्वेष के गड्ढे में गिरे हैं इन पवित्र बातों को कैसे समझेंगे। इन्जील में यद्यपि

लिखा है कि अपने दुश्मनों से प्रेम करो, परन्तु यह नहीं लिखा कि दुश्मन क़ौमों की दुश्मनी और आतंक तुम्हारे न्याय और सच्चाई के मार्ग में रोक न हो। मैं सच-सच कहता हूँ कि दुश्मन से आवभगत का बर्ताव करना आसान है परन्तु दुश्मन के अधिकारों की रक्षा करना और मुक़दमों में न्याय को हाथ से न जाने देना, यह बहुत कठिन है बल्कि यह केवल साहसी लोगों का काम है। अधिकतर लोग अपने भागीदार दुश्मनों से प्रेम तो करते हैं और मीठी-मीठी बातों से पेश आते हैं परन्तु उनके हिस्से दबा लेते हैं। एक भाई दूसरे भाई से प्रेम करता है और प्रेम की आड़ में धोखा देकर उसके हिस्सों को दबा लेता है। उदाहरणतया अगर ज़मींदार है तो चालाकी से उसका नाम बन्दोबस्त काग़ज़ात में नहीं लिखवाता और देखने में इतना प्रेम कि उस पर कुर्बान हुआ जाता है। इसलिए ख़ुदा तआला ने इस आयत में प्रेम का वर्णन नहीं किया बल्कि प्रेम के स्तर का वर्णन किया है क्योंकि जो व्यक्ति अपने जानी दुश्मन से न्याय करेगा और सच्चाई और न्याय को नहीं छोड़ेगा वही है जो सच्चा प्रेम करता है। परन्तु आपके ख़ुदा को यह शिक्षा याद न रही कि अत्याचारी दुश्मनों के साथ न्याय करने के लिए ऐसा बल देता जो क़ुरआन ने दिया और दुश्मन के साथ सच्चा व्यवहार करने के लिए और सच्चाई पर हमेशा क़ायम रहने के लिए वह आदेश देता जो क़ुरआन ने दिया और संयम के सूक्ष्म मार्ग सिखाता, परन्तु खेद है कि जो बात सिखलाई, धोखे की सिखलाई और तक़्वा (संयम) के सीधे मार्ग पर क़ायम न कर सका। यह सब हम आपके बनावटी यीशू के बारे में कहते हैं जिसके कुछ अस्त-व्यस्त पन्ने आपके हाथ में हैं और जो ख़ुदाई का दावा करता करता आखिरकार स्वयं सूली पर मर गया है और सारी रात रो-रोकर दुआ की, कि

किसी तरह बच जाऊँ परन्तु बच न सका।

हमारे सैयद व मौला **नबी आख़िरुज़्ज़मान सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम** ने तो स्वयं दुनिया से जाने के लिए दुआ की कि:-

الحقنی بالرفیق الاعلٰی[1]

परन्तु आप के ख़ुदा साहिब ने दुनिया की चन्दरोज़ा ज़िन्दगी से ऐसा प्रेम किया कि सारी रात ज़िन्दा रहने के लिए दुआएँ करता रहा बल्कि सूली पर भी इच्छा और स्वीकारिता की बात मुँह से न निकली और अगर निकली तो यह निकली कि ''ईली ईली लिमा सबकतनी'' हे मेरे ख़ुदा हे मेरे ख़ुदा तूने मुझे क्यों छोड़ दिया और ख़ुदा ने कुछ उत्तर न दिया कि उसने छोड़ दिया परन्तु बात तो स्पष्ट है कि ख़ुदाई का दावा किया अहंकार किया, छोड़ दिया गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा तआला ने आख़िरी समय में अधिकार दिया कि यदि चाहो तो दुनिया में रहो और यदि चाहो तो मेरी तरफ आ जाओ। आपने कहा कि हे मेरे रब्ब! अब मैं यही चाहता हूँ कि तेरी तरफ़ आऊँ और आपका आखिरी शब्द जिस पर आपकी पवित्र रूह निकली यही था कि:-

بالرفیق الاعلٰی

अर्थात अब मैं इस जगह नहीं रहना चाहता। मैं अपने ख़ुदा के पास जाना चाहता हूँ। अब दोनों बातों को तोलो। आपके खुदा साहिब ने न केवल सारी रात ज़िन्दा रहने के लिए दुआ की बल्कि सूली पर भी चिल्ला-चिल्लाकर रोए कि मुझे मौत से बचा ले। परन्तु कौन सुनता था। लेकिन हमारे मौला नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़िन्दगी के

1. अर्थात् मैं अपने ख़ुदा के पास जाना चाहता हूँ - अनुवादक

लिए कदापि दुआ नहीं की। अल्लाह तआला ने स्वयं अधिकार दिया कि अगर ज़िन्दगी की इच्छा है तो यही होगा परन्तु आपने फ़रमाया कि अब मैं इस संसार में रहना नहीं चाहता। क्या यह ख़ुदा है जिस पर भरोसा है डूब जाओ!!!

आपका यह कहना कि क़ुरआन अपने धर्म को छुपा लेने के लिए आदेश देता है केवल आरोप और मनगढ़ंत झूठ है जिसकी कुछ भी वास्तविकता नहीं। क़ुरआन तो उन पर लानत डालता है[1] जो धर्म की गवाही को जानबूझकर छुपाते हैं और उन पर लानत डालता है जो झूठ बोलते हैं शायद आपने नासमझी के कारण क़ुरआन की उस आयत से धोखा खाया होगा जो सूर: नहल में वर्णित है और वह यह है :-

اِلَّا مَنۡ اُكۡرِهَ وَقَلۡبُهٗ مُطۡمَئِنٌّۢ بِالۡاِيۡمَانِ (النحل،آیت:107)

अर्थात काफ़िर अज़ाब में डाले जाएँगे। परन्तु ऐसा व्यक्ति जिस पर जबरदस्ती की जाए अर्थात ईमानी क्रिया कलाप के पालन करने पर सहन शक्ति से बढ़कर किसी कष्ट के द्वारा रोका जाए और दिल उसका ईमान की संतुष्टि से भरा हुआ हो वह अल्लाह के निकट विवश है। इस आयत का अर्थ यह है कि यदि कोई अत्याचारी किसी मुसलमान को सख़्त दर्दनाक और सहनशक्ति से बढ़कर ज़ख़्मों से सताए और वह उस घोर कष्ट में कोई ऐसी बातें कह दे कि जो उस काफ़िर की दृष्टि में कुफ्र की बातें हों, परन्तु वह स्वयं कुफ्र की बातें कहने की नीयत न करे बल्कि दिल उसका ईमान से भरा हो और केवल यह नीयत हो कि उस असहनीय अत्याचार के कारण अपने धर्म को छुपाता है जानबूझ कर नहीं, बल्कि उस समय जब सहनशक्ति से अधिक कष्ट पहुँचने से बे हवास और पागल हो

---

1. नोट :- ''लानतुल्लाह अलल् काज़िबीन'' क़ुरआन शरीफ में है या इन्जील में उत्तर तो दो - *उसी में से।*

जाए तो ख़ुदा उसकी तौबा के समय उसके गुनाह को नीचे लिखी हुई आयत की शर्तों के अनुसार क्षमा कर देगा क्योंकि वह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है और वे शर्तें निम्नलिखित हैं :-

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (النحل، آیت111)

अर्थात ऐसे लोग जो सहनशक्ति से बढ़कर दु:ख पाने की हालत में अपने मुसलमान होने को छुपाएँ उनका इस शर्त के साथ गुनाह क्षमा किया जाएगा कि दु:ख उठाने के बाद हिजरत करें अर्थात ऐसी आदत या ऐसे देश को छोड़ दें जहाँ धर्म पर ज़बरदस्ती होती है। फिर ख़ुदा के मार्ग में बहुत ही प्रयास करें और कष्टों पर सब्र करें, इन सब बातों के बाद ख़ुदा उनका गुनाह क्षमा कर देगा क्योंकि वह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है।

अब इन समस्त आयतों से ज्ञात हुआ कि जो व्यक्ति दुश्मनों से असहनीय दु:ख पाने के समय इस्लाम धर्म की गवाही को छुपाए वह भी ख़ुदा तआला के निकट गुनहगार है। लेकिन ऐसी आदत या ऐसा देश छोड़ देने के बाद जिसमें ज़बरदस्ती की जाती है अच्छे कर्म करने और सब्र और धैर्य के पश्चात् उसका गुनाह क्षमा किया जाएगा और ख़ुदा उसको निष्फल नहीं करेगा क्योंकि वह बड़ा कृपालु और दयालु है।

अत: ख़ुदा तआला ने इस छुपाने के काम को प्रशंसनीय नहीं बताया बल्कि एक गुनाह ठहराया है और इस गुनाह का प्रायश्चित पिछली आयत में बतला दिया है। ख़ुदा तआला ने जगह-जगह उन मोमिनों की प्रशंसा की है जो धर्म की गवाही को नहीं छुपाते चाहे उनके प्राण ही चले जाएँ। हाँ ऐसे व्यक्ति को भी धुत्कारना नहीं चाहा जो अत्याचार होने

की हालत में अपने सामर्थ्य और सहनशक्ति से बढ़कर कष्टों के कारण धर्म की गवाही को छुपाए रखे। बल्कि उसको इस शर्त के साथ स्वीकार कर लिया है कि भविष्य में ऐसी आदत या ऐसे देश से जिसमें ज़बरदस्ती होती है अलग हो जाए और अपनी सच्चाई और धैर्य और इबादतों (तपस्याओं) से अपने रब्ब को राज़ी करे, तब धर्म के छुपाने का यह गुनाह क्षमा किया जाएगा क्योंकि वह ख़ुदा जिसने कमज़ोर लोगों को पैदा किया है अत्यन्त कृपा करने वाला और बार-बार दया करने वाला खुदा है। वह किसी को थोड़े किए पर अपनी ओर से वंचित नहीं करता। यह है क़ुरआन की शिक्षा जो ख़ुदा तआला की दया और क्षमा की विशेषता के बिल्कुल अनुरूप है। लेकिन आपके इक़रार से यह ज्ञात हुआ कि यह शिक्षा इन्जील की नहीं है और इंजील के अनुसार यह फ़त्वा है कि अगर कोई ईसाई किसी बर्दाश्त से बढ़कर दु:ख के समय ईसाई धर्म की गवाही से मुँह से इन्कार करे तो वह हमेशा के लिए तिरस्कृत हो गया और अब इन्जील उसको अपनी जमाअत में जगह नहीं देगी और उसके लिए कोई प्रायश्चित नहीं। शाबाश, शाबाश, आज तुमने अपने हाथ से मुहर लगा दी कि यह इन्जील जो तुम्हारे हाथ में है एक झूठी इन्जील है। खैर अब हमारे वार से भी खाली न जाओ और जो नीचे लिखता हूँ उसका उत्तर दो अन्यथा अगर कुछ शर्म है तो ईसाई धर्म से तौबा करो।

ऐतिराज़ यह है कि आपके कथनानुसार जिस हालत में वह शिक्षा खुदा तआला की ओर से नहीं हो सकती, जो ईमान के छुपाने वाले को उसके पश्चाताप और सत्कर्म और सब्र और धैर्य के बाद क्षमा का वादा दे और खुदा की कृपा से वंचित न करे, तो फिर इन्जील की शिक्षा सच्चाई से कितनी

दूर होगी जिसने पतरस को उसके अत्यन्त घृणित दुराचार और झूठ और घोर इन्कार और झूठी क़सम और मसीह पर लानत डालने और ईमान को छुपाने के बावजूद पुनः स्वीकार कर लिया। आपका[1] यह ऐतिराज़ तो केवल इतना था कि क़ुरआन ने ऐसे लोगों को भी इस्लाम से वंचित नहीं किया जो किसी डर से इस्लाम का मुँह से इन्कार कर दें, परन्तु इन्जील ने तो इस बारे में हद कर दी कि ऐसे व्यक्ति को भी फिर स्वीकार कर लिया, जिसने न केवल ईमान को छुपाया बल्कि स्पष्टरूप से इन्कार किया और अपने झूठ को सच प्रकट करने के लिए क़सम खाई। बल्कि यीशू साहिब पर लानत भी भेजी और अगर कहो कि इन्जील की शिक्षा ने उसको स्वीकार नहीं किया बल्कि वह अब तक तिरस्कृत और ईमान से ख़ारिज है तो इस आस्था का इश्तिहार दे दो। अब कहो क़ुरआन पर आपत्ति करने से कुछ सज़ा पायी या नहीं।

आप अपने पत्र में लिखते हैं कि किसी बात का उत्तर देना और बात है परन्तु तर्कसंगत तौर पर उत्तर देना और बात है। अब बताओ तर्क सांगिक तौर पर यह उत्तर हैं या नहीं और अभी समय आया कि नहीं कि हम ''झूठों पर अल्लाह की लानत हो'' कह दें।

आपने यह भी पत्र में लिखा है कि मुसलमान उत्तर तो देते हैं परन्तु वे बुद्धि के सामने उत्तर नहीं समझे जाते। अब हमारे यह सारे उत्तर आपके सामने हैं इसको कुछ न्यायविदों को दिखाओ कि क्या ये बुद्धि के सामने उत्तर हैं या नहीं। क्या आप उम्मीद रखते हैं कि जो हमने इन्जील पर आपत्तियां

---

1. गवाही का छुपाना और दिल में रखना तो दरकिनार ईसाई तो इन्जील के मुर्तदों को भी ईमान लाने पर फिर वापस ले लेते हैं। उसी से सम्बन्धित।

की हैं आप उनका कुछ उत्तर दे सकेंगे, कदापि सम्भव नहीं। वह दिन आप पर कभी नहीं आएगा कि इन आपत्तियों के उत्तर दे सकें।

फिर आपका यह भ्रम है कि पूरे तौर पर गुनाह का वर्णन इन्जील में ही है लेकिन यदि आप विचार करें तो आपको ज्ञात होगा कि इन्जील तक़्वा (संयम) के मार्गों को पूर्णतः वर्णन नहीं कर सकी, और न इन्जील ने ऐसा दावा किया परन्तु क़ुरआन शरीफ ने तो अपने आने का कारण ही यह ठहराया है कि तक़्वा (संयम) की राहों को सिखाए। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ

(سورۃ البقرہ آیت ۳)

अर्थात् यह किताब इस उद्देश्य से अवतरित हुई है कि जो लोग गुनाह से बचते हैं उनको सूक्ष्म से सूक्ष्म गुनाहों के बारे में भी बताया जाए ताकि वे उन बुरे कामों से भी बचें जो हर एक आँख को दिखाई नहीं देते बल्कि केवल ज्ञान की सूक्ष्मदर्शी दृष्टि से ही दिखाई दे सकते हैं और मोटी बुद्धि उनके समझने में ग़लती कर जाती है। उदाहरणतया आपके यीशू साहिब का कथन मती ने यह लिखा है कि मैं तुम्हें कहता हूँ कि जो कोई कामवासना की दृष्टि से किसी स्त्री को देखे तो वह अपने दिल में उसके साथ व्यभिचार कर चुका। लेकिन क़ुरआन की यह शिक्षा है कि न तू कामवासना से और न कामवासना रहित दृष्टि से पराई औरत के चेहरे को मत देख और उनकी बातें मत सुन और उनकी आवाज़ मत सुन और उनकी सुन्दरता के क़िस्से मत सुन, कि इन बातों से बचना तुझे ठोकर से बचाएगा। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ (النور، آیت:31)

अर्थात् मोमिनों को कह दे कि नामहरम्[1] को देखने से अपनी आँखों को नीची रखें और अपने कानों तथा गुप्तांगों की सुरक्षा करें अर्थात कान को भी उनकी मीठी-मीठी बातों और उनकी खूबसूरती के क़िस्सों से बचाएं, कि यह सब मार्ग ठोकर खाने के हैं। अब अगर बेईमानी के ज़हर दिल में नहीं तो ऐसी शिक्षा से यीशू की शिक्षा की तुलना करो और फिर परिणामों पर भी नज़र डालो। यीशू की शिक्षा ने पूरी तरह आज़ादी का आदेश देकर और सारी आवश्यक शर्तों को नज़र अन्दाज़ करके सारे यूरोप को तबाह कर दिया। यहाँ तक कि उन सब में सूअरों और कुत्तों की तरह कुकर्म फैला और निर्लज्जता इस हद तक पहुँच गई कि मिठाइयों पर और विदेशी मिठाइयों पर भी यह शब्द लिखे जाते हैं कि - हे मेरी प्यारी ज़रा मुझे चुम्मा दे। इन सारे गुनाहों का कौन ज़िम्मेदार है? नि:सन्देह वह यीशू है, जिसने ऐसी शिक्षा दी कि एक जवान पुरुष या स्त्री नि:सन्देह दूसरे पर दृष्टि डाले, परन्तु व्यभिचार का इरादा न करे। हे मूर्ख क्या व्यभिचार का इरादा वश में है। जो व्यक्ति स्वतन्त्र तौर पराई औरतों को देखता रहेगा अन्तत: एक दिन बुरी नीयत से भी देखेगा क्योंकि मनोभाव हर एक स्वभाव के साथ लगे हुए हैं और अनुभव बुलन्द आवाज़ से बल्कि चिल्ला-चिल्लाकर हमें बतला रहा है कि पराई औरतों को देखने में कदापि परिणाम अच्छा नहीं होता। यूरोप जो व्यभिचार से भर गया उसका क्या कारण है? यही तो है कि पराई औरतों को बेधड़क देखना आदत बन

1. पराई स्त्रियाँ अर्थात् वे स्त्रियाँ जिनसे विवाह करना जाइज़ है। - अनुवादक।

गई है। पहले तो आँखों का व्यभिचार हुआ फिर गले मिलना भी एक साधारण बात बन गई, फिर उससे आगे चुम्मा लेने की भी आदत पड़ी, यहाँ तक कि टीचर जवान लड़कियों को अपने घरों में ले जाकर यूरोप में चुम्मा-चाटी करते हैं और कोई मना नहीं करता। मिठाइयों पर दुराचार की बातें लिखी जाती हैं, चित्रों में अत्यन्त घिनौनी दुष्चरित्रता का नक्शा दिखाया जाता है, औरतें स्वयं छपवाती हैं कि मैं ऐसी हसीन हूँ और मेरी नाक ऐसी है और आँख ऐसी है और उनके प्रेमियों के उपन्यास लिखे जाते हैं और दुष्कर्मों का ऐसा दरिया बह रहा है कि न तो कानों को बचा सकते हैं न आँखों को, न हाथों को न मुँह को, यह यीशू साहिब की शिक्षा है। काश ऐसा व्यक्ति दुनिया में न आया होता ताकि यह दुष्कर्म प्रकट न होते। उस व्यक्ति ने परहेज़गारी और तक़्वा (संयम) का ख़ून कर दिया और नास्तिकता एवं दुराचार को सारे देश में फैला दिया। खाने-पीने और बुरी नज़रों से देखने के अतिरिक्त कोई इबादत नहीं, कोई तपस्या नहीं और कोई भी चिन्ता नहीं। फिर ज़हर पर ज़हर यह कि एक झूठे कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) की उम्मीद देकर पापों के करने पर दिलेर कर दिया। कौन बुद्धिमान इस बात पर विश्वास करेगा कि ज़ैद को मलभेदक दवा दी जाए और बकर का सड़ा हुआ मल उससे निकल जाए। बुराई वास्तविक तौर पर तभी दूर होती है कि जब नेकी उसका स्थान ले ले। यही क़ुरआनी शिक्षा है किसी की आत्महत्या से दूसरे को क्या लाभ। यह कितना मूर्खतापूर्ण विचार है और प्रकृति के विधान के विपरीत है जो आपके यीशू साहिब से प्रकट हुआ। क्या उसके रोटी खाने से हवारियों का पेट भर जाता था? फिर कैसे उसकी आत्महत्या दूसरे के लिए लाभदायक हो सकती है? इन्जील की सारी शिक्षा

ऐसी गन्दी और त्रुटिपूर्ण है कि शब्द-शब्द पर बड़ा ऐतिराज़ है और उसके संकलनकर्ता को पता ही नहीं कि तक़्वा (संयम) किसको कहते हैं और गुनाह के सूक्ष्म दर्जे क्या हैं बेचारा बच्चों की तरह बातें करता है। खेद है कि इस समय हमें फ़ुर्सत नहीं कि यीशू की इन सारी बातों की पोल खोलें। अगर अल्लाह ने चाहा तो दूसरे समय में दिखाएँगे और सिद्ध करेंगे कि यह व्यक्ति पूर्णतः तक़्वा (संयम) के मार्ग से अनभिज्ञ है और उसकी शिक्षा मानवीय वृक्ष की किसी शाखा की भी सिंचाई नहीं कर सकती। जानता ही नहीं कि मनुष्य किन-किन शक्तियों के साथ इस दुनिया में भेजा गया है और उसे ज्ञात ही नहीं कि खुदा तआला का यह उद्देश्य नहीं है कि उन समस्त शक्तियों को नष्ट कर दे, बल्कि यह उद्देश्य है कि उनको संतुलित मार्ग पर चलावे। अतः ऐसी त्रुटिपूर्ण शिक्षा को क़ुरआन करीम के सामने प्रस्तुत करना सख्त हठधर्मी और अनभिज्ञता एवं बेशर्मी है।

और आपका यह कहना कि हज़रत मुहम्मद साहिब की शिक्षा यह है कि :-

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

(ला इलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) कहने से गुनाह दूर हो जाते हैं। यह बिल्कुल सच है और यही असल सच्चाई है कि जो केवल ख़ुदा को अद्वैत समझता है और ईमान लाता है कि मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उसी सर्वशक्तिमान और अद्वितीय ख़ुदा ने भेजा है तो निःसन्देह यदि इस बात पर उसका अन्त हो तो मुक्ति पा जाएगा। आसमानों के नीचे किसी की आत्महत्या से मुक्ति नहीं, कदापि नहीं और उससे अधिक कौन मूर्ख होगा जो ऐसा सोचे। लेकिन खुदा को अद्वैत समझना और

ऐसा दयालु मानना कि उसने अत्यन्त दया करके दुनिया को पथभ्रष्टता से छुड़ाने के लिए अपना अवतार भेजा जिसका नाम मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है, यह एक ऐसी आस्था है कि इस पर विश्वास करने से अन्तरात्मा का अन्धकार दूर होता है और अहंकार दूर होकर उसकी जगह एकेश्वरवाद ले लेता है और अन्ततः एकेश्वरवाद का ज़बरदस्त जोश पूरे हृदय पर व्याप्त होकर इसी संसार में स्वर्गीय जीवन आरंभ हो जाता है। जिस तरह तुम देखते हो कि प्रकाश के आने से अन्धकार ठहर नहीं सकता। उसी तरह जब لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (ला इलाह इल्लल्लाह) का ज्योतिर्मय प्रकाश दिल पर पड़ता है तो आन्तरिक अन्धकार के मनोभाव दूर हो जाते हैं। गुनाह का मूल कारण केवल यही है कि सरकशी की मिलौनी से अहंकार पूर्ण बातों का हंगामा हो, जिसके अनुसरण की हालत में एक व्यक्ति का नाम गुनहगार रखा जाता है और अरबी शब्दकोश के अनुसार ''ला इलाह इल्लल्लाह'' का अर्थ यह है कि :-

لا مطلوب لی ولا محبوب لی ولا معبود لی ولا مطاع لی اِلّا اللہ

अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त और कोई मेरा इच्छित नहीं और कोई प्रेमपात्र नहीं और कोई उपास्य नहीं और कोई आज्ञापक नहीं। अब स्पष्ट है कि ये अर्थ गुनाह की वास्तविकता और उसके मूल स्रोत से बिल्कुल विपरीत हैं। अतः जो व्यक्ति इन अर्थों को सच्चे दिल से अपनी अन्तरात्मा में जगह देगा तो उसके दिल से विपरीत अर्थ अवश्य निकल जाएगा क्योंकि दो परस्पर विरोधी बातें एक जगह इकट्ठी नहीं हो सकतीं। अतः जब अहंकारी मनोभाव दूर हो गए तो यही वह हालत है जिसको सच्ची पवित्रता और वास्तविक सदाचार कहते हैं और ख़ुदा के भेजे हुए पर ईमान लाना जो

कलिमा के दूसरे भाग का अर्थ है उसकी आवश्यकता यह है कि खुदा की वाणी पर भी विश्वास प्राप्त हो जाए क्योंकि जो व्यक्ति यह स्वीकार करता है कि मैं खुदा का आज्ञाकारी बनना चाहता हूँ। उसके लिए आवश्यक है कि उसके आदेशों पर विश्वास भी करे और आदेश पर विश्वास करना इसके अतिरिक्त सम्भव नहीं कि उस पर विश्वास किया जाए जिसके माध्यम से संसार में आदेश आया। यही कलिमा की वास्तविकता है और आपके यीशू साहिब ने भी इसी की ओर संकेत किया है और यही मुक्ति का कारण ठहराया है कि खुदा पर और उसके भेजे हुए यीशू पर ईमान लाया जाय। परन्तु चूँकि आप लोग धर्मान्ध हैं इसलिए अत्यधिक ईर्ष्या-द्वेष के कारण इन्जील की बातें भी आपको दिखाई नहीं देतीं।

इसके अतिरिक्त आपका यह कहना कि वुज़ू करने से गुनाह कैसे दूर हो सकते हैं? हे मूर्ख! खुदा की बातों पर क्यों विचार नहीं करता। क्या इन्सान होने के बाद फिर जानवर बन गया। वुज़ू करना तो केवल हाथ पैर और मुँह धोना है। अगर शरीअत (धर्मविधान) का यही अर्थ होता कि हाथ पैर धोने से गुनाह दूर हो जाते हैं तो यह पवित्र धर्म विधान उन समस्त दूषित लोगों को जो इस्लाम के विरोधी हैं हाथ मुँह धोने के समय गुनाह से रहित समझता क्योंकि वुज़ू से गुनाह दूर हो जाते हैं। परन्तु **धर्म विधान लाने वाले**[1] का यह तात्पर्य नहीं बल्कि यह अर्थ है कि खुदा तआला के छोटे-छोटे आदेश भी व्यर्थ नहीं जाते और उनके करने से भी गुनाह दूर हो जाते हैं। अगर मैं इस समय इल्ज़ामी (अपरिहार्य) उत्तर दूँ तो कई जिल्दें लिखकर इन्कार करने वाले का मुँह काला

1. अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम - अनुवादक।

करूँ। परन्तु समय कम है और अभी कुछ प्रश्न शेष हैं, ज़रा मेरे इस लेख पर कुछ उत्तर दो फिर तुम्हारी ही किताबों से तुम्हें बढ़िया इनाम दिया जाएगा, धैर्य रखो। आप झूठ से कैसे भागने वाले बन गए, क्या इन्जील का झूठ याद न रहा। क्या यह सच है कि यीशू साहिब को सिर रखने के लिए जगह नहीं मिलती थी। क्या यह सच्ची बात है कि अगर यीशू के समस्त काम लिखे जाते तो वे किताबें दुनिया में समा न सकतीं। अब बताओ कि झूठ बोलने में इन्जील को महारत है या कुछ कमी रह गई। यह भी स्मरण रहे कि क़ुरआन शरीफ में गुनाह को हल्का नहीं समझा गया अपितु बार-बार बतलाया गया है कि इसके अतिरिक्त किसी को मुक्ति नहीं कि वह गुनाह से सच्ची नफरत पैदा करे। परन्तु इन्जील ने सच्ची नफरत की शिक्षा नहीं दी। इन्जील ने कदापि इस बात पर बल नहीं दिया कि गुनाह एक घातक विष है इसके बदले अपने अन्दर कोई विषहर पैदा करो। बल्कि उस परिवर्तित इन्जील ने नेकियों का बदला यीशू की आत्महत्या को पर्याप्त समझ लिया है, परन्तु यह कैसी व्यर्थ और भूल की बात है कि सच्ची नेकी के पाने की ओर ध्यान नहीं। बल्कि इन्जील की यही शिक्षा है कि ईसाई बनो और जो चाहो करो, कफ्फारा व्यर्थ साधन नहीं है ताकि किसी कर्म की आवश्यकता हो। अब देखो कि क्या इससे अधिक बुराई फैलने का कारण कोई और भी हो सकता है? क़ुरआन शरीफ तो फ़रमाता है कि जब तक तुम अपने आपको पवित्र न करो, तब तक उस पवित्र घर में प्रवेश न हो सकोगे और इन्जील कहती है कि हर एक दुष्कर्म कर, तेरे लिए यीशू की आत्महत्या काफी है। अब किसने गुनाह को हल्का समझा क़ुरआन ने या इन्जील ने। क़ुरआन का ख़ुदा उस समय तक कदापि किसी को नेक नहीं

ठहराता जब तक कि बुराई के स्थान पर नेकी न आ जाए। परन्तु इन्जील ने अंधेर मचा दिया है। कफ़्फ़ारा से समस्त नेकी और परहेज़गारी के आदेशों को हल्का और व्यर्थ कर दिया और अब एक ईसाई के लिए उनकी ज़रूरत नहीं। अफ़सोस सैकड़ों अफ़सोस।

दूसरा प्रश्न आपका यह है कि स्वर्ग की शिक्षा केवल मनगढ़त है जिससे खुदा के एक भक्त को कुछ सन्तुष्टि नहीं हो सकती।

उत्तर :- अतः स्पष्ट हो कि यह बात अत्यन्त खुली-खुली और बुद्धि के अनुसार प्रमाणित और न्यायोचित है कि जिस तरह इन्सान दुनिया में अपराध करते समय या खैरात मांगते समय या नेक काम करते समय केवल रूह से ही कोई काम नहीं करता, बल्कि रूह और शरीर दोनों से करता है, इसी तरह प्रतिफल और दण्ड का प्रभाव भी दोनों पर ही होना चाहिए अर्थात रूह और शरीर दोनों को अपनी-अपनी हालत के अनुसार आखिरत के बदले से हिस्सा मिलना चाहिए। लेकिन ईसाई साहिबों पर बड़ा आश्चर्य है कि दण्ड की हालत में तो इस सिद्धान्त को उन्होंने स्वीकार कर लिया है और वे स्वीकार करते हैं कि जिन लोगों ने बदकारियाँ और बेईमानियाँ करके खुदा को नाराज़ किया उनको जो दण्ड दिया जाएगा वह केवल आत्मा तक सीमित नहीं बल्कि आत्मा और शरीर दोनों को नर्क में डाला जाएगा और गन्धक की आग से शरीर जलाए जाएँगे और वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा और वे प्यास से जलेंगे और उनको पानी नहीं मिलेगा और जब ईसाई महाशयों से पूछा जाए कि शरीर क्यों आग में जलाया जाएगा तो उसका यह उत्तर देते हैं कि भाई आत्मा और शरीर दोनों मज़दूर की तरह दुनिया में काम करते थे, अतः जब

दोनों ने अपने मालिक के काम में मिलकर बेईमानी की तो वे दोनों दण्डनीय ठहरे। अतः हे अन्धो और ख़ुदा की किताबों पर विचार करने में लापरवाही करने वालो तुम्हें तुम्हारी ही बात से दोषी ठहराता हूँ कि वह ख़ुदा जिसकी दया उसके प्रकोप पर हावी है जब उसने दण्ड देने के समय शरीर को खाली न छोड़ा तो क्या आवश्यक न था कि वह प्रतिफल देने के समय भी इस सिद्धान्त को याद रखता। क्या यह उचित है कि हम उस दयालु खुदा पर यह बद्‌गुमानी करें कि वह दण्ड देने के समय तो ऐसा क्रोध से भरा होगा कि हमारे शरीरों को भी जलती हुई भट्ठी में डालेगा लेकिन प्रतिफल देने के समय उसकी दया उतने स्तर पर नहीं होगी जितने स्तर पर दण्ड की हालत में उसका क्रोध होगा। अगर शरीर को दण्ड से अलग रखता तो निःसन्देह प्रतिफल से भी उसको अलग रखता। परन्तु जब उसने दण्ड के समय शरीर को गुनाह का साझीदार समझकर जलती हुई आग में डाल दिया तो हे अन्धो और ना समझो! क्या वह ईमान और नेक कर्म की साझेदारी के समय शरीर को प्रतिफल से हिस्सा नहीं देगा। क्या जब मुर्दे जी उठेंगे तो स्वर्गवासियों को व्यर्थ के तौर पर ही शरीर मिलेगा।

यह भी स्पष्ट बात है कि जब शरीर अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ आत्मा से मिलाया जाएगा तो वे शारीरिक शक्तियाँ या तो सुख में होंगी या दुःख में, क्योंकि दोनों दशाओं का दूर होना असंभव है। अतएव इस दशा में मानना पड़ा कि जिस तरह शरीर दण्ड की हालत में दुःख उठाएगा वैसा ही वह प्रतिफल की हालत में एक प्रकार के सुख से भी अवश्य लाभान्वित होगा और उसी सुख की क़ुरआन करीम में व्याख्या है। हाँ ख़ुदा तआला यह भी फ़रमाता है कि स्वर्ग की नेमतें समझ से परे हैं तुम्हें उनका वास्तविक ज्ञान नहीं

दिया गया और तुम वे नेमतें पाओगो जो अभी तुम से रहस्य में हैं, जो न दुनिया में किसी ने देखीं और न सुनीं और न दिलों में उनका विचार गुज़रा। वे सारी रहस्यमय बातें हैं उसी समय समझ में आएँगी जब घटित होंगी। जो कुछ क़ुरआन और हदीस में वादे हैं वे सब उदाहरण के तौर पर वर्णन किया है और उसके साथ यह भी कह दिया है कि वह वस्तुएं रहस्यमय हैं जिनका किसी को वास्तविक ज्ञान नहीं। अतः यदि वे आनन्द इसी तरह होते जैसे इस दुनिया में शर्बत या शराब पीने का आनन्द या स्त्री से सम्भोग का आनन्द होता है तो खुदा तआला यह न कहता कि वे ऐसी वस्तुएं हैं कि जो न किसी आँख ने देखीं और न किसी कान ने सुनीं और न कभी किसी के दिल में गुजरीं। अतः हम मुसलमान लोग इस बात पर विश्वास रखते हैं कि स्वर्ग जो शरीर और आत्मा के लिए प्रतिफल का घर है वह एक अधूरा और व्यर्थ प्रतिफल का स्थान नहीं बल्कि उसमें शरीर और आत्मा दोनों को अपनी-अपनी हालत के अनुसार प्रतिफल मिलेगा, जैसा कि नर्क में अपनी-अपनी हालत के अनुसार दोनों को दण्ड दिया जाएगा और उसकी वास्तविक व्याख्याएँ हम खुदा के सुपुर्द करते हैं और विश्वास रखते हैं कि बदला शारीरिक और आत्मिक दोनों तौर पर होगा और यही वह आस्था है जो बुद्धि और न्याय के अनुकूल है और यह बड़ी दुष्टता, एवं नीचता और धूर्तता है कि क़ुरआन पर यह व्यंग कसा जाए कि वह केवल भौतिक स्वर्ग का वादा करता है। क़ुरआन तो स्पष्टरूप से कहता है कि हर एक जो स्वर्ग में प्रवेश होगा वह भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के प्रतिफल पाएगा और जिस तरह भौतिक नेमत उसको मिलेगी उसी तरह वह ख़ुदा के दीदार से आनन्द उठाएगा और यही महान आनन्द स्वर्ग में है।

अल्लाह को पहचानने का आनन्द भी होगा और तरह-तरह के नूरों का भी आनन्द होगा और इबादत का भी आनन्द होगा परन्तु उसके साथ शरीर भी अपने पूर्ण सौभाग्य को पहुँचेगा। हम दावे से कहते हैं कि जितनी क़ुरआन ने स्वर्गवासियों के आध्यात्मिक प्रतिफल की हालत लिखी है इन्जील में कदापि नहीं। जिस व्यक्ति को सन्देह हो हमारे सामने आए और हमसे सुने और इन्जील की शिक्षा सुनावे। यदि वह विजयी हुआ और उसने सिद्ध किया कि इन्जील में स्वर्गवासियों का आध्यात्मिक प्रतिफल क़ुरआन से बढ़कर लिखा है तो हम क़सम खाकर कहते हैं कि उसी समय एक हज़ार रुपये नक़द उसको दिया जाएगा। जिस जगह चाहे क़ानूनी तौर पर लिखित देकर जमा करा ले।

हे अन्धो! क़ुरआन की तुलना में इन्जील कुछ भी चीज़ नहीं क्यों तुम्हारी शामत आई है। घरों में आराम करके बैठो, अब तुम्हारी रुसवाई का समय आ गया है। क्या तुम में से किसी में साहस है कि आराम से आदमी बनकर मुझ से आकर बहस (शास्त्रार्थ) कर ले कि स्वर्ग के बारे में आध्यात्मिक प्रतिफल का वर्णन इन्जील में अधिक है या क़ुरआन में और यदि इन्जील में अधिक निकला तो मुझ से नक़द हज़ार रुपया ले ले और जहाँ चाहे जमा करा ले। मुझे उम्मीद नहीं कि कोई मेरे मुक़ाबले पर आवे। अल्लाह अल्लाह कैसे यह लोग अत्याचारी और धोखेबाज़ हैं जिन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी के लिए आख़िरत को भुला दिया है। ज़रा मौत का प्याला पी लें फिर देखेंगे कि कहाँ है यीशू और उसका क़फ़्फ़ारा। हाय अफ़सोस इन लोगों ने एक असहाय व्यक्ति और एक असहाय औरत के बेटे को ख़ुदा बना दिया और पवित्र खुदा पर समस्त अनुचित बातें वैध समझीं। दुनिया में एक ही आया जो सच्चे

और पूर्ण एकेश्वरवाद को लाया। उससे इन्होंने दुश्मनी की।

अतएव यह भी सरासर झूठ है कि इन्जील में शारीरिक प्रतिफल की ओर कोई संकेत नहीं। देखो मती कितने विस्तार से शारीरिक प्रतिफल के बारे में यीशू का कथन वर्णन करता है और वह यह है : 29 - और जिसने घर या भाई या बहन या बाप या पत्नी या सन्तान या ज़मीन को मेरे नाम पर छोड़ा, सौ गुना पाएगा। 19 बाब आयत 29 । देखो यह कैसा स्पष्ट आदेश है। इसमें तो यह भी शुभ सन्देश है कि अगर ईसाई औरत यीशू के लिए पति छोड़े तो क़यामत को उसे सौ पति मिलेंगे और यदि शारीरिक नेमतों का वादा करना खुदा तआला की शान के विपरीत होता तो तौरात खुरूज 3 बाब 8 आयत, इस्तिस्ना 6 बाब 3 आयत, 7 बाब 13 आयत, 8 बाब 17 आयत और क़ाज़ी 9 बाब 12 आयत और इस्तिस्ना 32 बाब 14 आयत, इस्तिस्ना 16 बाब 20 आयत और अहबार 26 बाब 3 आयत, अहबार 25 बाब, अय्यूब 20 बाब 15 आयत में कदापि शारीरिक नेमतों के वादे न दिए जाते। क्या यीशू ने यह नहीं कहा कि मैं स्वर्ग में अंगूर का रस पिऊंगा। अजीब यीशू हैं जो मुसलमानों के स्वर्ग में दाखिल होने की इच्छा रखता है। जिसमें शारीरिक नेमतें भी हैं और फिर आश्चर्यजनक यह कि भौतिक नेमतों पर ही गिरा। खुदा के दर्शन का वर्णन तक न किया। लिआज़र से पानी माँगना भी ज़रा याद करो। जिस स्वर्ग में पानी नहीं उसमें पानी का वर्णन इस उदाहरण का पात्र है कि :-

دروغ گو را حافظہ نباشد[1]

यह सच है कि स्वर्ग में रहने वाले फ़रिश्तों के समान हो जाएँगे। परन्तु यह कहाँ सिद्ध है कि गुणों को परिवर्तित करके

1. झूठे की याददाश्त सही नहीं होती - अनुवादक।

वास्तव में फ़रिश्ते ही बन जाएँगे[1] और मानवीय गुणों को त्याग देंगे।

हाँ यह सत्य है कि स्वर्ग में संसार के समान विवाह शादियाँ नहीं होतीं परन्तु स्वर्गीय जीवन के तौर पर शारीरिक आनन्द तो होंगे जिससे यीशू को भी इन्कार नहीं था जैसा कि अंगूर का रस पीने की लालसा करता गुज़र गया। तौरात से सिद्ध है कि शारीरिक प्रतिफल देना भी ख़ुदा की विशेषता है तो फिर किस तरह संभव है कि वह अपरिवर्तनीय ख़ुदा क़यामत में अपनी विशेषताएँ बदल डाले।

तीसरा ऐतिराज़ आपका यह है कि इस्लामी शिक्षा में है कि जब तक कोई किसी गुनाह का दोषी न ठहर जाए तब तक ऐसे व्यक्ति से पूछ-ताछ न होगी और केवल हार्दिक विचारों पर ख़ुदा पूछ-ताछ नहीं करेगा परन्तु इन्जील में इसके विपरीत है अर्थात दिल में विचार पैदा होने पर भी सज़ा होगी।

उत्तर :– अतः स्पष्ट हो कि अगर इन्जील में ऐसा ही लिखा है तो ऐसी इन्जील कदापि ख़ुदा तआला की ओर से नहीं और सच्ची बात यही है जो अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में वर्णन की है कि मनुष्य के दिल के विचार जो अचानक उठते रहते हैं वे उसको गुनहगार नहीं करते, बल्कि अल्लाह के निकट दोषी ठहर जाने के तीन ही प्रकार हैं।

प्रथम यह कि मुँह से ऐसी गन्दी बातें जो धर्म एवं सच्चाई और न्याय के विपरीत हों, जारी हों।

द्वितीय यह कि बाह्य अंगों से अवज्ञापूर्ण गतिविधियाँ जारी हों।

1. नोट :- वस्तुतः फ़रिश्ते बन जाना और बात है परन्तु पवित्रता और सदाचार में उनसे समानता पैदा करना यह और बात है। *उसी में से।*

तृतीय यह कि दिल अवज्ञा की बातों पर पक्का इरादा करे कि अमुक दुष्कर्म अवश्य करूँगा। इसी की ओर संकेत है जो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि :-

ولکن یؤاخذکم بما کسبت قلوبکم

अर्थात जिन गुनाहों को दिल अपने इरादे से करे उन गुनाहों पर सज़ा होगी लेकिन केवल विचार गुज़रने पर पकड़ नहीं होगी क्योंकि वे मानवीय प्रकृति के वश में नहीं हैं। दयालु ख़ुदा हमें उन विचारों पर नहीं पकड़ता जो हमारे वश से बाहर हैं। हाँ उस समय पकड़ता है कि जब हम उन विचारों का मुँह से या हाथ से या दिल के निश्चय से अनुसरण करें, बल्कि कभी-कभी हम उन विचारों से पुण्य प्राप्त करते हैं। ख़ुदा तआला ने क़ुरआन करीम में केवल हाथ-पैर के गुनाहों का ही वर्णन नहीं किया बल्कि कान और आँख और दिल के गुनाहों का भी वर्णन किया है। जैसा कि वह अपनी पवित्र वाणी में फ़रमाता है :-

اِنَّ السَّمۡعَ وَالۡبَصَرَ وَالۡفُؤَادَ کُلُّ اُولٰٓئِکَ کَانَ عَنۡہُ مَسۡئُوۡلًا

(بنی اسرائیل، آیت37)

अर्थात कान और आँख और दिल इत्यादि इन सबसे पूछ-ताछ की जाएगी। अब देखो जिस तरह ख़ुदा तआला ने कान और आँख के गुनाह का वर्णन किया उसी तरह ही दिल के गुनाह का भी वर्णन किया है। परन्तु भ्रम और विचार दिल के गुनाह नहीं हैं क्योंकि वे तो दिल के वश में नहीं हैं बल्कि दिल का पाप, पक्का इरादा कर लेना[1] है। ऐसे विचार जो

1. नोट - पुण्य उस समय प्राप्त करते हैं जब हम उन हार्दिक विचारों का जो दुष्कर्म की ओर प्रेरित करते हैं सत्कर्मों के साथ सामना करते हैं और उन विचारों के विपरीत व्यवहार करते हैं। उसी में से।

इन्सान के अपने वश में नहीं हैं गुनाह नहीं, हाँ उस समय पाप समझे जाएँगे जब इन्सान उन पर साहस करे और उनके करने का इरादा कर ले। इसी तरह अल्लाह तआला अन्दरूनी गुनाहों के बारे में एक दूसरी जगह फ़रमाता है :-

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ

(سورۃ الاعراف. آیت ۳۴)

अर्थात खुदा ने बाह्य और आन्तरिक दोनों गुनाह हराम कर दिए हैं। अब मैं दावा से कहता हूँ कि यह श्रेष्ठ शिक्षा भी इन्जील में मौजूद नहीं कि समस्त अंगों के गुनाह का वर्णन किया हो और निश्चय और भ्रमों में अन्तर किया हो और संभव न था कि यह शिक्षा इन्जील में हो सकती क्योंकि यह शिक्षा अत्यन्त सूक्ष्म और युक्तिपूर्ण सिद्धान्तों पर आधारित है और इन्जील तो एक मोटे विचारों का संग्रह है जिससे हर एक जाँच पड़ताल करने वाला अब नफ़रत करता है। हाँ आप के यीशू साहिब ने पर्दापोशी के लिए यह अच्छी कोशिश की कि लोगों को बातों बातों में समझा दिया कि मेरी शिक्षा कुछ अच्छी नहीं भविष्य में इस पर व्यंग होगा अच्छा है कि तुम एक और आने वाले की प्रतीक्षा करो जिसकी शिक्षा अध्यात्म ज्ञान के समस्त स्तरों को पूर्ण करेगी। लेकिन शाबाश हे पादरी साहिबान आप ने इस वसीयत पर बहुत ही अमल किया जिस शिक्षा को स्वयं आपके यीशू साहिब भी आपत्तियोग्य ठहराते हैं और भविष्य में आने वाले एक पवित्र नबी की शुभ सूचना देते हैं, उसी अधूरी शिक्षा पर आप गिरे जाते हैं। भला बताओ तो सही कि आपके यीशू की शिक्षा स्वयं उसके स्वीकार से अधूरी ठहरी या अभी कुछ कमी बाक़ी रह गई। जब यीशू स्वयं स्वीकार करता है कि मेरी शिक्षा अधूरी और निकम्मी है तो अपने गुरू की भविष्यवाणी को ध्यान में रखकर

इस्लामी शिक्षा की विशेषताएँ हम से सुनो और अपने यीशू को झूठा मत ठहराओ क्योंकि जब तक ऐसा नबी दुनिया में पैदा न हो जिसकी शिक्षा इन्जील की शिक्षा से अधिक व्यापक और महान हो तब तक यीशू की भविष्यवाणी झूठ के रंग में है, पर वह पवित्र नबी तो आ चुका और तुमने उसको पहचाना नहीं। हमारे लेखों पर विचार करो ताकि तुम्हें ज्ञात हो कि वह पूर्ण और व्यापक शिक्षा जिसकी मसीह को प्रतीक्षा थी **क़ुरआन** है और यदि यह भविष्यवाणी न होती तब भी क़ुरआन का पूर्ण और व्यापक होना और इन्जील का अधूरा और अस्थाई होना, ख़ुदा के तर्क को पूरा करता था। इसलिए नर्क की आग से डरो और उस आने वाले नबी को मान लो, जिसके बारे में मसीह ने शुभ सूचना दी और उसकी पूर्ण एवं व्यापक शिक्षा की प्रशंसा की। परन्तु फिर भी आपके यीशू का इसमें कुछ भी एहसान नहीं क्योंकि स्वयं शक्तिशाली ने कम ज़ोर को गिरा दिया। अब केवल समझ का घाटा है वर्ना अब इन्जील को क़दम रखने की जगह नहीं।

चौथा ऐतिराज़ यह है कि इस्लामी शिक्षा में दूसरे धर्म वालों से मुहब्बत करने का किसी जगह आदेश नहीं आया, बल्कि आदेश है कि मुसलमान के अतिरिक्त किसी से मुहब्बत न करो।

उत्तर :- अतः स्पष्ट हो कि यह सारा त्रुटिपूर्ण और अधूरी इन्जील का दुर्भाग्य है कि ईसाई लोग ख़ुदा और सच्चाई से दूर जा पड़े अन्यथा यदि एक गहरी दृष्टि से देखा जाए कि मुहब्बत क्या चीज़ है और किस किस अवसर पर उसको करना चाहिए और द्वेष क्या चीज़ है और किन-किन जगहों में करना चाहिए तो फ़ुर्क़ान करीम का सच्चा दर्शन न केवल समझ में ही आता है बल्कि आत्मा को उससे सच्चे अध्यात्मज्ञान की

एक व्यापक रौशनी मिलती है।

अब जानना चाहिए कि प्रेम किसी बनावट या संकोच का काम नहीं बल्कि इन्सानी शक्तियों में से यह भी एक शक्ति है और इसकी वास्तविकता यह है कि दिल का एक चीज़ को पसन्द करके उसकी ओर खिंचे जाना और जिस तरह हर एक चीज़ की असल विशेषताएँ उसकी पूर्ण चरमोत्कृष्टता के समय महसूस होती हैं यही प्रेम का हाल है कि उसके गुण भी उस समय खुले-खुले प्रकट होते हैं कि जब पूरे और सम्पूर्ण स्तर पर पहुँच जाए। अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

أُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ[1] (سورة البقرہ آیت ۹۴)

अर्थात उन्होंने बछड़े से ऐसा प्रेम किया कि मानो उनको बछड़ा शर्बत की तरह पिला दिया गया। वस्तुत: जो व्यक्ति किसी से पूर्णरूप से प्रेम करता है तो मानो उसे पी लेता है या खा लेता है और उसके शिष्टाचार और उसके चाल-चलन के साथ रंगीन हो जाता है और जितना अधिक प्रेम होता है उतना ही इन्सान स्वाभाविक तौर पर अपने प्रेमी की विशेषताओं की ओर खिंचा जाता है यहाँ तक कि उसी का रूप हो जाता है जिससे वह प्रेम करता है। यही भेद है कि जो व्यक्ति ख़ुदा से प्रेम करता है वह प्रतिच्छाया के तौर पर अपनी सामर्थ्यानुसार उस प्रकाश को पा लेता है जो ख़ुदा तआला की हस्ती में है। इसी तरह शैतान से प्रेम करने वाले वह अन्धकार प्राप्त कर लेते हैं जो शैतान में है। अत: जब प्रेम की वास्तविकता यह है तो फिर कैसे एक सच्ची किताब जो ख़ुदा की ओर से है यह आज्ञा दे सकती है कि तुम शैतान से वह प्रेम करो जो ख़ुदा से करना चाहिए और

---

1. उनके दिलों में बछड़े का प्रेम कूट-कूटकर भर गया है - अनुवादक।

शैतान के उत्तराधिकारियों से वह प्रेम करो जो कृपालु ख़ुदा के उत्तराधिकारियों से करना चाहिए। अफ़सोस कि पहले तो इन्जील के झूठे होने पर हमारे पास यही एक प्रमाण था कि वह असहाय मिट्टी के पुतले को खुदा बनाती है अब यह दूसरे प्रमाण भी पैदा हो गए कि उसकी दूसरी शिक्षाएँ भी दोषपूर्ण हैं। क्या यह पवित्र शिक्षा हो सकती है कि शैतान से ऐसा ही प्रेम करो जैसा कि खुदा से और अगर यह बहाना किया जाए कि यीशू के मुँह से धोखे से यह बातें निकल गईं क्योंकि वह ईश्वरीय ज्ञान के दर्शन से अनभिज्ञ था तो यह बहाना निकम्मा और व्यर्थ होगा क्योंकि अगर वह ऐसा ही अनभिज्ञ था तो क्यों उसने क़ौम के सुधारक होने के दावा किया। क्या वह बच्चा था, उसे यह भी ज्ञात नहीं था कि प्रेम की वास्तविकता निश्चित रूप से इस बात को चाहती है कि इन्सान सच्चे दिल से अपने प्रेमी की समस्त आदतें, शिष्टाचार और इबादतें पसन्द करे और उनमें लीन होने के लिए दिलोजान से तत्पर हो, ताकि अपने प्रेमी में लीन होकर वह जीवन पाए जो प्रेमी को प्राप्त है। सच्चा प्रेम करने वाला अपने प्रेमी में फ़ना हो जाता है, अपने प्रेमी के अन्दर से प्रकट होता है और अपने अन्दर उसका ऐसा नक्शा खींचता है कि मानो उसे पी जाता है और कहा जाता है कि वह उसमें होकर और उसके रंग में रंगीन होकर और उसके साथ होकर लोगों पर प्रकट कर देता है कि वह वास्तव में उसी के प्रेम में खो गया है। **मुहब्बत** एक अरबी शब्द है और उसका वास्तविक अर्थ है भर जाना। अतः अरब में यह कहावत प्रसिद्ध है कि :-

تَحَبَّبَ الْحِمَارُ

अर्थात जब अरब लोग यह कहते हैं कि गधे का पेट

पानी से भर गया तो कहते हैं कि :- تَحَبَّبَ الْحِمَارُ और जब यह कहना होता है कि ऊँट ने इतना पानी पिया कि वह पानी से भर गया तो कहते हैं شربت الابل حتّٰی تحبب और حَبٌّ (हब्ब) दाना को कहते हैं। वह भी इसी से निकला है। जिससे यह तात्पर्य है कि वह पहले दाने की सारी कैफ़ियत से भर गया और इसी आधार पर اِحْبَابْ (इहबाब) सोने को भी कहते हैं। क्योंकि जो दूसरे से भर जाएगा वह अपने अस्तित्व को खो देगा मानो सो जाएगा और अपने अस्तित्व की कुछ संवेदना उसमें शेष नहीं रहेगी। जब प्रेम की यह वास्तविकता है तो ऐसी इन्जील जिसकी यह शिक्षा है कि शैतान से भी प्रेम करो और शैतानी गिरोह से भी प्रेम करो, दूसरे शब्दों में उसका सारांश यही निकला कि उनकी दुराचारिता में तुम भी साझी हो जाओ। अच्छी शिक्षा है? ऐसी शिक्षा ख़ुदा की ओर से कैसे हो सकती है बल्कि वह तो इन्सान को शैतान बनाना चाहती है। खुदा इन्जील की इस शिक्षा से हर एक को बचाए।

अगर यह प्रश्न हो कि जिस दशा में शैतान और शैतानी रंग रूप वालों से प्रेम करना हराम है तो किस प्रकार की नैतिकता का व्यवहार उनसे करना चाहिए तो उसका **उत्तर** यह है कि खुदा तआला की पवित्र किताब क़ुरआन शरीफ यह आज्ञा देती है कि उन पर बहुत दया करनी चाहिए, जैसा कि एक दयालु व्यक्ति कोढ़ियों, अन्धों, लूलों और लंगड़ों इत्यादि दु:खियों पर दया करता है। दया और प्रेम में यह अन्तर है कि प्रेम करने वाला अपने प्रेमी की समस्त बातों और कार्यों को पसन्द की दृष्टि से देखता है और चाहता है कि ऐसे हालात उसमें भी पैदा हो जाएँ। परन्तु दयालु व्यक्ति दयनीय के हालात को डर और इबरत की दृष्टि से देखता है और डरता है कि शायद वह व्यक्ति इस दुर्दशा में तबाह न हो

जाए और सच्चे दयालु की यह पहचान है कि वह व्यक्ति दयनीय व्यक्ति से सदैव नम्रता का व्यवहार नहीं करता अपितु उसके बारे में मौका और महल के अनुसार कार्यवाही करता है और कभी नर्मी और कभी सख़्ती का व्यवहार करता है। कभी उसको शर्बत पिलाता है और कभी एक कुशल चिकित्सक की तरह उसका हाथ या पैर काटने में उसकी भलाई समझता है और कभी किसी हिस्से को चीरता है और कभी मरहम लगाता है। अगर तुम एक दिन एक बड़े अस्पताल में जहाँ सैकड़ों बीमार और हर एक प्रकार के रोगी आते हों बैठकर एक कुशल चिकित्सक की कार्यवाहियों को देखो तो आशा है कि दयालु का अर्थ तुम्हारी समझ में आ जाएगा। अतः क़ुरआन की शिक्षा हमें यही पाठ पढ़ाती है कि नेक और कल्याणकारी लोगों से प्रेम करो और दुराचारियों तथा काफ़िरों पर दया करो। अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ (التوبہ، آیت۱۲۸)

अर्थात हे काफ़िरो! यह नबी ऐसा दयालु है कि तुम्हारे कष्ट को देख नहीं सकता और बड़ी इच्छा रखता है कि तुम उन कष्टों से मुक्ति पाओ। फिर फ़रमाता है :-

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ (الشعراء، آیت۴)

अर्थात् क्या तू इस दुःख से मर जाएगा कि यह लोग क्यों खुदा पर ईमान नहीं लाते। तात्पर्य यह है कि तेरी दया इस हद तक पहुँच गई है कि तू उन के शोक में मरने के निकट है और फिर एक जगह फरमाता है :-

تَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ (البلد، آیت۱۸)

अर्थात मोमिन वही है जो एक दूसरे को सब्र और दया की नसीहत करते हैं अर्थात यह कहते हैं कि कष्टों पर सब्र करो और ख़ुदा के बन्दों पर दया करो इस जगह भी मरहमत

से तात्पर्य दया है क्योंकि मरहमत का शब्द अरबी भाषा में दया के अर्थों में प्रयोग होता है। अतएव क़ुरआन की शिक्षा का मूल उद्देश्य यह है कि प्रेम जिसकी वास्तविकता प्रेमी के रंग में रंगीन हो जाना है ख़ुदा तआला और सदाचारियों के अतिरिक्त किसी से जाइज़ नहीं बल्कि पूर्णतः हराम है। जैसा कि वह फ़रमाता है :-

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ (البقرہ آیت ١٦٦)

फिर फ़रमाता है :-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ
(المائدہ آیت ٥٤)

फिर दूसरी जगह फ़रमाता है :-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ
(اٰل عمران، آیت ١١٩)

अर्थात यहूदी और ईसाइयों से मुहब्बत मत करो और हर एक व्यक्ति जो सदाचारी नहीं उससे मुहब्बत मत करो।

इन आयतों को पढ़कर मूर्ख ईसाई धोखा खाते हैं कि मुसलमानों को आदेश है कि ईसाई इत्यादि अधर्मी फिर्कों से प्रेम न करें लेकिन यह नहीं सोचते कि हर एक शब्द अपने मौका और महल पर प्रयोग होता है जिस चीज़ का नाम प्रेम है वह दुराचारियों और अधर्मियों से उसी दशा में हो सकता है कि जब उनके अधर्म और दुराचार से कुछ हिस्सा अपना ले। बड़ा ही मूर्ख वह व्यक्ति होगा जिसने यह शिक्षा दी कि अपने धर्म के दुश्मनों से मुहब्बत करो। हम बार-बार लिख चुके हैं कि प्रेम और मुहब्बत इसी का नाम है कि उस व्यक्ति की कथनी और करनी और आदत और शिष्टाचार और धर्म को रुचिकर समझें और उस पर ख़ुश हों और उसका प्रभाव अपने दिल पर डाल लें और मोमिन से काफ़िर के बारे में ऐसा

होना कदापि संभव नहीं। हाँ मोमिन अधर्मी पर दया करेगा और हमदर्दी की समस्त छोटी से छोटी बातों को व्यवहार में लाएगा और उसकी शारीरिक और आध्यात्मिक बीमारियों का हमदर्द होगा। जैसा कि अल्लाह तआला बार-बार फरमाता है कि बिना किसी धार्मिक भेदभाव के तुम लोगों से हमदर्दी करो, भूखों को खिलाओ, ग़ुलामों को आज़ाद करो, क़र्ज़दारों के कर्ज़ चुकाओ और बोझ से दबे हुए लोगों के बोझ उठाओ और मानव जाति से सच्ची हमदर्दी का हक़ अदा करो। और फ़रमाता है :-

اِنَّ اللّٰہَ یَاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ وَالۡاِحۡسَانِ وَاِیۡتَآیِٔ ذِی الۡقُرۡبٰی

(النحل، آیت ۹۱)

अर्थात् खुदा तआला तुम्हें आज्ञा देता है कि **न्याय** करो फिर न्याय से बढ़कर यह कि **उपकार** करो जैसे बच्चे से उसकी माँ या कोई अन्य व्यक्ति केवल रिश्तेदारी के जोश से किसी की हमदर्दी करता है और फिर फ़रमाता है :-

لَا یَنۡہٰکُمُ اللّٰہُ عَنِ الَّذِیۡنَ لَمۡ یُقَاتِلُوۡکُمۡ فِی الدِّیۡنِ وَلَمۡ یُخۡرِجُوۡکُمۡ مِّنۡ دِیَارِکُمۡ اَنۡ تَبَرُّوۡہُمۡ وَتُقۡسِطُوۡۤا اِلَیۡہِمۡ ؕ اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ الۡمُقۡسِطِیۡنَ (الممتحنہ، آیت ۹)

अर्थात ईसाइयों इत्यादि से जो ख़ुदा ने प्रेम करने से रोका है तो इससे यह न समझो कि वह नेकी और उपकार तथा सहानुभूति करने से तुम्हें मना करता है बल्कि जिन लोगों ने तुम्हारे क़त्ल करने के लिए लड़ाइयाँ नहीं कीं और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला वे चाहे ईसाई हों या यहूदी हों निःसन्देह उन पर एहसान करो, उनसे हमदर्दी करो, न्याय करो कि ख़ुदा ऐसे लोगों से प्रेम करता है और फिर फ़रमाता है :-

اِنَّمَا یَنۡہٰکُمُ اللّٰہُ عَنِ الَّذِیۡنَ قٰتَلُوۡکُمۡ فِی الدِّیۡنِ وَاَخۡرَجُوۡکُمۡ مِّنۡ دِیَارِکُمۡ وَظٰہَرُوۡا عَلٰۤی اِخۡرَاجِکُمۡ اَنۡ تَوَلَّوۡہُمۡ ۚ وَمَنۡ یَّتَوَلَّہُمۡ

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (الممتحنہ، آیت۱۰)

अर्थात् ख़ुदा ने जो तुम्हें हमदर्दी और मित्रता से मना किया है तो केवल उन लोगों से जिन्होंने तुम से धर्म के संबंध में लड़ाइयाँ कीं और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तब तक न रुके जब तक इकट्ठे होकर तुम्हें निकाल न दिया। इसलिए उन से मित्रता करना हराम है क्योंकि ये धर्म को मिटाना चाहते हैं। इस जगह एक रहस्य याद रखने के योग्य है और वह यह है कि तवल्ली[1] अरबी भाषा में दोस्ती को कहते हैं जिसका दूसरा नाम भाईचारा है और दोस्ती और भाईचारा की मूल वास्तविकता भलाई और हमदर्दी चाहना है। इसलिए मोमिन ईसाई, यहूदी और हिन्दुओं से दोस्ती, हमदर्दी और भलाई कर सकता है, एहसान कर सकता है परन्तु उन से मुहब्बत नहीं कर सकता। यह एक गूढ़ अन्तर है इसको खूब याद रखो।

फिर आपने यह ऐतिराज़ किया है कि मुसलमान लोग खुदा के साथ भी बिना किसी उद्देश्य के प्रेम नहीं करते। उनको यह शिक्षा नहीं दी गई है कि खुदा अपनी विशेषताओं के कारण मुहब्बत के योग्य है।

उत्तर :- अत: स्पष्ट हो कि वस्तुत: यह एहसान इन्जील पर चरितार्थ होता है न कि क़ुरआन पर, क्योंकि इन्जील में यह शिक्षा कदापि मौजूद नहीं कि खुदा से व्यक्तिगत प्रेम करना चाहिए और व्यक्तिगत प्रेम से उसकी उपासना करनी चाहिए। परन्तु क़ुरआन तो इस शिक्षा से भरा पड़ा है क़ुरआन

---

1. नोट - तवल्ली शब्द का 'त' वर्ण इस बात पर संकेत करता है कि तवल्ली में एक दिखावा और शील-संकोच है जो परायापन पर इशारा करता है लेकिन मुहब्बत में कुछ भी परायापन शेष नहीं रहता। उसी में से।

ने स्पष्ट कहा है :-

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا [1]

(البقرہ،آیت۲۰۱)

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ط

(البقرہ،آیت۱۶۶)

अर्थात खुदा को ऐसा याद करो जैसा कि अपने बाप दादों को बल्कि उससे भी बढ़कर, और मोमिनों की यही महानता है कि वे सबसे बढ़कर खुदा से मुहब्बत करते हैं अर्थात ऐसी मुहब्बत न वे अपने बाप से करें और न अपनी माँ से और न अपने अन्य प्रियजनों से और न अपने प्राण से। फिर फरमाया :-

حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ (الحجرات،آیت۸)

अर्थात ख़ुदा ने ईमान को तुम्हारा सबसे प्रिय बना दिया और उसको तुम्हारे दिलों में सुसज्जित कर दिया और फिर फ़रमाया :-

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِى الْقُرْبٰى

(النحل،آیت۹۱)

यह आयत हक़्क़ुल्लाह (खुदा के अधिकारों) और हक़ूकुल इबाद (लोगों के कर्त्तव्य) पर आधारित है और इसमें सबसे बड़ी अलंकारिकता यह है कि दोनों दृष्टिकोणों से अल्लाह तआला ने इसका वर्णन किया है। लोगों के हक़ का दृष्टिकोण तो हम वर्णित कर चुके हैं और अल्लाह के हक के दृष्टिकोण की दृष्टि से इस आयत का यह अर्थ है कि न्याय की पाबन्दी

1. नोट :- इन्जील के अनुसार हर एक दुराचारी खुदा का बेटा है अपितु स्वयं ही खुदा है। इसलिए इन्जील इस कारण से किसी को खुदा का बेटा नहीं कहती कि वह खुदा से प्रेम करता है अपितु बाईबल के अनुसार व्यभिचारी लोग भी खुदा के बेटे और बेटियाँ हैं। *उसी में से।*

के साथ खुदा तआला की आज्ञापालन कर क्योंकि जिसने तुझे पैदा किया और तेरा पालन-पोषण किया और हर समय कर रहा है उसका अधिकार है कि तू भी उसकी आज्ञापालन करे और यदि इससे अधिक तुझे विवेक हो तो न केवल हक को सम्मुख रखते हुए अपितु उपकार की पाबन्दी से उसकी आज्ञापालन कर, क्योंकि वह उपकार करने वाला है और उसके इतने उपकार हैं कि गिने नहीं जा सकते और स्पष्ट है कि न्याय की श्रेणी से बढ़कर वह श्रेणी है जिसमें आज्ञापालन के समय उपकार भी दृष्टिगत रहे। चूँकि हर समय उपकार का पढ़ना और उस पर विचार करना उपकार करने वाले के रंग-रूप को हमेशा दृष्टि के सामने ले आता है। इसलिए उपकार की परिभाषा में यह बात सम्मिलित है कि ऐसे तौर पर उपासना करे कि मानो खुदा तआला को देख रहा है। खुदा तआला की आज्ञा-पालन करने वाले लोग वस्तुतः तीन प्रकार के होते हैं :-

प्रथम :- वे लोग जो अज्ञानता और साधनों पर चिन्तन मनन न करने के कारण खुदा के उपकारों पर विचार नहीं करते और न वह जोश उनमें पैदा होता है जो उपकार की महानताओं पर विचार करके पैदा हुआ करता है और न वह प्रेम उनमें जोश मारता है जो उपकार करने वाले के बड़े-बड़े उपकारों को सोचकर गति पकड़ता है बल्कि केवल सरसरी तौर पर ख़ुदा तआला के स्रष्टा होने इत्यादि को मान लेते हैं और खुदा के उपकार के उन विवरणों को जिन पर एक गहन दृष्टि डालने से उस सच्चे उपकारी का चेहरा सामने आ जाता है कदापि नहीं देखते, क्योंकि साधनों पर ही पूरा भरोसा करने की सोच, साधन की उत्पत्ति करने वाले (अर्थात् खुदा) का पूरा चेहरा देखने से रोक देती है। इसलिए उनको

वह पवित्र अन्तर्ज्ञान नहीं मिलता जिससे पूर्ण तौर पर सच्चे दाता का सौन्दर्य देख सकते। अत: उनका अपूर्ण ज्ञान साधनों पर पूर्ण भरोसा करने के अन्धकार से मिला हुआ होता है और इसके कारण वे ख़ुदा के उपकारों को अच्छी तरह देख नहीं सकते और स्वयं भी उसकी तरफ वह ध्यान नहीं देते जो उपकारों को देखने के समय देना पड़ता है जिससे उपकार करने वाले का चेहरा सामने आ जाता है बल्कि उनका ज्ञान एक धुँधला सा होता है, जिसका कारण यह है कि वे कुछ तो अपनी मेहनतों और अपने साधनों पर भरोसा रखते हैं और कुछ बनावट के तौर पर यह भी मानते हैं कि हमें ख़ुदा तआला को स्रष्टा और अन्नदाता मानना अनिवार्य है। चूँकि ख़ुदा तआला इन्सान पर उसकी विवेकशक्ति से बढ़कर बोझ नहीं डालता इसलिए जब तक वे इस हालत में हैं उनसे यही चाहता है कि उसके अधिकारों का आभार प्रकट करें। और आयत :

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ

में अद्ल से तात्पर्य न्याय को ध्यान में रखते हुए, यही आज्ञापालन है। परन्तु इससे बढ़कर मनुष्य के ज्ञान की एक और श्रेणी है जो हम अभी वर्णन कर चुके हैं और वह यह है कि मनुष्य के चिन्तन मनन की आँख साधनों से पूर्णत: अलग होकर ख़ुदा तआला के रहम और उपकार के हाथ को देख लेती है और इस श्रेणी पर मनुष्य साधनों पर भरोसे की अज्ञानता से पूर्णत: बाहर आ जाता है और उदाहरणत: यह कथन कि मेरी अपनी सिंचाई से ही मेरी खेती हुई या मेरी अपनी ही शक्ति से यह सफलता मुझे मिली या अमुक व्यक्ति की मेहरबानी से मेरा अमुक उद्देश्य पूरा हुआ और अमुक की देखभाल से मैं तबाही से बच गया इत्यादि यह सारी बातें

व्यर्थ और झूठी मालूम होने लगती हैं। एक ही हस्ती और एक ही क़ुदरत और एक ही उपकार करने वाला और एक ही हाथ दिखाई देता है तब मनुष्य एक ऐसी पवित्र दृष्टि से जिसके साथ लेशमात्र भी साधनों पर भरोसे का अन्धविश्वास नहीं, ख़ुदा तआला के उपकारों को देखता है और यह चिंतन मनन ऐसा शुद्ध और विश्वसनीय होता है कि वह ऐसे उपकारी की इबादत करते समय उसको अनुपस्थित नहीं समझता बल्कि नि:सन्देह तौर पर उसको उपस्थित जानकर उसकी इबादत करता है और उस उपासना का नाम क़ुरआन शरीफ़ में इबादत है। हदीसों की किताब सही बुख़ारी और मुस्लिम में स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उपकार का यही अर्थ वर्णन किया है।

इस श्रेणी के बाद एक और श्रेणी है जिसका नाम **ईता'य ज़िलक़ुर्बा**[1] है और उसकी व्याख्या यह है कि जब मनुष्य एक लम्बी अवधि तक खुदा के उपकारों को साधनों के दख़ल

---

1. नोट - ईताय ज़िलक़ुर्बा का स्थान उपकारों पर निरन्तर चिन्तन-मनन करने से पैदा होता है और इस श्रेणी पर पहुँचकर उपासक के हृदय में स्रष्टा की मुहब्बत व्यापक रूप से पैदा हो जाती है और स्वार्थपरायणता की दुर्वृत्ति और उसकी बची-खुची आदत पूर्णत: दूर हो जाती है। वास्तविक्ता यह है कि व्यक्तिगत मुहब्बत की मुख्य स्रोत दो ही चीज़ें हैं :- (1) किसी के सौन्दर्य का अत्यधिक अध्ययन और उसके चेहरे के निशान बनावट और डीलडौल इत्यादि को हर समय ध्यान में रखना और उसके बारे में बार-बार सोचना।
(2) किसी के अनवरत उपकारों के बारे में अत्यधिक सोचना और उसकी भिन्न-भिन्न प्रकार की मुरव्वतों और उपकारों को ध्यान में लाते रहना और उन उपकारों की महानता अपने दिल में बिठाना।

के बिना देखता रहे और उसको उपस्थित और बिना किसी माध्यम के उपकार करने वाला समझकर उसकी इबादत करता रहे तो उस विचार और कल्पना का अन्तिम परिणाम यह होगा कि एक व्यक्तिगत प्रेम उसको खुदा तआला के बारे में पैदा हो जाएगा क्योंकि निरन्तर उपकारों को हमेशा देखते रहना एहसानमन्द व्यक्ति के दिल में अवश्य यह प्रभाव पैदा करता है कि वह धीरे-धीरे उस व्यक्ति की व्यक्तिगत मुहब्बत से भर जाता है जिसके अत्यधिक उपकारों से वह दब गया। अतएव इस दशा में वह केवल उपकारों को सोचकर उसकी इबादत नहीं करता बल्कि उसका व्यक्तिगत प्रेम उसके दिल में बैठ जाता है जिस तरह कि एक शिशु को अपनी माँ से एक व्यक्तिगत प्रेम होता है। अतः इस श्रेणी पर वह इबादत के समय खुदा तआला को केवल देखता ही नहीं बल्कि देखकर सच्चे प्रेमियों की तरह आनन्द भी उठाता है और समस्त स्वार्थपरताएँ दूर होकर एक व्यक्तिगत प्रेम उसके अन्दर पैदा हो जाता है और यह वह श्रेणी है जिसको खुदा तआला ने ईता'य ज़िल क़ुर्बा के शब्द से वर्णन किया है और उसी की ओर खुदा तआला ने इस आयत में संकेत किया है।

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ط [1]

(البقرہ، آیت ۲۰۱)

अतः आयत :-

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِى الْقُرْبٰى

(النحل، آیت ۹۱)

की यह व्याख्या है और इसमें खुदा तआला ने मनुष्य के

---

1. अनुवाद :- अल्लाह का स्मरण करो। जिस प्रकार तुम अपने पूर्वजों को स्मरण करते हो। (अनुवादक)

ज्ञान और आध्यात्म की तीनों श्रेणियाँ वर्णन कर दी हैं और तीसरी को व्यक्तिगत प्रेम की श्रेणी ठहराया है और यह वह श्रेणी है जिसमें समस्त स्वार्थपरताएँ भस्म हो जाती हैं और हृदय ऐसे प्रेम से भर जाता है जैसे कि एक शीशी सुगंध से भरी हुई होती है। इसी श्रेणी की ओर इस आयत में संकेत है :-

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ (البقرہ آیت۲۰۸)

अर्थात मोमिनों में से कुछ वे लोग भी हैं जो अपने प्राणों को अल्लाह की ख़ुशी पाने के बदले में बेच देते हैं और ख़ुदा ऐसों पर ही मेहरबान है।[1]

और फिर फ़रमाया :-

بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (البقرہ آیت۱۱۳)

अर्थात वे लोग मुक्ति पाने वाले हैं जो स्वयं को ख़ुदा के सुपुर्द कर दें और उसकी नेमतों को सोचकर इस तौर से उसकी इबादत करें कि मानो उसको देख रहे हैं। अत: ऐसे लोग ख़ुदा से प्रतिफल पाते हैं न उनको कोई डर होता है और न वे कुछ शोक करते हैं, अर्थात उनका उद्देश्य ख़ुदा और ख़ुदा के प्रेम को पाना होता है और ख़ुदा की नेमतें उनका प्रतिफल होती हैं। फिर एक जगह फ़रमाया :-

يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۔ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا

(الدھر، آیت۹،۱۰)

मोमिन वे हैं जो ख़ुदा की मुहब्बत पाने के लिए गरीबों,

---

1. प्राणों के बेचने में यह बात सम्मिलित है कि इन्सान अपनी ज़िन्दगी और अपने आराम को ख़ुदा का प्रताप प्रकट करने और धर्म की सेवा में अर्पित कर दे। - *उसी में से।*

अनाथों और क़ैदियों इत्यादि को खाना खिलाते हैं और कहते हैं कि इस खाना खिलाने से तुम से कोई बदला और कृतज्ञता नहीं चाहते और न हमारा कोई स्वार्थ है अपितु इन समस्त सेवाओं से केवल खुदा तआला को पाना हमारा उद्देश्य है। अब सोचना चाहिए कि इन समस्त आयतों से कितना स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि क़ुरआन शरीफ़ ने जप-तप और नेक आचार-व्यवहार की यही उच्च श्रेणी रखी है ताकि खुदा की मुहब्बत और उसकी प्रसन्नता पाने की अभिलाषा सच्चे दिल से प्रकट हो। परन्तु यहां **प्रश्न** यह है कि क्या यह अत्युत्तम शिक्षा जो बड़ी ही स्पष्टता से वर्णन की गई है इन्जील में भी मौजूद है? हम हर एक को यह विश्वास दिलाते हैं कि इस स्पष्टता और विस्तार से इन्जील ने कदापि वर्णन नहीं किया। खुदा तआला ने तो इस **धर्म** का नाम **इस्लाम** इस उद्देश्य से रखा है ताकि इन्सान खुदा तआला की इबादत स्वार्थ से नहीं अपितु स्वाभाविक जोश से करे, क्योंकि इस्लाम समस्त स्वार्थों को छोड़ देने के बाद खुदा के आदेश पर राज़ी रहने का नाम है। दुनिया में इस्लाम के अतिरिक्त ऐसा कोई धर्म नहीं जिसके यह उद्देश्य हों। नि:सन्देह खुदा तआला ने अपनी रहमत जतलाने के लिए मोमिनों को भिन्न-भिन्न प्रकार की नेमतों के वादे दिए हैं परन्तु मोमिनों को जो श्रेष्ठ स्थान पाने के इच्छुक हैं उनको यही शिक्षा दी है कि वे व्यक्तिगत मुहब्बत से खुदा तआला की इबादत करें। लेकिन इन्जील में तो स्पष्ट गवाहियाँ मौजूद हैं कि आप के यीशू साहिब के हवारी (सहचर) लालची और मन्दबुद्धि थे। अत: जैसी उनकी बुद्धि और हिम्मतें थीं वैसी ही उनको हिदायत भी मिली और ऐसा ही यीशू भी उनको मिल गया। जिसने अपनी आत्महत्या का धोखा देकर सीधे-सादे लोगों को इबादत करने से रोक दिया।

अगर कहो कि इन्जील ने यह सिखलाकर कि ख़ुदा को बाप कहो, व्यक्तिगत प्रेम की ओर संकेत किया है तो इसका उत्तर यह है कि यह विचार पूर्णतया ग़लत है क्योंकि इन्जीलों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि मसीह ने ख़ुदा के बेटे का शब्द दो तौर पर प्रयोग किया है।

1. यह कि मसीह के समय में यह पुरानी रस्म थी कि जो व्यक्ति दया और नेकी के कार्य करता और लोगों से सुशीलता और उपकार का व्यवहार करता तो वह खुले तौर पर कहता कि मैं ख़ुदा का बेटा हूँ और इस शब्द से उसकी यह नीयत होती थी कि जैसे ख़ुदा अच्छों और बुरों दोनों पर दया करता है और उसके सूरज, चाँद और वर्षा इत्यादि से समस्त बुरे और भले लाभ उठाते हैं। उसी तरह आमतौर पर नेकी करना मेरी आदत है। लेकिन अन्तर इतना है कि ख़ुदा तो इन कामों में बड़ा है और मैं छोटा हूँ। इसलिए इन्जील ने भी इस दृष्टि से ख़ुदा को बाप ठहराया कि वह बड़ा है और दूसरों को यह नीयत करके बेटा ठहराया कि वे छोटे हैं परन्तु मूल बात में ख़ुदा के बराबर ठहराया अर्थात मात्रा में कम ज़्यादा को मान लिया परन्तु कैफ़ीयत में बाप बेटा एक रहे और यह एक गुप्त शिर्क था इसलिए पूर्ण और व्यापक किताब अर्थात क़ुरआन शरीफ ने इस तरह की बोल-चाल को जाइज़ नहीं रखा। यहूदियों में जो अपरिपक्व हालत में थे वैध था और उन्हीं के अनुसरण से यीशू ने अपनी बातों में वर्णन कर दिया। अत: इन्जील में अधिकांश स्थानों पर इसी प्रकार के संकेत पाए जाते हैं कि ख़ुदा की तरह दया करो, ख़ुदा की तरह सुलह करने वाले बनो, ख़ुदा की तरह दुश्मनों से भी ऐसी ही भलाई करो जैसा कि मित्रों से तब तुम ख़ुदा के बेटे कहलाओगे क्योंकि उसके काम से तुम्हारा काम मिलता-जुलता

होगा। केवल इतना अन्तर रहा कि वह बड़ा बाप के समकक्ष खुदा और तुम छोटे, बेटे के समकक्ष ठहरे। अतः यह शिक्षा वस्तुतः यहूदियों की किताबों से ली गई थी इसीलिए यहूदियों का अभी तक यह आरोप है कि यह चोरी की हुई बातें हैं, बाइबल से चुराकर यह बातें इंजील में लिख दीं। बहरहाल यह शिक्षा एक तो त्रुटिपूर्ण है और दूसरे यह कि इस तरह का बेटा खुदा के व्यक्तिगत प्रेम से कुछ संबंध नहीं रखता।

2. दूसरी प्रकार के बेटे का इन्जील में एक निरर्थक वर्णन है जैसा कि यूहन्ना बाब 10 आयत 34 में है अर्थात इस पाठ में बेटा तो एक तरफ अपितु हर एक को चाहे वह कैसा ही दुष्चरित्र हो, खुदा बना दिया है और प्रमाण यह प्रस्तुत किया है कि लिखे हुए लेखों का झूठा होना संभव नहीं। अतएव इन्जील ने निर्जी अनुसरण से अपनी क़ौम का एक मशहूर शब्द ले लिया है। इसके अतिरिक्त यह बात स्वतः ग़लत है कि ख़ुदा को बाप ठहराया जाय और इससे अधिक मूर्ख और अशिष्ट कौन होगा कि बाप का शब्द खुदा तआला पर चरितार्थ करे। अतएव हम इस बहस को खुदा तआला की कृपा से किताब ''मिननुर्रहमान'' में विस्तारपूर्वक वर्णन कर चुके हैं। उससे आप पर सिद्ध होगा कि खुदा तआला पर बाप का शब्द चरितार्थ करना अत्यन्त गन्दा और अपवित्र ढंग है। इसी कारण से क़ुरआन करीम ने समझाने के लिए यह तो कहा कि ख़ुदा तआला को ऐसे प्रेम से याद करो जिस तरह कि बापों को याद करते हो, परन्तु यह कहीं नहीं कहा कि सचमुच खुदा तआला को बाप समझ लो।

इन्जील में एक और कमी यह है कि उसने यह शिक्षा किसी जगह नहीं दी कि इबादत करने के समय इबादत का सबसे अच्छा ढंग यही है कि स्वार्थपरताओं को बीच से खत्म

कर दिया जाए। बल्कि अगर कुछ सिखलाया तो केवल रोटी मांगने के लिए दुआ सिखलाई। क़ुरआन ने तो हमें यह दुआ सिखलाई कि :-

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ

(الفاتحہ، آیت ۶،۷)

अर्थात हमें उस मार्ग पर क़ायम कर जो नबियों और सिद्दीकों (सत्यवादियों) और ख़ुदा के प्रेमियों का मार्ग है। परन्तु इन्जील यह सिखाती है कि हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे। हमने सारी इन्जील पढ़कर देखी इसमें इस श्रेष्ठ शिक्षा का नामोनिशान नहीं।

पाँचवाँ ऐतिराज़ :- मुहम्मद साहब की एक परायी औरत पर नज़र पड़ी तो आपने घर में आकर अपनी पत्नी सौदः से संभोग किया। अतः जो व्यक्ति परायी औरत को देखकर अपने जोश को तब तक काबू नहीं रख सकता जब तक अपनी पत्नी से संभोग न कर ले और अपनी कामवासना को पूरा न करे, तो वह व्यक्ति सर्वांगपूर्ण कैसे हो सकता है?

उत्तर :- मैं कहता हूँ कि ऐतिराज़ करने वाले ने जिस हदीस के उलटे अर्थ समझ लिए हैं वह हदीस सही मुस्लिम नामक किताब में दर्ज है और उसके शब्द यह हैं :-

عَنۡ جَابِرٍ اَنَّ رَسُوۡلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ رَاٰى امۡرَاَةً فَاَتٰى امراته زینب وھی تمعس مَنِيَّةً لَهَا فَقَضٰى حَاجَتَهٗ۔

इस हदीस में सौदः का कहीं नाम नहीं और हदीस का अर्थ यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक औरत को देखा। फिर अपनी पत्नी ज़ैनब के पास आए और वह चमड़े को मालिश कर रही थी। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी आवश्यकता पूरी की। अब देखो कि हदीस में इस बात का नामोनिशान तक नहीं कि आँहज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उस औरत की खूबसूरती पसन्द आई। बल्कि यह भी वर्णन नहीं कि वह औरत जवान थी या बूढ़ी थी और यह भी सिद्ध नहीं होता कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आकर अपनी पत्नी से संभोग किया। हदीस के शब्द केवल इस तरह हैं कि उससे अपनी आवश्यकता को पूरा किया, और अरबी शब्द ''क़ज़ा हाजतहू'' अरबी शब्दकोश के अनुसार संभोग से विशेष नहीं है। क़ज़ा-ए-हाजत मल त्याग करने को भी कहते हैं और कई अर्थों के लिए भी प्रयुक्त होता है। यह कहाँ से ज्ञात हुआ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी पत्नी से संभोग ही किया था। एक साधारण शब्द को किसी विशेष अर्थ में सीमित करना खुली-खुली दुष्टता है। इसके अतिरिक्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुँह से यह बात वर्णित नहीं कि मैंने एक औरत को देखकर अपनी पत्नी से संभोग किया। असल वास्तविकता केवल इतनी है कि हदीस की मुस्लिम नामक किताब में जाबिर नामक व्यक्ति से एक हदीस वर्णित है जिसका अनुवाद यह है कि अगर तुम में से कोई व्यक्ति किसी औरत को देखे और वह उसकी दृष्टि में खूबसूरत मालूम हो तो अच्छा है कि तुरन्त घर में आकर अपनी पत्नी से संभोग कर ले ताकि दिल में भी कोई कुविचार न पैदा होने पाए और पहले से बचने का इलाज हो जाए। अतः संभव है कि किसी सहाबी (सहचर) ने इस हदीस के सुनने के बाद यह देखा हो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रास्ते में कोई जवान औरत सामने आ गई और फिर उसको यह भी मालूम हो गया कि उस समय के आस-पास ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने संयोगवश अपनी पत्नी से संभोग किया तो उसने उस संयोग पर अपनी सोच

से अपने गुमान में ऐसा ही समझ लिया हो कि इस हदीस के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी व्यवहार किया।

फिर अगर मान भी लें कि सहाबी (सहचर) का वह कथन सच था तो इससे कोई दुष्परिणाम निकालना किसी बुरे और दुष्ट आदमी का काम है बल्कि असल बात तो यह है कि नबी इस बात पर बड़े उत्सुक होते हैं कि हर एक नेकी और संयम के काम को व्यवहारिक तौर पर लोगों के दिलों में बिठा दें। अतएव कभी-कभी वे छोटे मोटे तौर पर कोई ऐसा नेकी और संयम का काम भी करते हैं जिसमें केवल व्यवहारिक आदर्श दिखाना उद्देश्य होता है और उनके अस्तित्व को उसकी कुछ भी ज़रूरत नहीं होती। जैसा कि हम क़ानून-ए-क़ुदरत के आईने में यह बात पशु पक्षियों में भी देखते हैं कि एक मुर्गी केवल दिखावे के तौर पर अपनी चोंच दाना पर इस उद्देश्य से मारती है कि अपने बच्चों को सिखाए कि इस तरह दाना ज़मीन से उठाना चाहिए। इसलिए व्यवहारिक आदर्श दिखाना एक दक्ष उस्ताद के लिए आवश्यक होता है और उस्ताद का हर एक काम उसके दिल की हालत की कसौटी नहीं होता। इसके अतिरिक्त अगर एक खूबसूरत पर अचानक नज़र पड़ जाए तो उसको खूबसूरत समझना वस्तुतः कोई दोष की बात नहीं। हाँ कुविचार पूर्णतः पवित्रता के विपरीत हैं। लेकिन जो व्यक्ति बुरे विचार पैदा होने से पहले बचाव के तौर पर संयम के मार्गों को अपनाए जिसके कारण कुविचार पैदा होने से बचा रहे तो क्या ऐसा काम खूबी के विपरीत होगा। यह शिक्षा क़ुरआन करीम की अत्युत्तम है कि :-

اِنَّ اَکۡرَمَکُمۡ عِنۡدَ اللّٰہِ اَتۡقٰکُمۡ (الحجرات، آیت ۱۴)

अर्थात जितना कोई तक़्वा (संयम) की बारीक राहों

को अपनाता है उतना ही ख़ुदा तआला के निकट उसका ऊँचा स्थान होता है। अत: नि:सन्देह यह तक़्वा (संयम) का सर्वोत्तम स्थान है कि कुविचार पैदा होने से पहले ही कुविचारों से बचे रहने का उपाय किया जाए।

इसके अतिरिक्त यदि यह दावा हो कि नबी हर हाल में कुविचारों से बचे रहते हैं उनको बचने के लिए उपाय की आवश्यकता नहीं, तो यह दावा पूर्णतया मूर्खता और ज्ञान की कमी के कारण से होगा क्योंकि नबी किसी पाप और अवज्ञा पर एक सेकेन्ड के लिए भी दिल से इरादा नहीं कर सकते, और ऐसा करना उनके लिए बड़े पापों की तरह है। लेकिन इन्सानी शक्तियाँ अपने गुण उनमें भी दिखला सकती हैं यद्यपि वे कुविचारों पर क़ायम रहने से पूर्णत: बचाए गए हैं। उदाहरणतया अगर एक नबी अत्यधिक भूखा हो और मार्ग में वह फलों से लदे हुए कुछ पेड़ देखे तो यह तो हम मानते हैं कि वह मालिक की इजाज़त के बिना फलों की तरफ हाथ नहीं बढ़ाएगा और न दिल में उन फलों को तोड़ने के लिए हिम्मत करेगा। लेकिन यह विचार उसको आ सकता है कि अगर यह फल मेरी जायदाद में से होते तो मैं इनको खा सकता और यह विचार खूबी के उलट नहीं। आपको याद होगा कि आपके ख़ुदा साहिब थोड़ी सी भूख के प्रकोप पर सब्र न करके किस तरह अंजीर के पेड़ की ओर दौड़े चले गए। क्या आप सिद्ध कर सकते हैं कि यह पेड़ उनका या उनके पिता जी की सम्पत्ति में से था। अत: जो व्यक्ति दूसरे के पेड़ को देखकर अपने आप को नियंत्रण में न रख सका और पेट भरने के लिए उसकी ओर दौड़ा गया, वह ख़ुदा तो क्या बल्कि आपके कथनानुसार अच्छा इन्सान भी नहीं।

सारांश यह कि किसी के दिल में यह विचार आना कि

यह चीज़ सुन्दर है यह एक अलग विषय है। जिसको ख़ुदा ने आँखें दी हैं जिस तरह वह काँटे और फूल में अन्तर कर सकता है उसी तरह वह सुरूप और कुरूप में भी अन्तर कर सकता है। आपके ख़ुदा साहिब को शायद यह विवेचन-शक्ति प्रकृति से नहीं मिली होगी। परन्तु पेट की भूख मिटाने के लिए तो अंजीर के पेड़ की तरफ दौड़े और यह भी न सोचा कि यह किस का अंजीर है।

आश्चर्य है कि एक शराबी खाऊ पीऊ को इच्छाओं का ग़ुलाम न कहा जाए और उस पवित्र इन्सान को जिसकी ज़िन्दगी और हर एक काम ख़ुदा के लिए था उसका नाम इस युग के दुष्प्रकृति लोग इच्छाओं का ग़ुलाम रखें अजीब अन्धकार का युग है। यह इस्लाम की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा का एक नमूना है कि कदापि इरादे से किसी औरत की ओर आँख उठाकर न देखो क्योंकि यही कुदृष्टि की प्रस्तावना है और यदि सहसा किसी ख़ूबसूरत औरत पर दृष्टि पड़े और वह ख़ूबसूरत लगे तो अपनी औरत से संभोग करके उस विचार को निकाल दो। अच्छी तरह याद रखो कि यह शिक्षा और यह आदेश पहले से बचाव के लिए है। उदाहरण के तौर पर जो व्यक्ति हैज़ा के दिनों में हैज़ा से बचने के लिए पहले से बचाव के तौर पर कोई दवा लेता है तो क्या यह कह सकते हैं कि उसे हैज़ा हो गया है या हैज़ा के लक्षण उसमें प्रकट हो गए हैं बल्कि यह बात उसकी बुद्धिमानी में गिनी जाएगी और समझा जाएगा कि वह इस बीमारी से स्वभावत: नफरत करता है और उससे दूर रहना चाहता है। इस बात में आपके साथ कोई सहमत नहीं होगा कि संयम के मार्गों को अपनाना ख़ूबी के उलट है। अगर नबी संयम का नमूना न दिखलावें तो और कौन दिखलाए। जो भक्ति में सबसे बढ़कर होता है वही सबसे

बढ़कर संयम भी अपनाता है। वह बुराई से अपने आपको दूर रखता है, वह उन मार्गों को छोड़ देता है जिसमें बुराई का अन्देशा होता है। किन्तु आपके यीशू साहिब के बारे में क्या कहें और क्या लिखें और कब तक उनके हाल पर रोएं। क्या यह उचित था कि वह एक व्यभिचारिणी को यह अवसर देता कि वह ठीक जवानी और सुन्दरता की अवस्था में नंगे सिर उससे चिपक कर बैठती और बड़े ही नाज़-व-नख़रे से उसके पाँव पर अपने बाल मलती और हरामकारी के तेल से उसके सिर पर मालिश करती। अगर यीशू का दिल कुविचारों से रहित होता तो वह एक वैश्या को निकट आने से अवश्य मना करता, पर ऐसे लोगों को वैश्याओं के छूने से मज़ा आता है। वह ऐसी इच्छाओं के मौके पर किसी नसीहत करने वाले की नसीहत भी नहीं सुना करते। देखो यीशू को एक स्वाभिमानी बुज़ुर्ग ने नसीहत के इरादे से रोकना चाहा कि ऐसी हरकत करना उचित नहीं परन्तु यीशू ने उसके चेहरे की नाराज़गी से समझ लिया कि मेरी इस हरकत से यह व्यक्ति विमुख है तो शराबियों की तरह ऐतिराज़ को बातों में टाल दिया और दावा किया कि यह वैश्या बड़ी सच्ची और स्वार्थहीन मित्र है। ऐसा सच्चा और स्वार्थहीन प्रेम तो तुझ में भी नहीं पाया गया। सुब्हानल्लाह यह क्या ही बढ़िया उत्तर है। यीशू साहिब एक व्यभिचारिणी की प्रशंसा कर रहे हैं कि बड़ी ही सदाचारिणी है। **दावा ख़ुदाई का और काम ऐसे**। भला जो व्यक्ति हर समय शराब से पूरी तरह मस्त रहता है और वैश्याओं से मेल जोल रखता है और खाने पीने में भी ऐसा पहले नम्बर का कि लोगों में उसका नाम ही यह पड़ गया कि यह खाऊ पीऊ है। उससे किस संयम और सदाचार की आशा हो सकती है। हमारे सैयद व मौला अफ़ज़लुल अंबिया ख़ैरुल अस्फ़िया मुहम्मद

मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का संयम देखिए कि उन औरतों के हाथ से भी हाथ नहीं मिलाते थे जो पाकदमन और सदाचारिणी होती थीं और दीक्षित होने के लिए आती थीं, बल्कि दूर बिठाकर केवल मौखिक रूप से तौबा करने का आदेश दिया करते थे परन्तु कौन बुद्धिमान और संयमी ऐसे व्यक्ति को दिल का साफ समझेगा जो जवान औरतों के छूने से परहेज़ नहीं करता। एक खूबसूरत वैश्या ऐसे निकट बैठी है मानो बग़ल में है, कभी हाथ लम्बा करके सिर पर इत्र मल रही है कभी पैरों को पकड़ती है और कभी अपने सुन्दर और काले बालों को पैरों पर रख देती है और गोद में तमाशा कर रही है यीशू साहिब इस हालत में मस्ती में बैठे हैं और कोई ऐतिराज़ करने लगे तो उसको झिड़क देते हैं और आश्चर्य यह कि उम्र जवान और शराब पीने की आदत और फिर कुँवारा और एक खूबसूरत वैश्या सामने पड़ी है शरीर के साथ शरीर लगा रही है। क्या यह नेक आदमियों का काम है और इस पर क्या प्रमाण है कि उस वैश्या के छूने से यीशू की काम-पिपासा ने जोश नहीं मारा था। अफ़सोस कि यीशू के पास यह भी नहीं था कि उस वैश्या पर दृष्टि डालने के बाद अपनी किसी पत्नी से संभोग कर लेता। नीच व्यभिचारिणी के छूने से और नाज़-व-अदा करने से क्या-क्या काम-वासना के मनोभाव पैदा हुए होंगे और काम पिपासा के जोश ने पूरे तौर पर काम किया होगा। इसी कारण से यीशू के मुँह से यह भी न निकला कि हे व्यभिचारिणी औरत मुझ से दूर रह, और यह बात इन्जील से सिद्ध होती है कि वह औरत वैश्याओं में से थी और व्यभिचार में सारे शहर में मशहूर थी।

सातवाँ ऐतिराज़ :- मुतअ: का जाइज़ करना और फिर नाजाइज़ करना।

उत्तर :- मूर्ख ईसाइयों को ज्ञात नहीं कि इस्लाम ने मुतअ: को प्रचलित नहीं किया। बल्कि जहाँ तक संभव था उसको संसार में से कम किया। इस्लाम से पहले केवल अरब ही में नहीं अपितु दुनिया की अधिकतर क़ौमों में मुतअ: की प्रथा थी। जिसका अर्थ यह है कि एक निश्चित अवधि के लिए अनुबंधित विवाह करना फिर तलाक दे देना। इस प्रथा को फैलाने वाले कारणों में से एक यह भी कारण था कि जो लोग फौजों में शामिल होकर दूसरे देशों में जाते थे या व्यापार के तौर पर एक अवधि तक दूसरे देश में रहते थे उनको **अस्थायी विवाह** अर्थात **मुतअ:** की आवश्यकता पड़ती थी और कभी यह भी कारण होता कि दूसरे देश की औरतें पहले से कह देती थीं कि वह साथ जाने पर राज़ी नहीं। इसलिए इसी नीयत से विवाह होता था कि अमुक तिथि को तलाक़ दी जाएगी। अत: यह सच है कि एक बार या दो बार इस प्राचीन रस्म के अनुसार इस्लाम के प्रारम्भिक काल में कुछ मुसलमानों ने भी व्यवहार किया[1] परन्तु ईशवाणी से नहीं बल्कि जो क़ौम में प्राचीन रस्म-व-रिवाज था कुछ हद तक उसी का अनुसरण कर लिया। लेकिन मुतअ: में इसके अतिरिक्त और कोई बात नहीं कि वह एक निर्धारित तिथि तक विवाह होता है और ईशवाणी ने अन्तत: उसको हराम कर दिया। अतएव हम किताब **आर्य: धर्म** में इसकी व्याख्या लिख चुके हैं परन्तु आश्चर्य है कि ईसाई लोग क्यों मुतअ: का वर्णन करते हैं जो केवल एक अस्थायी विवाह है अपने यीशू के चाल चलन को क्यों नहीं देखते कि वह ऐसी जवान औरतों पर दृष्टि डालता है जिन पर दृष्टि डालना उसको उचित न

1. नोट :- यह व्यवहार अत्यन्त बेचैनी के समय था जैसे कि भूख से मरने वाला मुर्दा खा ले।

था। क्या उचित था कि एक वैश्या के साथ वह बैठता? काश यदि वह मुतअः का ही पाबन्द होता तो इन हरकतों से बच जाता। क्या यीशू की बुज़ुर्ग दादियों और नानियों ने मुतअः किया था या खुला-खुला व्यभिचार था? हम ईसाई साहिबों से पूछते हैं कि जिस धर्म में न मुतअः वैध है और न पुनर्विवाह, उस धर्म के फौजी लोग पौरुष शक्ति की रक्षा के कारण को ध्यान में रखते हुए कुँवारा जीवन भी नहीं व्यतीत कर सकते बल्कि कामवासना को जोश देने वाली शराबें पीते हैं और बढ़िया से बढ़िया भोजन करते हैं ताकि फौजी कामों के करने में चुस्त और चालाक रहें। जैसे अंग्रेज़ों की फ़ौजें, वह किस तरह दुष्कर्मों से अपने आपको बचा सकती हैं और उनके संयम की रक्षा के लिए इन्जील में क्या क़ानून है और यदि कोई कानून था और इन्जील में ऐसे कुँवारों का कुछ इलाज लिखा था तो फिर क्यों अंग्रेज़ी गवर्नमेन्ट ने छावनी एक्ट नम्बर 13/1889 ई. जारी करके यह प्रबन्ध किया कि अंग्रेज़ सिपाही वैश्याओं के साथ व्यभिचार किया करें। यहाँ तक कि सर जार्ज राइट साहिब कमान्डर इन चीफ फ़ौज-ए-हिन्द ने अपने अधीनस्थ अधिकारियों को आदेश दिया कि खूबसूरत और जवान औरतें अंग्रेज़ों के व्यभिचार के लिए उपलब्ध की जाएँ। यह स्पष्ट है कि यदि ऐसी ज़रूरतों के समय जिन्होंने अधिकारियों को इन लज्जाजनक आदेशों के लिए विवश किया उनसे बचने के लिए इंजीलों में कोई दूरदर्शिता होती तो वे उचित उपाय को छोड़कर अनुचित उपायों को अपने बहादुर सिपाहियों में प्रचलित न करते। इस्लाम में एक से अधिक विवाह की हितों ने हर एक युग में सम्राटों को उन अनुचित उपायों से बचा लिया। इस्लामी सिपाही विवाह करके अपने आप को व्यभिचार से बचा लेते हैं यदि पादरी साहिबान के

पास व्यभिचार से बचाने के लिए इन्जील के कोई गुप्त उपाय हैं, तो उस उपाय से गवर्नमेन्ट को रोक दें क्योंकि अखबार टाइम्स ने अब फिर जोर-शोर से उस कानून को पुनः जारी करने के लिए तहरीक की है। यह सारी बातें इस बात पर गवाह हैं कि इन्जील की शिक्षा अधूरी है और उसमें रहन-सहन और आचार-व्यवहार के हर एक दृष्टिकोण को दृष्टिगत नहीं रखा गया। शेष फिर। इन्शाअल्लाह

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

अज़्दुद्दीन, बछरायूँ का एक पत्र

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ عَلٰی مَا مَضٰی وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ علٰی ما بقی والصّلٰوۃ وَالسَّلَامُ علٰی مُحَمَّدٍ خَیۡرِ الورٰی وَاَھۡلَ بَیۡتِ الۡمُصۡطَفٰی وعلی المؤمنین بنبیّہ المجتبٰی۔

इस्लाम के प्रेमियों पर स्पष्ट हो कि इस समय महान इमाम मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी द्वारा भेजी हुई नूरुल हक़ नामक एक किताब मेरे पास पहुँची, उसको मैंने पढ़ा और मुहम्मद हुसैन बटालवी से संबंधित भी कुछ लेख दृष्टि से गुज़रे। जिनको देखकर बड़ा दु:ख हुआ कि इस समझ बूझ और प्रसिद्ध होने और कुछ समय तक मिर्ज़ा साहिब की क़दमबोसी प्राप्त करने और प्रशंसक होने के बावजूद भी अचानक ऐसे फिरे कि कुफ़्र तक नौबत पहुँचा दी (ببیں تفاوت راہ از کجاست تا بکجا[1]) हालाँकि युग की भी हालत शीशे की तरह स्पष्ट हो रही है और देख रहे हैं कि दज्जाल क़ौम पूर्णतया दज्जालियत कर रही है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कथन सच होता जाता है और इस पर भी हर फिरऔन के लिए एक मूसा का मतलब नहीं समझते और कैसे समझ सकते हैं? जब अल्लाह तआला ने कह दिया कि

خَتَمَ اللّٰہُ عَلٰی قُلُوۡبِہِمۡ وَعَلٰی سَمۡعِہِمۡ ۔ وَعَلٰۤی اَبۡصَارِہِمۡ غِشَاوَۃٌ ۔[2]

(البقرہ،آیت،۸)

यहां पर खुदा की कुदरत नज़र आती है कि जिसको पथभ्रष्ट ठहराना हो तो ऐसे कारण पैदा कर देता है कि जिन बातों को गवेषी विद्वान रहस्य ठहराते थे यह साहिब उनको कुफ़्र समझते हैं। युग के हालात को भूल जाते हैं। आज जो हज़रत

1. देखो राह का अन्तर कहाँ से कहाँ तक है? (अनुवादक)
2. अनुवाद :- अल्लाह ने उनके दिलों और कानों को बन्द कर दिया है और उनकी आंखों पर पर्दा पड़ा हुआ है। (अनुवादक)

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झण्डा लहरा रहा है और उसके धर्म को ज़िन्दा कर रहा है। हमारा सहायक और मददगार हो रहा है, हमारे धर्म विरोधियों को पराजित कर रहा है और दैवीय चमत्कार दिखाने का जो आजकल कोई दिखा नहीं सकता, दावा कर रहा है और विद्वान भी है उस पर कुफ़्र के फ़त्वे लगाते हैं। खेद है उन लोगों पर जो ऐसी विचाराधारा रखते हैं। इस युग में विज्ञान वालों के निकट चमत्कार कोई चीज़ नहीं। नास्तिक पंथ को देख लीजिए यह अजीब ढंग का निकला है कि जिस समय ऐसी बहस होती है तो तुरन्त कह देते हैं कि अगर चमत्कार को मानता है तो कोई नहीं करके दिखलाए। ख़ुदा न करे अगर चमत्कार या निशान महत्वहीन (तुच्छ) समझे जाते हैं तो इसका दुष्प्रभाव कहाँ तक पहुँचता है। यह शुक्र का स्थान था कि हमारी नाव जो भँवर में चकरा रही थी उसको एक मल्लाह ने आकर निकाल लिया, उसको स्वीकार करते, न कि उस पर झूठ और धोखे का आरोप लगाते। इस समय यह बन्दा कहता है कि जैसा मुझ को ज्ञात हुआ है और वह सत्य है तो निःसन्देह महान इमाम मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब समय के **मुजद्दिद** (सुधारक) हैं और मैं बड़ी उत्सुकता से उनके दर्शन का अभिलाषी हूँ और रात-दिन अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि अगर मिर्ज़ा साहब को तूने सत्य पर भेजा है तो मुझको भी उनके दर्शन का सौभाग्य प्रदान कर और मोमिनों की उसी जमाअत में गिना जाऊँ। मैं पहले दुविधा में था अब सच्चे प्रमाण ज्ञात करने के बाद निःसन्देह कहता हूँ कि जो मैंने लिखा है सब सही और सत्य है और मैं उन्हें सच्चा मुजद्दिद (सुधारक) समझता हूँ। वस्सलाम

लेखक
अज़्दुद्दीन
बछरायूँ, ज़िला मुरादाबाद

उन लोगों के नाम जो आजकल हज़रत इमाम-ए-कामिल की सेवा में उपस्थित हैं :-

1. हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब भैरवी।
2. हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब भैरवी।
3. मौलवी क़ुतुबुद्दीन साहिब बदोमल्ली।
4. साहिबज़ादा इफ़्तिख़ार अहमद साहिब लुधियाना।
5. साहिबज़ादा मन्ज़ूर मुहम्मद साहिब लुधियाना।
6. मौलवी इनायतुल्लाह साहिब अध्यापक मानावाला, ज़िला गुजरांवाला।
7. क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब क़ाज़ीकोटी ज़िला गुजरांवाला।
8. खलीफा नूरुद्दीन साहिब जम्मू।
9. सय्यद नासिर नवाब साहिब देहलवी।
10. शेख अब्दुर्रहीम साहिब।[1]

---

1. हाशिया :- शेख अब्दुर्रहीम साहिब नेक युवा और संयमी व्यक्ति हैं। उनके ईमान और इस्लाम पर हमें भी गर्व पैदा होता है। इस्लाम लाने के समय उनको कई बड़ी आज़माइशों से सामना करना पड़ा लेकिन उन्होंने ऐसी कठिन मुसीबतों के समय बड़ी धैर्य और दृढ़ता दिखाई कि केवल ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए दफ़ादारी की नौकरी छोड़कर क़ादियान में इमाम कामिल के हाथ पर इस्लाम स्वीकार करते हुए बैअत की। क़ुरआन शरीफ से बड़ा प्रेम है हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब से कुछ महीनों के अन्दर क़ुरआन शरीफ अनुवाद और व्याख्या सहित पढ़ा। शेख अब्दुल्लाह साहिब सदाचारी युवक हैं हिदायत और संयम के लक्षण उनके चेहरे से प्रकट होते हैं। जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया तो कई आज़माइशें आईं। उनमें से एक यह है कि लेखराम आर्य से कई बार मुबाहसा (शास्त्रार्थ) हुआ अन्ततः लेखराम को उन्होंने खुले तौर पर

11. शेख अब्दुल अज़ीज़ साहिब।
12. हाजी वरियाम साहिब खुशाबी।
13. सनाउल्लाह साहिब खुशाबी।
14. मौलवी ख़ुदा बख़्श साहिब जालन्धरी।
15. अब्दुल करीम साहिब खुशनवीस।
16. शेख गुलाम मुहीउद्दीन साहिब बुकसेलर जेहलमी।
17. शेख हामिद अली साहिब।
18. मिर्ज़ा इस्माईल साहिब क़ादियानी।
19. सय्यद मुहम्मद कबीर देहलवी।
20. खुदा बख़्श साहिब माड़वी ज़िला झंग।
21. हाजी हाफ़िज़ अहमदुल्लाह खाँ साहिब।
22. हाफ़िज़ मुईनुद्दीन साहिब।
23. मौलवी ग़ुलाम अहमद साहिब खुबुक्की।

पराजित किया। चूँकि आर्य थे और उस अपवित्र शिक्षा को छोड़कर बड़े ज़ोर शोर से इस्लाम स्वीकार किया और युग के इमाम से बैअत की। मुझसे यह कहते थे कि किताब ''इज़ाला औहाम'' के पढ़ने से मुझे इस्लाम का शौक पैदा हुआ और जब आथम से संबंधित भविष्यवाणी जो आथम के ख़ुदा की ओर झुकाव या मौत से संबंधित थी, उसका ख़ुदा की ओर झुकना और मौत से बचना, पूरी हो गई तो सच्चे दिल से इस्लाम स्वीकार कर लिया और युग के इमाम की पहचान मिली। समस्त प्रशंसा अल्लाह की है - सिराजुल हक़

नोट :- अभी थोड़ा ही समय गुज़रा है कि शेख अब्दुल अज़ीज़ साहिब ने भी क़ादियान में आकर इस्लाम स्वीकार किया है। सदाचारी आदमी हैं। इस जवानी में नेकी हासिल होना केवल ख़ुदा तआला की कृपा है। उनके अतिरिक्त और भी कई लोग मुसलमान हुए। चार ईसाई भी मुसलमान हुए जो अब वे लाहौर में मौजूद हैं - सिराजुल हक़

24. हाफ़िज़ क़ुतुबुद्दीन साहिब कोटला फक़ीर जेहलम।

25. मौलवी सय्यद मरदान अली साहिब हैदराबादी।

26. मौलवी शेख अहमद साहिब।

27. मिर्ज़ा अय्यूब बेग़ साहिब।

28. विनीत सिराजुल हक़ और शेख फ़ज़्ल इलाही कलानौरी।

स्व. हज़रत अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी का शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी के बारे में एक कश्फ

जिसको जनाब काज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब निवासी काज़ीकोट ज़िला गुजराँवाला ने अपने कानों से सुना और शेख साहिब की ओर केवल अध्यात्म शुद्धि के लिए लिखकर भेजा। अत: उसे हम इस किताब में लिखते हैं। यद्यपि शेख साहिब के बारे में हमारा विश्वास है कि वह इससे सचेत होने वाले नहीं लेकिन हम उनके कुछ सहपंथी और मित्रों पर एक प्रकार की सुधारणा रखते हैं कि वे इससे फायदा उठाएँगे और अल्लाह ही सामर्थ्य देने वाला है। वह कश्फ निम्नलिखित है।

विनीत
सिराजुल हक़ नु'मानी

هُوَ الْهَادِیْ بِسْمِ اللہ الرحمٰن الرحیم۔ نحمدہ ونصلّی

आदरणीय मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब, मुलाकात की खुशी के पश्चात् वह बात यह है कि यह जो आजकल आप हज़रत मसीह मौऊद मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी जिनको आप पहले युग के सुधारक मान चुके हैं, उनके प्रति कुफ़्र का फत्वा देने और अपमान करने के संबंध में बड़ी तन्यमता से लगे हैं और यहाँ तक प्रयासरत हैं कि आपने अपने इशाअतुस्सुन्ना में लिखे हुए लेख ''कुफ़्र और काफ़िर'' की भी परवाह नहीं की। जिसके दुर्भाग्य से अब स्पष्ट तौर पर बुरे अन्त के लक्षण प्रकट हैं। आपकी इस हालत को देखकर विनीत का दिल मानवजाति की हमदर्दी की दृष्टि से पिघल

गया। अत: ''अद्दीनुन् नसीहत'' के आदेश के अनुसार मैंने चाहा कि ख़ुदा के वास्ते आपको इस बुरी आदत से आगाह करूँ शायद अल्लाह तआला जो बड़ा दयालु और कृपालु है, दया करे और इस बारे में स्व. अब्दुल्लाह गज़नवी का यह एक इल्हाम है जो आपके बारे में उनको हुआ था और उन्हीं दिनों में आपको सुना भी दिया था शायद वह आपको याद हो या न हो। अब मैं आपको पुन: सुनाता हूँ और मुझे कई बार अनुभव हो चुका है कि मौलवी लोग अपने समसामयिक की बात से चाहे वह कैसी ही लाभप्रद हो कम प्रभावित होते हैं। अब वह तो मृत्यु पा चुके शायद आप उनसे बैअत का संबंध भी रखते थे आश्चर्य नहीं कि आपको उनके इल्हाम से फ़ायदा पहुँचे। विनीत का उद्देश्य भलाई और मुसलमानों के मध्य एकता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। मैं शपथ खाकर वर्णन करता हूँ और गवाह के तौर पर ख़ुदा काफ़ी है कि यह इल्हाम मैंने स्वयं स्व. हज़रत अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी से सुना है। खुदा के लिए धड़कते दिल से सुनो और वह यह है :-

می بینم که محمد حسین پیراھنے کلان پوشیدہ است لاکن
پارہ پارہ شدہ است۔[1]

फिर स्वयं ही यह व्याख्या की कि :-

آن پیراھن علم است که پارہ پارہ خواھد شد[2]

और दुकड़े-टुकड़े ज़बान से कहते थे और अपने दोनों हाथों से अपने सीने से लेकर पिण्डलियों तक बार-बार इशारा

1. अनुवाद - मैं देखता हूँ कि मुहम्मद हुसैन एक लम्बा कुर्ता पहने हुए है लेकिन वह जगह-जगह से फटा हुआ है। (अनुवादक)
2. वह कुर्ता एक निशान है कि वह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। (अनुवादक)

करते थे। फिर विनीत को कहा कि :-

آنرا باید گفت کہ توبہ کردہ باشد[1]

अत: उनकी वसीयत के अनुसार मैंने आपको यह हाल सुनाया था। आपने विनीत को चीनिया वाली मस्जिद लाहौर में व्यंगपूर्ण शब्दों से कहा था कि वली बनने जाते हैं अब्दुल्लाह को कहना कि मुझे भी बुलाए। इस सन्देश के बाद उन्होंने मुल्ला सिफर के सामने उपरोक्त इल्हाम बयान किया और मैंने अमृतसर में हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ साहिब के मकान में जहाँ हाफिज़ अब्दुल मन्नान रहता था ज्यों का त्यों आपको सुना दिया था। मुझे अच्छी तरह याद है कि उस समय आप प्रभावित हो गए थे। जिससे किताब का अध्ययन भी छूट गया था। मैंने उन्हीं दिनों अपने गाँव के लोगों को भी सुना दिया था जो वे अब गवाही दे सकते हैं। तात्पर्य यह कि यह सचेत करने वाला इल्हाम इन दिनों में पूरा हुआ जिसका प्रभाव अब प्रकट हुआ कि मिर्ज़ा साहिब के मुकाबले पर आपकी सारी विद्वता टुकड़े-टुकड़े हो गयी और ज्ञान की डींगें भी केवल तुच्छ सिद्ध हुईं। अत: यह इल्हाम नि:सन्देह सच्चा है। मौलवी साहिब मैंने समय पर दोबारा आपको याद दिलाया है आप नसीहत हासिल करें और तौबा करें और इस सुधारक और मुजद्दिद और इमामे कामिल और मसीह मौऊद, अल्लाह जिसकी सहायता करता है, से दुश्मनी करना छोड़ दें। अन्यथा हसरत से दाँत पीसना और रोना हाथ आएगा। अब स्वच्छंद को अधिकार है।

گر امروز ایں پند من نشنوی
یقین دان کہ فردا پشیمان شوی[2]

1. उसे सचेत करना चाहिए कि वह तौबा कर ले। (अनुवादक)
2. यदि आज तू मेरी नसीहत नहीं सुनेगा तो नि:सन्देह जान ले कि

हमारा काम केवल खोल कर पैग़ाम पहुँचा देना है।

लेखक

ज़ियाउद्दीन

20 दिसम्बर सन् 1895 ई.

कल शर्मिन्दा होगा। (अनुवादक)